₹25

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

अगस्त 2019



वैज्ञानिक दृष्टिकोण बनाम परोक्ष का इन्कार
–डॉ॰ मुहम्मद रफ़अत

क्या हों अपराध उन्मूलन के अन्य विकल्प ?
–इंजीनियर जेड॰ ए॰ मंसूरी

हिजाब ने दिखाया रास्ता
–वारिस हुसैन

Reg. No.: AP-009

لڑکیوں کی دینی و عصری تعلیم کا ایک معیاری اقامتی ادارہ

Estd.: 1988

کلیۃ الصالحات ارریہ

KULLIYATUS SALEHAT, ARARIA

بورڈ آف اسلامک ایجوکیشن بہار سے ملحق

درجہ نرسری سے دہم (میٹرک) تک

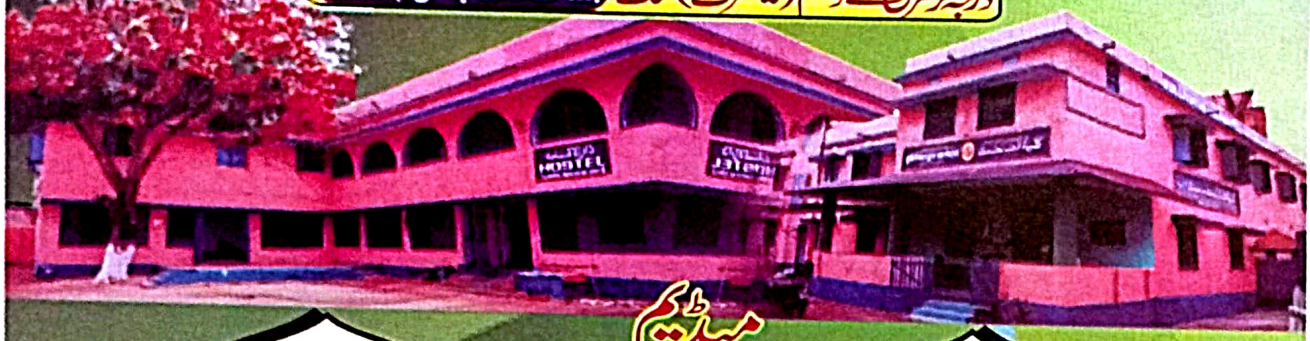

میڈیم
اردو، ہندی اور انگریزی

is
a well known
institution
rendering its services
in the field of Girls Education

REGISTRATION IS GOING ON
Registration starts from 1st of March every year.

ADMISSION
starts from 5th of April every year.

CURRICULUM
Arabic, Qura'an and Islamic studies are included in the curriculum besides all the subjects of Bihar Secondary Board Syllabus including Computer Education.

CO-CURRICULUM
Girls are encouraged to develop creative faculties by participating in different co-curricular activities such as Debate, Painting, Speech Weekly Bazm, Quiz , Home Science, Games and Tailoring etc.

SESSION : APRIL TO MARCH
CLASSES : NURSERY TO Std.X

CONVEYANCE
Proper conveyance facility is available for Araria Town and adjoining areas.

MEDIUM
Urdu, English and Hindi

HOSTEL
Hostel facility is available for girls having minimum seven (7) years of age in a peaceful, calm and Islamic environment and at a protected place.

اگر آپ
چاہتے ہیں کہ
آپ کی بچیاں

- اعلیٰ و معیاری تعلیم سے آراستہ ہو۔
- پرہیزگار، خوش اخلاق اور سلیقہ مند ہو۔
- گھر اور سماج میں اس کا ایک اعلیٰ مقام ہو۔
- دینی، عصری و تکنیکی تعلیم سے آراستہ ہو۔
- امور خانہ داری میں ماہر ہو۔

تو آئیے!

کلیۃ الصالحات ارریہ سے استفادہ کیجئے۔

پختہ مکان، بلند چہار دیواری کے اندر ہاسٹل کا مناسب انتظام۔ صاف ستھرا، پاکیزہ و اسلامی ماحول

۵ راپریل سے داخلہ شروع

Run by : Kulliyatus Salehat Educational & Technical Society

SALEHAT NAGAR, ARARIA (BIHAR) PIN-854311
mob.: 9931228833, website : www.kulliyatussalehat.in, e-mail : kulliyatussalehat@gmail.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 29 अंक 02 अगस्त 2019

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो जबकि किसी निर्धारित समय के लिए तुम आपस में क़र्ज़ का लेन-देन करो तो उसे लिख लिया करो। दोनों पक्षों के बीच इन्साफ़ के साथ एक आदमी दस्तावेज़ लिखे। –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 60/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'कान्ति'** के नाम से बनवाएं

विचार सौरभ

मां की अभिलाषा

पेरिस की एक मस्जिद में
दोपहर के बाद,
इमाम साहब ले रहे थे दीनी शिक्षा की क्लास ।
तभी वहां एक बच्चा आया,
सात वर्ष का प्यारा-सा ।
बोला बच्चा, ''मुझे पढ़ना है,
प्लीज़ मुझे भी दाख़िल कर लें !''
इमाम साहब ने देखा बच्चे को और पूछा
बेटे ! ''तुम हो कहां से आए
कहां हैं माता-पिता तुम्हारे ?''
बोला बच्चा, ''मां लायी है,
खड़ी है वह मस्जिद के बाहर ।''
इमाम साहब बच्चे को लेकर
मस्जिद के जब बाहर आए ।
वहां खड़ी थी फ्रेंच महिला
जो थी एक ईसाई ।
इमाम हुए हैरान, बोले जैसे पूछ रहे हों ?
''बच्चे को मस्जिद लायी हैं ?
हम तो हैं इस्लाम सिखाते ?''
बोली महिला, ''इसी लिए तो आयी हूं मैं,
मेरे बच्चे को कृपा कर इस्लामी संस्कार सिखा दें,
एक अच्छी संतान बना दें ।
मेरे घर के पास है रहता एक मुस्लिम परिवार
मस्जिद में पढ़ने आते हैं, उसके दोनों बच्चे ।
वे बच्चे हैं, बहुत ही अच्छे, मां के ताबेदार
मां जो कहती है करते हैं, जिससे रोके रुक जाते हैं ।
बिछे जाते हैं मां के आगे, कभी चूमते हाथ ।
जैसे देता है एक सैनिक रानी को सम्मान
उससे भी बढ़कर देते हैं वे मां को सम्मान ।
खड़ी अगर है माता उनकी, नहीं बैठते बच्चे
ऐसे हैं उस मां के बच्चे जैसे हीरे सच्चे ।''
''मेरी भी अभिलाषा है कि हो मेरा सम्मान
अपने बच्चे की नज़रों में मैं भी बनूं महान
अत: दाख़िला ले लें इसका मानूंगी एहसान
मेरे बच्चे को भी बना दें एक अच्छा इन्सान ।''

● **मुशर्रफ़ अली**



कहां क्या है ?

मां की अभिलाषा (विचार सौरभ)	–मुशर्रफ़ अली	3
कुरआन ज्योति		5
हदीस मंजरी		6
हज : मानव एकता और समानता का प्रशिक्षण (संपादकीय)		7
बेटी ज़यरा ! नयी ज़िन्दगी मुबारक हो ! (आपके पत्र)		9
अल्लाह के नामों पर ईमान (आस्था)	–जमालुद्दीन एम॰ ज़ाराबोज़ो	11
वर्तमान समस्याएं और मुहम्मद सल्ल॰ (जीवन आदर्श)	–इब्ने अब्दुल्लाह	15
हज़रत अली बिन अबी तालिब (नेकी के सिपाही)	–अब्दुर्रहमान राफ़त पाशा	19
बहुपत्नीत्व : नारी जाति पर अत्याचार (सवाल-जवाब)	–मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	23
वैज्ञानिक दृष्टिकोण बनाम परोक्ष का इन्कार (विशेष आयोजन)	–डॉ॰ मुहम्मद रफ़अत	26-27
उत्तर आधुनिक युवा येतना और 'रह गयी दिशाएं इसी पार'	–सविता रानी	33
खुशी भी ईश्वरीय आदेशों के अधीन हो (उद्‌गार)		37
क्या हों अपराध उन्मूलन के अन्य विकल्प? (विचारणीय)	–इंजीनियर जेड॰ ए॰ मंसूरी	39
लघुकथाएं	–प्रवीण कुमार सहगल	43
ममता (कहानी)	–डॉ॰ रेणु बहल	45
हिजाब ने दिखाया रास्ता (चेतना)	–वारिस हुसैन	47
वायरस के बारे में रोचक तथ्य (बालवीथी)		49

क़ुरआन ज्योति

(105) और मुझसे फ़रमाया गया है कि तू एकाग्र होकर अपने आपको ठीक-ठीक इस दीन पर क़ायम कर दे ।[108] और कदापि-कदापि मुशरिकों में से न हो ।[109] (106) और अल्लाह को छोड़कर किसी ऐसी हस्ती को न पुकार जो तुझे न लाभ पहुंचा सकती है, न हानि । अगर तू ऐसा करेगा तो ज़ालिमों में से होगा । (107) अगर अल्लाह तुझे किसी विपत्ति में डाले तो स्वयं उसके सिवा कोई नहीं जो इस विपत्ति को टाल दे और अगर वह तेरे पक्ष में किसी भलाई का इरादा करे, तो उसकी कृपा को फेरने वाला भी कोई नहीं है । वह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है अपनी कृपा प्रदान करता है और वह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है ।''

(108) ऐ नबी ! कह दो कि ''लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य आ चुका है । अब जो सीधी राह अपनाये, उसका सीधे रास्ते पर चलना उसी के लिए लाभदायक है और जो गुमराह रहे उसकी गुमराही उसी के लिए तबाह करने वाली है, और मैं तुम्हारे ऊपर कोई हवालेदार नहीं हूं ।'' (109) और ऐ नबी ! तुम इस हिदायत की पैरवी किये चले जाओ जो तुम्हारी ओर वह्य के ज़रिये भेजी जा रही है और सब्र करो यहां तक कि अल्लाह निर्णय कर दे, और वही सबसे अच्छा निर्णय करने वाला है ।

–क़ुरआन, 10:105-109

108. इस मांग की तीव्रता ध्यान देने योग्य है । इसके मूल शब्द हैं ''अक़िम वज-ह-क लिद्दीनि हनीफ़ा ।'' ''अक़िम वज-ह-क'' का शाब्दिक अर्थ है ''अपना चेहरा जमा दे ।'' अर्थात तेरा चेहरा एक ही ओर स्थिर हो । डगमगाता और हिलता-डुलता न हो । कभी पीछे और कभी आगे और कभी दाएं और कभी बाएं न मुड़ता रहे । बिल्कुल नाक की सीध में उसी रास्ते पर नज़रें जमाए हुए चल जो तुझे दिखा दिया गया है । यह बंधन अपने आप में बहुत चुस्त था, मगर इस पर भी बस न किया गया । इस पर एक और क़ैद 'हनीफ़ा' की बढ़ा दी गयी । 'हनीफ़' उसे कहते हैं जो सब ओर से मुड़कर एक ओर हो रहा हो । अत: मांग यह है कि इस दीन को, अल्लाह की बन्दगी के इस तरीक़े को, ज़िन्दगी के इस रवैये को इबादत, बन्दगी, गुलामी, आज्ञापालन, फ़रमांबरदारी, सब कुछ सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन ही की कि जाए, ऐसी एकाग्रता अपनाकर कि किसी दूसरे तरीक़े की ओर तनिक भर भी रुझान व झुकाव न हो ।

109. अर्थात उन लोगों में कदापि सम्मिलित न हो जो अल्लाह की ज़ात में, उसके गुणों में, उसके हक़ों में और उसके अधिकारों में किसी तौर पर ग़ैर-अल्लाह को शरीक करते हैं । अत: मांग केवल इस स्वीकारात्मक तरीक़े ही में नहीं है कि विशुद्ध तौहीद का रास्ता पूरे जमाव के साथ

(शेष पृष्ठ 10 पर)

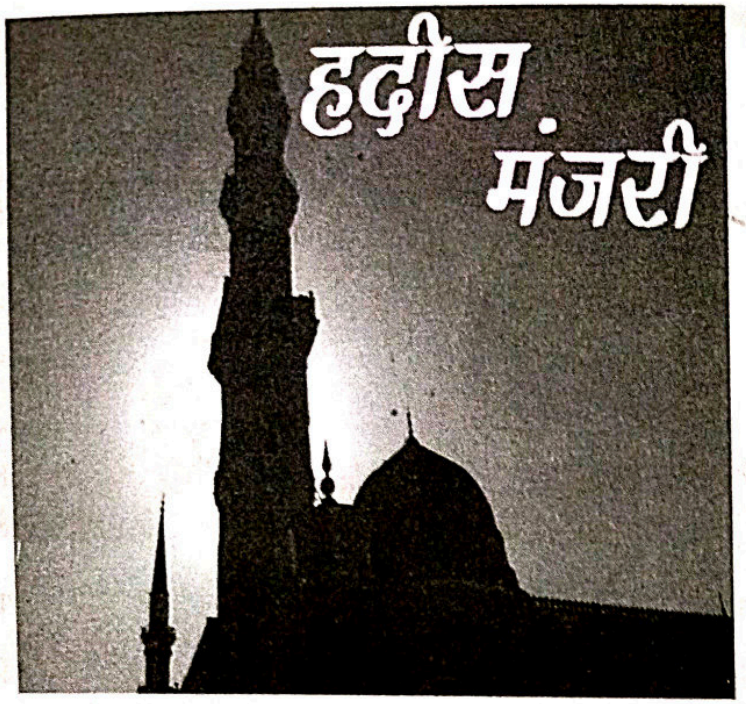

निषेध

पीठ पीछे निन्दा का निषेध

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जो व्यक्ति अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि भली बात कहे या चुप रहे ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू मूसा (रज़ि॰) से रिवायत है वे कहते हैं : मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), कौन-सा मुसलमान सर्वश्रेष्ठ है ? आपने कहा : "वह जिसकी ज़ुबान और जिसके हाथ से मुसलमान सुरक्षित रहें ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत सह्ल बिन सअद (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जो व्यक्ति मुझे अपने दोनों जबड़ों के बीच की चीज़ (ज़ुबान) और अपने दोनों पावों के बीच की चीज़ (गुप्तांग) के विषय में ज़मानत दे, तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि उन्होंने नबी (सल्ल॰) को यह कहते हुए सुना : "एक बन्दा बात करता है और विचार नहीं करता कि बात अच्छी है या नहीं वह उसके कारण दोज़ख़ में उससे कहीं अधिक दूर तक गिर जाता है जितना कि पूर्व और पश्चिम के बीच दूरी है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "कभी बन्दा अल्लाह तआला की ख़ुशी की बात करता है और उसे उसके महत्व का ज्ञान नहीं होता । अल्लाह उस बात के कारण उसके दर्जों को ऊंचा कर देता है । और कभी बन्दा अल्लाह तआला की अप्रसन्नता की कोई बात कहता है और उसे उसकी गंभीरता की ख़बर नहीं होती उसकी उस बात के कारण जहन्नम में गिर जाता है ।"

–बुख़ारी

● हज़रत सुफ़ियान बिन अब्दुल्लाह (रज़ि॰) से रिवायत है कि उन्होंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मुझे आप कोई ऐसी बात बताइए जिसे मैं मज़बूती से पकड़ लूं । आपने कहा : "कहो : मेरा रब अल्लाह है, फिर इस पर जम जाओ ।" मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मेरे विषय में आप किस चीज़ का अधिक भय रखते हैं ? तो आपने अपनी ज़ुबान को पकड़ लिया, फिर कहा : "इससे ।"

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

● हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "बिना अल्लाह के स्मरण के ज़्यादा बातें न किया करो क्योंकि अल्लाह तआला के स्मरण के बिना ज़्यादा बातों से दिल कठोर हो जाता है और लोगों में सबसे अधिक दूर वह होता है जिसका दिल कठोर है ।"

–तिरमिज़ी

● हज़रत उक़बह बिन आमिर (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मुक्ति किस चीज़ के द्वारा प्राप्त होती है ? आपने कहा : "अपनी ज़ुबान को क़ाबू में रखो और अपने घर को काफ़ी समझो और अपने गुनाहों पर रोया करो ।"

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन' है ।

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamicvideos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

हज : मानव एकता और समानता का प्रशिक्षण

इस्लामी इबादतों में हज को इन आधारों पर विशिष्टता प्राप्त है कि यह केवल सामर्थ्यवान लोगों पर अनिवार्य है और वह भी उनके पूरे जीवनकाल में केवल एक बार है । इसके अलावा यह निर्धारित तिथियों में नियत स्थानों पर अदा किया जाता है । यह एक ऐसी इबादत है, जिसमें किसी न किसी रूप में दूसरी इबादतें भी शामिल हैं । यह इबादत संसार के सभी लोगों को एक सूत्र में बांध कर विश्वबंधुत्व का संदेश देती है और यही इसकी सबसे बड़ी विशिष्टता कही जा सकती है । विश्वबंधुत्व, मानव एकता और मानव समानता जैसे महान उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हज दुनिया भर में एक ईश्वर की इबादत करने वालों को एक निश्चित समय में एक स्थान पर जमा करता है । इस अवसर पर मानव-मानव के बीच जितने तरह के भी अन्तर हो सकते हैं, उन सब को मिटा दिया जाता है । महिला हो या पुरुष, अमीर हो या ग़रीब, गोरा हो या काला, अरबी बोलने वाला हो या कोई और भाषा, दुनिया के किसी भी देश और किसी भी क्षेत्र का रहने वाला हो, सब एक ही समय में एक ही स्थान पर जमा होते हैं । यहां तक कि सबके शरीर पर लिबास भी एक ही जैसा होता है, बिना सिली हुई दो श्वेत चादरें, और एक तरह की दो फ़ीते वाली चप्पलें । महिलाओं का परिधान पुरुषों से कुछ अलग होता है, उन्हें पूरे शरीर का कपड़ा पहनना होता है, लेकिन वह सब भी एक ही जैसा और श्वेत ही होता है । सारे एक ही साथ अल्लाह की इबादत करते हैं और एक ही तरीक़े से करते हैं । इस तरह हज में सामूहिकता के साथ-साथ एकता-एकजुटता और परस्पर सहयोग का विश्व प्रदर्शन होता है । अल्लाह ने अपने बन्दों को परस्पर सहयोग और परामर्श से अपने मामले तय करने और समस्याओं के समाधान का आदेश दिया है । हज दुनिया भर के लोगों को एक जगह जमा करके हर तरह की समस्याओं के समाधान के लिए परस्पर विचार-विमर्श का अवसर प्रदान करता है ।

इस्लाम इबादतों के माध्यम से सामूहिकता और एकता का माहौल हर स्तर पर बनाता है । दिन में पढ़ी जाने वाली 5 नमाज़ों को मस्जिद जाकर जमाअत के साथ अदा करने का आदेश है । इसके माध्यम से स्थानीय स्तर पर लोगों को एक दिन-रात में 5 बार एकजुट होकर बैठने और स्थानीय मुद्दों पर विचार-विमर्श करने का अवसर मिलता है । इसी तरह सप्ताह में एक बार जुमा की नमाज़ में बड़ी मस्जिद में ज़्यादा लोग इकट्ठा होते हैं और दोनों ईद की नमाज़ों में पूरे शहर के लोग एक जगह ईदगाह में मिल-जुलकर बैठते हैं । इन सब नमाज़ों के लिए महिलाओं के शामिल होने का भी इस्लाम ने प्रोत्साहन किया है । यह अलग बात है कि आज माहौल इसके विपरीत बना दिया गया है । इस्लाम एक पूर्ण जीवन व्यवस्था है, जिसके अनुसार जीवन बिताना इसके अनुयायियों के लिए अनिवार्य है । हज की अदायगी के दौरान लोगों का प्रशिक्षण होता है, उन्हें एकता, सामूहिकता और समानता का सबक़ मिलता है, ताकि इस्लाम के इस महान संदेश को अपने निजी जीवन में जगह देने के साथ इस्लाम की सामाजिक और नैतिक शिक्षाओं, भाईचारे और समानता की विचारधारा को लेकर दुनिया के हर क्षेत्र में पहुंचाएं और नकारात्मक वर्ग विभेद को मिटाकर एक ऐसे समाज का निर्माण करें जिसमें ईश्वर के सभी बन्दे को न्याय मिल सके, किसी के साथ अन्याय न हो किसी का अधिकार हनन न हो ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया– "मेरी मस्जिद (मस्जिदे नबवी) में पढ़ी गयी नमाज़ किसी अन्य मस्जिद में पढ़ी गयी नमाज़ से एक हज़ार गुना अफ़ज़ल है ।"
(बुख़ारी, मुस्लिम)

A WELL WISHER
PATNA (BIHAR)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया– "जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से सत्ताइस गुना ज़्यादा अफ़ज़ल है ।"
(बुख़ारी, मुस्लिम)

A WELL WISHER
RANCHI (Jharkhand)

बेटी ज़ायरा, नयी ज़िन्दगी मुबारक हो !

मैं यह पत्र मासिक पत्रिका 'कान्ति' के माध्यम से हाल ही में बालीवुड से अलविदा लेने वाली सिने तारिका ज़ायरा वसीम के नाम लिख रहा हूं ।

बेटी ज़ायरा !

नयी ज़िन्दगी मुबारक हो ।

जब से कश्मीर से संबंध रखने वाली 19 वर्ष की तारिका ज़ायरा वसीम ने बालीवुड छोड़ने की घोषणा की है, सोशल मीडिया में भूंचाल-सा आया हुआ है । हर कोई इस पर टिप्पणी कर रहा है । अपने मानसिक स्तर के अनुसार इस पर राय दे रहा है और इस कार्रवाई को सही या ग़लत ठहरा रहा है । इस शोर में ज़ायरा के अपने एहसासात दबने लगे हैं, जो उसने फ़िल्म इंडस्ट्री छोड़ने की घोषणा के साथ ज़ाहिर किये हैं । हालांकि इन्साफ़ की मांग है कि उनको सामने रखा जाए और उसकी अभिव्यक्ति और जीवनशैली अपनाने की आज़ादी के अधिकार को स्वीकार किया जाए ।

पांच साल पहले ज़ायरा ने आमिर ख़ान की फ़िल्म दंगल के ज़रिये बालीवुड में क़दम रखा । पहली ही फ़िल्म से वे लोकप्रियता की ऊंचाइयों पर पहुंच गयीं । अपनी परफार्मेंस की वजह से उन्होंने कई अवार्ड हासिल किये । हर तरह की सांसारिक संख सुविधा प्राप्त होने और ख्याति की बुलंदियों को छूने के बावजूद उन्होंने अपने भीतर कुछ कमी महसूस की । उनकी अंतरात्मा ने कचोके लगाने शुरू किये ।

दूसरी ओर उनकी मनेच्छाओं ने उन्हें उनकी वर्तमान पोज़ीशन पर संतुष्ट करने और उन्हें थपकियां देकर सुलाने की कोशिश की । अंतरात्मा और मनेच्छाओं के संघर्ष ने उन्हें बेचैन कर दिया । सुकून की तलाश में उन्होंने कुरआन मजीद से संपर्क किया तो कुरआन ने उन पर जीवन का रहस्य खोल दिया । उन पर स्पष्ट हो गया कि वे अज्ञानता की जीवन गुज़ार रही हैं, फ़िल्म इंडस्ट्री की चमक-दमक ने उनकी निगाहों को चकाचौंध कर दिया है । उनके ईमान की लौ मंद पड़ गयी है और उनके रब से उनका रिश्ता कमज़ोर हो गया है । जैसे-जैसे वे कुरआन पढ़ती गयीं, वैसे-वैसे वे अपने ईमान में ताज़गी महसूस करती गयीं । अपने रब से रिश्ता मज़बूत करने की उनकी भावना बढ़ती गयी । उन्होंने अपने अन्दर इतनी शक्ति महसूस की कि फ़िल्म इंडस्ट्री की मज़बूत बेड़ियां एकदम टुकड़े-टुकड़े हो गयीं ।

इक्कीसवीं सदी आज़ादी की सदी है । आज़ादी को एक मानव मूल्य समझा जाता है । किसी भी स्थिति में इसका सौदा नहीं किया जा सकता । सोचने की आज़ादी, अभिव्यक्ति की आज़ादी, अपनी पसन्द का धर्म अपनाने की आज़ादी, खाने-पीने की आज़ादी, कपड़े पहनने की आज़ादी, रहन-सहन की आज़ादी, जीवनशैली की आज़ादी, आदि ।

इन्साफ़ की अपेक्षा है कि ये आज़ादी हर एक को हासिल हो । अगर पाप करने की आज़ादी है तो पाप त्यागने की भी आज़ादी होनी चाहिए । अगर इस्लाम से दूर जाने की

0291-2658786

HOTEL Crown Plaza

A/C & Non A/C Air Cooled Rooms & Dormitory

Opp. Minerva Centre,
Railway Station Road, Jodhpur-342001 (Raj.)
Cell : 9784856007, 9414110345

½ km from the railway station

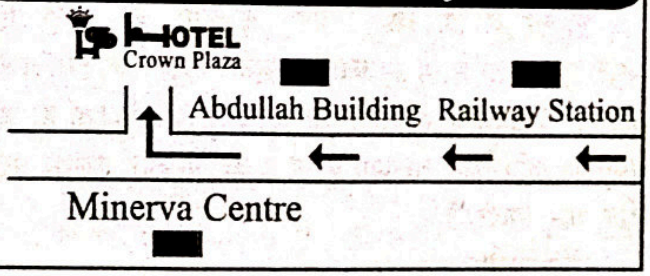

आज़ादी है तो इससे निकट होने की भी आज़ादी होनी चाहिए। अश्लीलता और नंगेपन की आज़ादी है तो लज्जा और पवित्रता की भी आज़ादी होनी चाहिए। अगर बे-हिजाबी की आज़ादी है, तो हिजाब अपनाने की भी आज़ादी होनी चाहिए। अगर बालीवुड में प्रवेश की आज़ादी है तो उसे ठुकराने और इसकी दलदल से निकल आने की आज़ादी भी होनी चाहिए।

लेकिन ज़ायरा ने बालीवुड छोड़ने की घोषणा क्या की कि एक वर्ग सक्रिय हो गया, उन्हें ज़ायरा की यह अदा पसन्द नहीं आयी।

एक महानुभाव ने नसीहत की कि "ज़ायरा को फ़िल्म इंडस्ट्री नहीं छोड़नी चाहिए थी, इस्लाम ने इससे नहीं रोका है।" दूसरे ने तंज़ करते हुए पूछा है, "ज़ायरा !. अब क्या ? नक़ाब या हिजाब ?"

ज़ायरा की एक महिला 'शुभचिंतक' कहती हैं, "बालीवुड छोड़ने का यह फ़ैसला कैसा मूर्खतापूर्ण है ? मुस्लिम कम्यूनिटी के कितने टैलेंट बुर्क़ा के अंधेरे के पीछे छुपा दिये जाते हैं।"

अल्लाह कहता है–"जो लोग ईमान लाते हैं, उनका हिमायती और मददगार अल्लाह है और वह उन्हें अंधकारों से प्रकाश में निकाल लाता है और जो लोग इन्कार की नीति अपनाते हैं, उनके हिमायती और मददगार बढ़े हुए फ़सादी हैं और वे उन्हें प्रकाशों से अंधकार की ओर खींच ले जाते हैं।"

(क़ुरआन, 2:257)

बेटी ज़ायरा ! तुम्हारा फ़ैसला बिल्कुल सही है। तुम्हें नयी ज़िन्दगी मुबारक हो। तुमने महसूस किया कि तुम्हारा ईमान और तुम्हारा अपने रब से रिश्ता कमज़ोर हो रहा है, इसलिए तुमने अपने रब की ओर पलटने का इरादा किया। तुम्हारा यह इरादा बहुत मुबारक है। पश्चाताप के आंसू सभी ग़लतियों और भूलों को धो देते हैं। क़ुरआन में है कि अल्लाह तआला अपनी करीमी से सारे गुनाह माफ़ कर सकता है।

हदीस में है कि, "बंदा अल्लाह की तरफ़ एक बालिश्त बढ़ता है तो अल्लाह उसकी तरफ़ एक हाथ बढ़ता है, बंदा एक हाथ बढ़ता है तो वह एक गज़ बढ़ता है, बंदा अल्लाह की तरफ़ चलकर जाता है तो अल्लाह उसकी तरफ़ दौड़ कर आता है।

बेटी ज़ायरा !

तुम इन लोगों के बहकावे में न आना, जो दुनिया की चकाचौंध में अपने स्थायी ठिकाने (आख़िरत) को भुलाए बैठे हैं। तुमने जो फ़ैसला किया है इस पर डटी रहना। अल्लाह तुम्हारा सहायक और कार्यसाधक हो !

● मुहम्मद रज़ीउल इस्लाम नदवी

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

अपनाओ, बल्कि इस निषेधात्मक रूप में भी है कि उन लोगों से अलग हो जा जो किसी शक्ल और किसी ढंग का शिर्क करते हों। विश्वास ही में नहीं, व्यवहार में भी, व्यक्तिगत जीवन के तरीक़े ही में नहीं, सामूहिक जीवन-व्यवस्था में भी, इबादतगाहों और पूजाघरों ही में नहीं, स्कूलों और मदरसों में भी, अदालतों में भी, विधायिका की सभाओं में भी, राजनीति के सदनों में भी, अर्थ के बाज़ारों में भी। तात्पर्य यह कि हर जगह उन लोगों के तरीक़े से अपना तरीक़ा अलग कर ले जिन्होंने अपने चिंतन व व्यवहार की पूरी जीवन-व्यवस्था ख़ुदापरस्ती और बे-ख़ुदापरस्ती की मिलावट पर स्थापित कर रखी है–फिर मांग खुले शिर्क ही से बचने की नहीं है, बल्कि छिपे शिर्क से भी पूरी तरह कठोरता के साथ बचने का है। बल्कि छिपा शिर्क अधिक भयानक है और उससे होशियार रहने की और भी अधिक ज़रूरत है। कुछ नासमझ लोग 'छिपे शिर्क' को 'हलका शिर्क' समझते हैं और इनका विचार यह है कि इसका मामला इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितने खुले शिर्क का है। हालांकि 'छिपे' का अर्थ 'हलका' नहीं, बल्कि छिपा हुआ है। और हर व्यक्ति जानता है कि गुप्त बिमारियां उन बीमारियों से अधिक घातक सिद्ध होती हैं जिनके चिह्न बिल्कुल स्पष्ट हों। जिस शिर्क को हर आदमी एक ही नज़र में देखकर कह दे कि यह शिर्क है, उससे तो एकेश्वरवादी (तौहीद) धर्म का टकराव बिल्कुल स्पष्ट है, मगर जिस शिर्क को समझने के लिए गहरी निगाह और तौहीद के तक़ाज़ों की गहरी समझ चाहिए, वह अपनी अदृश्य जड़ें दीन की व्यवस्था में इस तरह फैलाता है कि आम एकेश्वरवादियों को उनकी ख़बर तक नहीं होती और धीरे-धीरे ऐसे ग़ैर-महसूस तरीक़े से दीन की आत्मा को खा जाता है कि कहीं ख़तरे का एलार्म बजने की नौबत ही नहीं आती।

अल्लाह के नामों पर ईमान

■ जमालुद्दीन एम० ज़ाराबोज़ो

अल्लाह पर सच्चा ईमान इस बात की मांग करता है कि उसके बारे में इन्सान को इल्म हो वह उसे जाने पहचाने, एक ईमान वाले दिल में अल्लाह के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानने की तड़प होनी चाहिए । यह सच है कि इन्सान अल्लाह को न देख सकता है न दर्शन कर सकता है, इसलिए अल्लाह ने अपनी कुछ पहचान बताई है । उसने अपने बन्दों के साथ दया व कृपा का मामला करते हुए अपने बारे में उन्हें कुछ ज्ञान प्रदान किया है इसके माध्यम से उसका निश्छल बन्दा उसे जान सकता है और उसकी इबादत व उपासना कर सकता है । स्पष्ट रहे कि उसके द्वारा प्रदत्त ज्ञान ही प्रामाणिक ज्ञान है ।

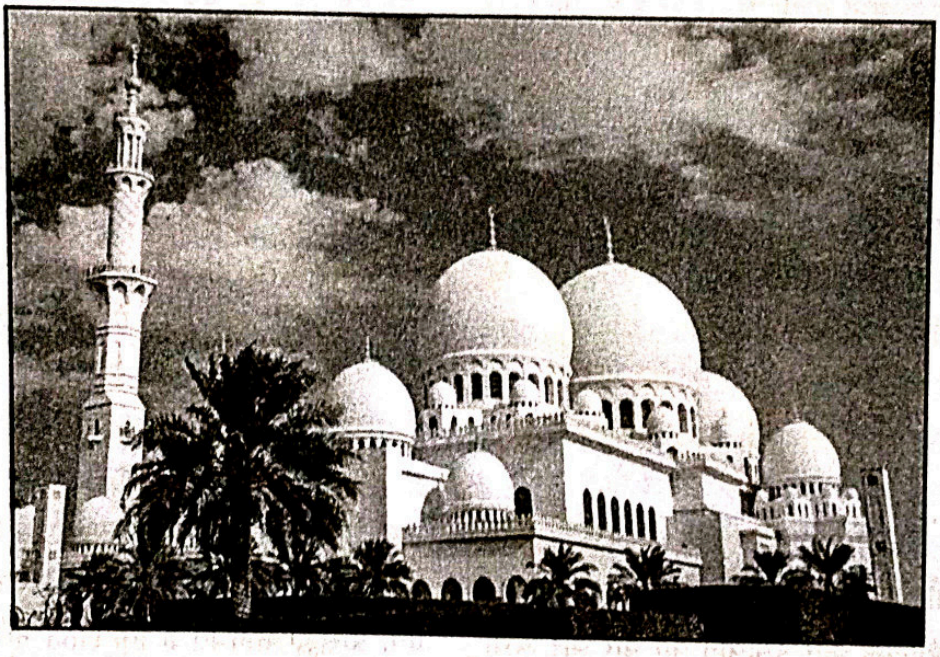

मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा है कि, अल्लाह के निन्नयानवे अर्थात एक कम सौ नाम हैं । क़ुरआन में भी इसका उल्लेख मौजूद है–"वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं । प्रत्यक्ष और परोक्ष हर चीज़ का जानने वाला, वही अत्यंत करुणामय और दयावान है । वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वह सम्राट है, अत्यंत पवित्र, सर्वथा सलामती, निश्चिंतता प्रदान करने वाला, निगहबान, सब पर प्रभुत्व रखने वाला, अपना आदेश बलपूर्वक लागू करने वाला और बड़ा ही होकर रहने वाला, पाक है अल्लाह उस 'शिर्क' (बहुदेववाद) के कर्म से जो लोग कर रहे हैं, वह अल्लाह ही है जो सृष्टि की योजना बनाने वाला और उसको क्रियान्वित करने वाला और इसके अनुसार रूप बनाने वाला है । उसके लिए उत्तम नाम हैं । हर चीज़ जो आकाशों और धरती में हैं उसकी तस्बीह कर रही हैं और वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है ।" (अल-हश्र : 23,24)

एक और स्थान पर इसकी व्याख्या इस तरह मिलती है । जिसके विषय में अल्लाह के पैग़म्बर का फ़रमान है कि यह क़ुरआन की महानतम आयत है–"अल्लाह वह जीवंत नित्य सत्ता, जो सम्पूर्ण जगत को संभाले हुए है, उसके सिवा कोई प्रभु पूज्य नहीं है । वह न सोता है और न उसे ऊंघ लगती है । आकाशों और धरती में जो कुछ है, उसी का है । कौन है जो उसके यहां उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके ? जो कुछ लोगों के सामने है, उसे भी वह जानता है और जो कुछ उनसे ओझल है, उसे भी । उसके ज्ञान में से कोई चीज़ उनके ज्ञान की पकड़ में नहीं आ सकती यह और बात है कि किसी चीज़ का ज्ञान वह स्वयं ही उनको देना चाहे । उसकी सत्ता आकाशों और धरती पर छाई हुई है और उनकी देख-रेख उसके लिए कोई थका देने वाला कार्य नहीं है । बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है ।"

(अल-बक़रा : 255)

क़ुरआन और हदीस के अध्ययन से जो अल्लाह के विषय में ज्ञान मिलता है वह यह है कि वह अत्यधिक दयावान है और करुणामय है, (एक मुसलमान के लिए अल्लाह के ये दो गुण हमेशा याद रखे जाने वाले हैं । स्पष्ट

है कि मुसलमान हर काम की शुरुआत अल्लाह के नाम से करता है इसमें इन दोनों गुणों का उल्लेख मौजूद है) क्षमा करने वाला, तौबा क़बूल करने वाला (बख़्शने वाला व गुनाहों को माफ़ करने वाला) प्रेम करने वाला, सब्र करने वाला, रिज़्क़ देने वाला (खिलाने वाला), करीम (कृपा करने वाला) संसाधन जुटाने वाला है ।

यहां इसकी व्याख्या ज़रूरी मालूम होती है कि कई लोग इस आधार पर इस्लाम पर आक्रमण करते हैं कि इस्लाम में God की परिकल्पना बिना Love के है यहां Love की परिकल्पना नहीं पायी जाती । ईसाइयों में God की जो परिकल्पना पायी जाती है इसमें यह कहा गया है कि God, Love है । (John 4:8)

मगर लेखक के लिए, क्या दुनिया के किसी भी व्यक्ति के लिए यह समझ से बाहर की बात है । लेखक जब ईसाई था तब भी यह बात कभी समझ में नहीं आ सकी कि Love, God किस तरह है, या हो सकता है । न इसका उसे कोई सन्तोषजनक उत्तर ही मिल सका, इसलिए कि Love तो एक एकाकी विचार है, अगर दो व्यक्ति ऐसे मिलें जिनमें कोई आपसी प्रेम न हो तो क्या यह समझा जाए कि God लुप्त हो गया और वहां मौजूद नहीं है या किसी के साथ नाजाइज़ प्रेम है तो क्या तब भी वहां God मौजूद होता है । इसकी तुलना में यह कहना कि अल्लाह दयावान है, कृपाशील है तो इसका मतलब यह है कि उसके गुण हैं । क़ुरआन कहता है कि अल्लाह वुदूद है–

और वह क्षमाशील है, प्रेम करने वाला है । (अल-बुरूज : 14) इसका साफ़ और स्पष्ट मतलब यह है कि क़ुरआन अल्लाह के गुण क्षमाशीलता और दयावान की बार बार चर्चा करता है । इन गुणों से जो परिकल्पना अभरती है वह Love की परिकल्पना से अलग है) वह अपने बन्दों की पुकार सुनता है, उसका जवाब देता है, उनकी ज़रूरतें पूरी करता है, कठिनाई दूर करता है । वह हाजत पूरी करने वाला है, सभी प्रशंसाओं के लिए वही और केवल वही हक़दार है । देशों का मालिक, परलोक के दिन का मालिक, वह सुनने वाला है, देखने वाला है, सब कुछ जानने वाला है, ख़बर रखने वाला है, प्रभुत्वशाली है, सबसे बड़ा और महान है, शक्तिशाली है, अकेला है, किसी का मुहताज नहीं है सब उसके मुहताज हैं, रचनाकार है, मना करने वाला रोकने वाला है, इज़्ज़त व प्रतिष्ठा वाला है, आविष्कार करने वाला है, पैदा करने वाला है, रक्षा करने वाला है, हाकिम है, जब्र करने वाला है, डराने वाला है, बड़ा प्रतापी है, बहुत दयावान, बड़ा पवित्र है, प्रभुत्व वाला है, हमेशा से है, क्षमा करने वाला है, सक्रिय है, सामर्थ्यवान है, शुरू से है, क़ायम और बाक़ी रहने वाला है, पर्याप्त है, कोमल है, बदला लेने वाला, पूज्य है, रोज़ी देने वाला है, रौशनी देने वाला है, धनी है, उसकी हस्ती ऐबों से पाक है, कोई काम उसकी इच्छा के बिना नहीं हो पाता है ।

यहां तक कि कोई सुक्ष्म क्रिया भी नहीं हो पाती, अल्लाह ने अपने बारे में बन्दों को जो ज्ञान दिया है वह बजाय खुद बन्दों पर उसका बड़ा एहसान व करम है । इन्सान का खुदा कैसा है, क्या है, कहां है, इस पर ग़ौर करने की आवश्यकता नहीं है । जैसा कि ऊपर गुज़र चुका है इसलिए कि वह इन्सान की कल्पना से परे है अल्लाह के बारे में तरह-तरह की बातें बनाने की ज़रूरत ही शेष नहीं रह गयी है इसलिए कि उसने खुद ही अपने बारे में पर्याप्त ज्ञान दे दिया है और इस सुन्दर अन्दाज़ में इसको बयान कर दिया है कि उसका समझना बहुत आसान है कहने को तो यह कहा जा सकता है कि यह तो कुछ भी नहीं है मगर इसमें हमारे लिए हिदायत (मार्गदर्शन) का सारा सामान मौजूद है । इस्लाम ने एकेश्वरवाद की जो परिकल्पना दी है इसमें ख़यालीं क़िस्म की कोई चीज़ नहीं पायी जाती । God के बारे में पायी जाने वाली परिकल्पना को कई लोगों ने हंसी उड़ाने का विषय बनाया है, पश्चिम में इसके विषय में कई हास्यास्पद बातें प्रसिद्ध हैं उदाहरण के लिए वहां यह एक प्रसिद्ध कहावत है कि God ने इन्सान को अपनी शक्ल या आकार में बनाया मगर इन्सान इतना थुड़दिला निकला कि उसने उस कृपा व दया को क़बूल नहीं किया । लेकिन इस्लाम की एकेश्वरवाद की परिकल्पना में ऐसा कुछ नहीं है ।

यहां रचयिता और रचना एकदम दो अलग वजूद है, अल्लाह के गुण यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि वह पाक और दोषरहित सत्ता है । अगर दोनों के बीच कोई समानता नज़र आती है तो इसका मतलब कदापि यह नहीं है जो चीज़ रचयिता में नज़र आ रही है वही चीज़ रचना में भी पायी जाती है । जैसा कि अल्लाह खुद फ़रमाता है–"विश्व की

कोई वस्तु उसके सदृश नहीं वह सब कुछ सुनने और देखने वाला है ।" (अश-शुरा : 11)

यहां काल्पनिक परिकल्पना को पूरी तरह नकार दिया गया है । हां, यह अवश्य कहा गया है कि अल्लाह सुनता है और देखता है, मुसलमानों का यह ईमान है कि अल्लाह की हस्ती पवित्र और दोषरहित है । लेकिन उन्होंने उसकी ऐसी कोई तस्वीर नहीं बनायी जिससे उसका वजूद हास्यास्पद बनकर रह जाए । उन्होंने कभी इस बारे में कोई ख़याल ही नहीं बनाया । अल्लाह इन्सानों जैसे गुण नहीं रखता और न इन्सानों के अन्दर वे गुण पैदा हो सकते हैं । यह तो बहुदेववाद का स्पष्ट इन्कार है ।

(दुर्भाग्यवश यहूदी और ईसाइयों के यहां ऐसे अनगिनत क़िस्से मिलते हैं, उदाहरण के लिए किताब पैदाइश (Genesis 32:24-28) में इसका उल्लेख मिलता है कि याक़ूब की ख़ुदा के साथ बाक़ायदा कुश्ती हुई, जिसमें याक़ूब जीत गये । अर्थात यह कि अल्लाह जो रचयिता है उसका उसकी सृष्टि के साथ झगड़ा होता है और वह अपनी रचना के हाथों पराजित हो जाता है ।

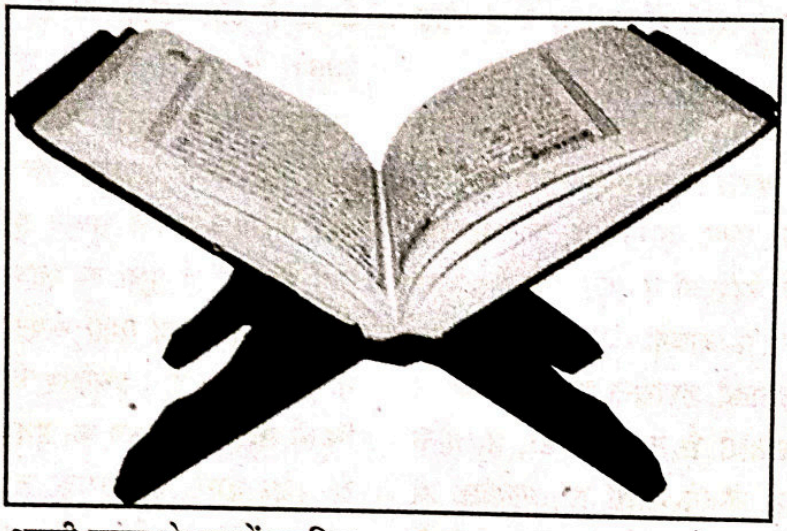

एक ओर तो अल्लाह की पूजा उपासना की बात की जाती है और दूसरी ओर उसके साथ लड़ाई की कहानी मिलती है, कैसी मूर्खता की बात है, किताबे ख़ुरूज (Exodus 32:14) में तो इससे भी ज़्यादा हास्यास्पद बात कही गयी है कि एक बार ख़ुदा ने बुराई या व्यभिचार का इरादा किया फिर उसने तौबा कर ली । ईसाइयों के यहां ख़ुदा और उसके बेटे की परिकल्पना पायी जाती है जो अत्यंत आपत्तिजनक है, इसे इस पुस्तक के लेखक ने अपनी एक किताब Purification of the soul : Concept, process and means में उल्लेख किया है ।

मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगमन से पहले भी लोग एक ख़ुदा को मानते थे और उसे इस सृष्टि का अकेला रचयिता मानते थे मगर उन्होंने इसके साथ बहुत सारे साझीदार भी बना रखे थे और उनकी पूजा की जाती थी । इस्लाम ने इस ग़लत और असत्य धारणा को नकारा और साफ़ एवं स्वच्छ शिक्षा दी, ग़लत विचारों व सिद्धांतों को समाप्त किया । इसलिए आरंभ से मन व विचार और सिद्धांत की शुद्धता से होना चाहिए अल्लाह के अस्तित्व व गुणों का सही-सही ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है । एक बार इसका सही सही ज्ञान व समझ हो जाए तो फिर बहकने, भटकने या गुमराह होने की संभावना समाप्त हो जाती है और उसकी पूजा भी शुद्ध हो जाती है । सही ज्ञान व समझ शरीर और आत्मा की शुद्धता और परिपक्वता में मुख्य भूमिका अदा करती हैं । इन्सान को अगर मालिक की हस्ती और गुणों की सही समझ हो तो उसके साथ संबंध भी मिलावटरहित होगा ।

अल्लाह से घनिष्ठता बनाने में भी उससे बड़ी सहायता मिलेगी उसकी ज़ात और गुणों का जितना ज्ञान होगा उतनी ही एकाग्रता में घनिष्ठता होगी । उसके साथ संबंध मज़बूत होगा । व्यक्तिगत जीवन पर भी इसका सकारात्मक व सुखद और स्वस्थ्य प्रभाव पड़ेगा इस्लाम के विद्वानों ने इस पर बहुत बल दिया है । उदाहरण के लिए इमाम इब्ने तैमिया का कहना है–जिस किसी को अल्लाह की ज़ात व गुणों का जितना सही और ठोस ज्ञान होगा उसके मानी व मतलब की समझ उतनी ही गहरी होगी, उसका ईमान उतना ही ज़्यादा पक्का होगा । यक़ीन के साथ अगर ज्ञान हो तो यह बात पैदा होती है । (संग्रह, फ़तावा शैखुल इस्लाम, इब्ने तैमिया) इब्ने सादी का भी कहना है कि, गुणवाचक नामों का जितना अच्छा ज्ञान होगा, ईमान उतना ही ठोस होगा । (तहक़ीकुल उबूदिया ब मारिकुफ़तुल अस्माअ वस्सिफ़ात)

सृष्टिकर्ता का उसके सुन्दर नामों के साथ बड़ा गहरा संबंध है, गुणवाचक नामों के ज्ञान और समझ का अभाव ही बहुदेववाद के रूप में सामने आता है । जिसने इसको समझ लिया और अपने दिमाग़ में पूरी तरह उतार लिया वह कभी

भी शिर्क (बहुदेववाद) जैसे कृत नहीं कर सकता । मानव इतिहास इस पर साक्षी है कि पूजा व उपासना अर्थात किसी के आगे झुकना मानव प्रकृति में है । इसकी प्रकृति इसकी मांग करती है ।

वह यह भी भली-भाँति जानता है कि जिसके आगे वह झुक रहा है उसको शक्ति का मालिक होना चाहिए, उसमें संप्रभुता व तत्वदर्शिता होनी चाहिए। इसके बावजूद वह तुच्छ चीज़ों के आगे मस्तक रगड़ता है। इनसे आशाएं रखता है, इनको पुकारता है, चाहे वह इन्सान हों, जीव हों, वनस्पति हों, या दूसरे सांसारिक प्राणी हों, वह यह समझ बैठता है कि वह उसके काम आएंगे । हालांकि यह सब झूठे खुदा हैं । वह सच्चे ईश्वर की पूजा के स्थान पर उन झूठे खुदाओं की उपासना शुरू कर देता है और गुमराही में दूर तक चला जाता है ।

कुरआन ने जगह जगह इसकी निशानदही की है इस पर तंबीह की है । इसका अगर गहराई से जायज़ा लिया जाए तो पता चलेगा कि इसका कारण ग़लत आस्था है, जो अल्लाह के गुण हैं वह उन्होंने उन झूठे खुदाओं से जोड़ रखे हैं । कुछ उदाहरणों से इसकी व्याख्या हो जाएगी–"इनसे कहो क्या तुम अल्लाह को छोड़कर उसकी उपासना करते हो जो न तुमहारे लिए हानि का अधिकारी है न लाभ का, हालांकि सबकी सुनने और सब कुछ जानने वाला तो अल्लाह ही है ।" (अल-माइदा : 75)

"आख़िर उस व्यक्ति से बहका हुआ मनुष्य और कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर उनको पुकारे जो 'क़ियामत' तक उसे उत्तर नहीं दे सकते बल्कि इससे भी बेख़बर हैं कि पुकारने वाले उनको पुकार रहे हैं, और जब सभी मनुष्य एकत्र किए जाएंगे उस समय वे अपने पुकारने वालों के शत्रु और उनकी उपासनाओं के इन्कार करने वाले होंगे ।" (अल-अहक़ाफ़ : 5,6)

"और अल्लाह को छोड़कर उनको पूजते हैं जिनके हाथ में न आकाशों से उन्हें कुछ भी रोज़ी देनी है और न धरती से और न यह काम वे कर ही सकते हैं ।" (अन-नह्ल : 73), "फिर क्या वह जो पैदा करता है और वह जो कुछ भी पैदा नहीं करते, दोनों समान हैं, क्या तुम होश में नहीं आते ?" (अन-नहल : 17)

"लोगो एक मिसाल दी जाती है, ध्यान से सुनो । जिन पूज्यों को तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो वे सब मिलकर एक मक्खी भी पैदा करना चाहें तो नहीं कर सकते । बल्कि यदि मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले जाए तो वे उसे छुड़ा भी नहीं सकते । सहायता चाहने वाले भी निर्बल और जिनसे सहायता चाही जाती है वे भी निर्बल । इन लोगों ने अल्लाह की क़दर ही नहीं पहचानी जैसा कि उसके पहचानने का हक़ है । वस्तुस्थिति यह है कि बलवान और प्रभुत्वशाली तो अल्लाह ही है ।"

(सूरह हज : 73,74)

यह हक़ीक़त है कि अल्लाह सुनता है, जवाब भी देता है, वह पारितोशिक व प्रतिफल भी प्रदान करता है, निगरानी भी करता है । बेलाग फ़ैसले भी करता है, वह जीवित भी करता है और मारता भी है, वही खिलाता-पिलाता भी है, आकार व प्रारूप देता है, एक बार सबको मारकर दुबारा उठाएगा भी, इन सारी बातों का जिसको भी सही सही ज्ञान होगा वह कभी अल्लाह के सिवा किसी और की बन्दगी नहीं करेगा । उसके सामने झूठे खुदाओं की कोई हक़ीक़त नहीं है कहां वे पूजा के लायक़ समझे जाएं । जो कोई भी ऐसा करता है वह मानो अपने वजूद को झुठलाता है उसकी नाक़द्री करता है । इसलिए कि उसे एक अल्लाह के सिवा किसी के आगे झुकने का हुक्म नहीं दिया गया है । अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक करके अस्ल में इन्सान अल्लाह का इन्कार करता है उसके प्रकोप की आग को भड़काता है और उसकी नाराज़ी मोल लेता है ।

सार यह है कि ईमान बिल्लाह (ईश्वर पर ईमान) इस्लामी आस्था के नींव का पत्थर है, ज़िन्दगी की इससे बड़ी हक़ीक़त और कोई नहीं, जिसने इस अनुभूति को पा लिया तो मानो सच्चे आनन्द को प्राप्त कर लिया । एक इन्सान को जब अल्लाह की सच्चाई का ज्ञान हो गया उसने उसको पहचान लिया तो फिर उसके लिए जायज़ नहीं कि वह उसके अलावा किसी और की पूजा व इबादत करे । उसकी रूह उसकी तलाश में थी, यही उसके उत्पत्ति का उद्देश्य था, यही उसकी पैदाइश का अस्ल मक़सद था, जिस किसी को एक बार इस मिठास की अनुभूति मिल गयी और इस लज़्ज़त से आशना हो गया वह फिर और किसी द्वार का हो ही नहीं सकता न किसी और आस्ताने पर अपना सिर झुकाएगा, उसकी बेचैन रूह को उसी से चैन मिलेगा ।

वर्तमान समस्याएं और मुहम्मद (सल्ल०) का आदर्श जीवन

■ इब्ने अब्दुल्लाह

तेज़ी के साथ बीतते समय ने वर्तमानकाल को इक्कीसवीं शताब्दी में दाख़िल कर दिया । उन्नति एवं विकास की दृष्टि से शताब्दी एक बड़ा लम्बा अंतराल होती है । यदि हम अतीत में झांककर देखें तो इस अंतराल में दुनिया में बड़े-बड़े परिवर्तन हुए हैं । कई देशों की भौगोलिक स्थिति परिवर्तित हो गयी, संसार के मानचित्र में बहुत-से देशों की अभिवृद्धि हुई । गुलाम देशों को आज़ादी मिली । बर्लिन की जिस दीवार ने एक ही क़ौम को दो अलग और समानांतर गिरोहों में बांटकर रखा था, वह समाप्त हो गयी ।

मानव संसाधनों पर क़ब्ज़ा जमाए हुए कुछ लोगों का क़ब्ज़ा ख़त्म होने लगा और स्वतंत्र अर्थव्यवस्था की सोच दुनिया में उभरकर सामने आ गयी । मानव मस्तिष्क ने वैज्ञानिक विकास में बड़ी सफलता प्राप्त की और इस दिशा में उसकी यात्रा अब भी जारी है । बड़ी-बड़ी नयी खोजें सामने आयीं, पूरब और पश्चिम के बीच की दूरियां कम हो गयीं । आधुनिक प्रेस तथा एलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने विभिन्न मानव समाजों की सभ्यता एवं संस्कृति को समझने में उल्लेखनीय कारनामे अंजाम दिये । हम देखते हैं कि दुनिया ने इस अंतराल में एक करवट ली और एक ख़ामोश इन्क़िलाब ने दुनिया की हर चीज़ पर अपने गहरे असरात छोड़े ।

उपर्युक्त तमाम अच्छाइयों के बावजूद मानव समाज की ख़ुशहाली और वैचारिक स्वतंत्रता स्वच्छंद रूप से आगे बढ़ती रही और समाज किसी नैतिक सीमाओं के बिना अपनी भौतिक सम्पन्नता में वृद्धि के लिए प्रयासरत एवं लीन हो गया । दिखावे के लिए डर की वजह से अपने तौर पर कुछ क़ानून बनाकर उनका पालन केवल और केवल अपनी स्वार्थ सिद्धि की हद तक रहा और जहां उनसे स्वार्थ सिद्धि नहीं होती थी, वहां तमाम नियम, सिद्धांत तथा नैतिक सीमाओं को धता बताना उसने अपना हक़ समझा । इसको ध्यान देने योग्य नहीं समझा, चाहे उसका संबंध मानव नस्ल को बाक़ी रखने ही से क्यों न हो ।

धन-दौलत की बहुतायत के बावजूद धन की भूख में वृद्धि होती चली गयी, जिसके परिणामस्वरूप हलाल-हराम, जाइज़-नाजाइज़ और न्याय-अन्याय का अन्तर समाप्त हो गया । इन्सान केवल धन इकट्ठा करने में तल्लीन हो गया तथा जीवन के अन्य कर्तव्यों के प्रति उदासीनता के कारण आर्थिक एवं भौतिक अधिकारों की समस्या उठ खड़ी हुई और वर्तमानकाल में एक उपद्रव खड़ा हो गया ।

इन्सान ने धन-सम्पत्ति जमा करने का तो ख़ूब प्रदर्शन किया तथा धन के लोभ में हमेशा आगे-आगे दिखायी पड़ा, परन्तु उसने अपने मालिक (ख़ुदा) के मार्ग में ख़र्च करने से गुरेज़ किया । वह समाज सेवा और मानवाधिकारों की संकरी घाटी में पांव रखने के लिए तैयार नहीं है ।

इन्सान धन-दौलत को चाहते हुए उसको और बढ़ाने के प्रयास तो करता है, परन्तु अपने क़रीब-दूर के रिश्तेदारों, अनाथों और दीन-दुखियों को भूल जाता है । उसके इस रवैये ने इन्सानों में वंचित होने का एहसास पैदा कर दिया और उनके दिलों में एक-दूसरे के लिए नफ़रत और दुश्मनी पैदा हो गयी । इसी अन्तर ने समाज में इन्सानों को विभिन्न वर्गों में विभाजित कर दिया । एक वर्ग ने सत्ता तथा धन को अपना पैतृक अधिकार समझ लिया और विभिन्न तरीक़ों से इन दोनों को सदैव अपने पास रखने के लिए अन्याय एवं अत्याचार के रास्ते अपनाए तथा दूसरे वर्ग ने वंचित होने के एहसास को बुनियाद बनाकर अपनी कोशिश और संघर्ष को ग़लत दिशा में मोड़ दिया और इस वंचित वर्ग को, मौक़े का लाभ उठाने वाले लोगों ने, मानव समाज में उपद्रव फैलाने

के लिए इस्तेमाल किया ।

वर्ग संघर्ष

वर्गीय संघर्ष ने इन्सानी विश्वास को चूर-चूर कर दिया, इन्सानियत का विकास, आपसी मेल-जोल और एक-दूसरे के साथ प्रेम एवं सहयोग ही से हो सकता है, परन्तु वर्गीय संघर्ष ने 'शासक एवं प्रजा', 'स्वामी एवं दास' की मनगढ़ंत परिभाषाओं को आधार बनाकर इन्सानियत को आपस में बांट दिया, जिससे वर्तमान दौर बिगाड़ की चपेट में आ गया ।

नैतिक पतन

जब समाज के लोगों का उद्देश्य केवल धन-प्राप्ति तथा ऐशो-आराम हो जाए तो ऐसे समाज में नैतिक मूल्य कमज़ोर तथा पददलित होते हैं । ज़िम्मेदारी का एहसास कमज़ोर पड़ जाता है, सच्चाई को परे ढकेल दिया जाता है, अपने निजी स्वार्थ के लिए सामूहिक हितों की बलि चढ़ा दी जाती है और चोर बाज़ारी, जमाख़ोरी तथा रिश्वत आम हो जाती है ।

नाजाइज़ मुनाफ़ाख़ोरी

नाजाइज़ मुनाफ़ाख़ोर अपने लाभ के लिए तमाम नैतिक मूल्यों को धता बताकर इन्सानों को नुक़सान पहुंचाने में लग जाता है तथा मानव जीवन को स्थायित्व देने वाली चीज़ों में मिलावट द्वारा इन्सानी जान को नुक़सान पहुंचाने से गुरेज़ नहीं करते । इसी तरह रिश्वतख़ोर आदि भी नैतिक सीमाओं को फलांगते हैं, फिर यह नैतिक पतन समाज के कुछ विभागों तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरे समाज को अपनी लपेट में ले लेता है, जिसका परिणाम चोरी, मन्दी, धोखाधड़ी तथा ज़ुल्म-ज़्यादती के रूप में सामने आता है । इसमें बज़ाहिर तो हर इन्सान ख़ुश दिखायी देता है, मगर नैतिक पतन अन्दर ही अन्दर इस समाज को कमज़ोर और खोखला कर देता है, फिर ऐसे समाज में सुस्ती, आलस्य और कायरता आ जाती है । इन्सान की सोच संकुचित हो जाती है और इन्सान अपनी गरिमा खोकर मात्र जानवर बनकर रह जाता है । समाज अपने कर्तव्यों और ज़िम्मेदारियों को भूल जाता है, या जान-बूझकर उनकी उपेक्षा कर देता है ।

उपर्युक्त बातों को ज़ेहन में रखकर जब हम वर्तमानकाल का अवलोकन करते हैं तो आज का दौर हमें बहुत-सी समस्याओं में घिरा दिखायी देता है । इन समस्याओं का हल सिर्फ़ और सिर्फ़ एक ख़ुदा पर विश्वास और उसके पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के पूर्ण अनुपालन में निहित है । इन तमाम समस्याओं में निम्नलिखित समस्याएं प्रमुख हैं–

1. आर्थिक असंतुलन
2. वर्ग संघर्ष
3. नैतिक पतन

ये समस्याएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । कहीं तो इन्सान भांति-भांति के खाने खाकर ऊब गया है और डॉक्टरों ने उसे सादा भोजन की सूची देकर समझा दिया है कि अगर ज़िन्दा रहना है तो खाना कम और सादा खाएं । तो कहीं इन्सानों की लम्बी क़तारें अपने पेट की आग बुझाने के लिए एक वक़्त का खाना भी प्राप्त करने में असमर्थ हैं । एक वर्ग भौतिक संसाधनों के अत्याधुनिक लाभों से पूरा लाभ उठा रहा है और दूसरे वर्ग के पास जीवन व्यतीत करने के लिए मौलिक आवश्यकता की वस्तुएं भी उपलब्ध नहीं हैं । इसी टकराव ने इन्सानी आबादी को कई वर्गों में विभाजित कर दिया है और ये वर्ग आपस में लड़ रहे हैं, जिसके कारण इन्सानियत की पवित्रता का हनन हो रहा है, वर्गीय खाई ने इन्सान को एक-दूसरे का दुश्मन बना दिया है ।

पिछड़े देश तो एक तरफ़ रहे, स्वयं विकसित देशों में साहित्यकार एवं चिन्तक नैतिक पतन को लेकर चिन्ताग्रस्त नहीं हैं । आज इन्सानी बिरादरी धरती पर होने वाले अत्याचारों पर चुप है और अपने विशेष हितों के लिए नैतिक साहस दिखाने में असमर्थ है ।

इन समस्याओं के समाधान के लिए विभिन्न समयों में विभिन्न लीडरों के विचार एवं व्यवहार को अपनाने की कोशिश की गयी, लेकिन समस्याएं ज्यों की त्यों रहीं, क्योंकि उनके विचार किसी विशेष समय एवं इलाक़े के लिए तो प्रभावकारी हो सकते थे, लेकिन सारी इन्सानियत की समस्याओं का समाधान उनके पास नहीं था । आइए ईमानदारी से देखें कि वर्तमान समय की समस्याओं का हल किस प्रकार संभव है ? क़ुरआन मजीद ने ऐलान किया कि तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के जीवन में उत्तम आदर्श है । यह मार्गदर्शन वही कर सकता है जिसे तमाम इन्सानियत का मार्गदर्शन करने, उनको सीधा मार्ग दिखाने और कल्याण के लिए भेजा गया है । क़ुरआन में कहा गया है–

"कह दो, ऐ लोगो मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का रसूल बनाकर भेजा गया हूं ।"

मुहम्मद (सल्ल०) का पैग़म्बर बनाया जाना तमाम ज़मानों के लिए सर्वथा दयालुता बताया गया है । कहा गया,

"और हमने आपको तमाम जहानों के लिए रहमत बनाकर भेजा है ।" वह महान हस्ती मानवता उपकारक हज़रत मुहम्मद की है । आइए, हम सरसरी तौर पर नबी (सल्ल०) की ज़िन्दगी में वर्तमान जीवन द्वारा पैदा हुई समस्याओं का अवलोकन करें ।

संतुलित आर्थिक व्यवस्था

दुनिया में हर इन्सान की प्रतिभाएं एक जैसी नहीं होतीं। रोज़ी कमाने की दृष्टि से सबकी हालत भी बराबर नहीं है। किसी को खाने-कमाने के अवसर अधिक मिलते हैं तो किसी को कम, कहीं ताक़तवर ने कमज़ोर को दबा रखा है । हैसियत और क्षमता की दृष्टि से तमाम इन्सानों की स्थिति भी एक जैसी नहीं है, लेकिन इस्लाम यह बरदाश्त नहीं करता कि रोज़ी कमाने की दृष्टि से लोगों को समान अवसर न मिलें, किसी को मिले, किसी को न मिले । वह कहता है कि हर इन्सान जो दुनिया में पैदा हुआ है, वह दुनिया में रोज़ी पाने का हक़दार है । इस्लामी व्यवस्था इन्सानों को छोटे-बड़े में विभाजित नहीं करती, बल्कि सब इन्सानों एक ही कुंबा, एक खुदा के बन्दे बताती है । इस सिलसिले में मुहम्मद (सल्ल०) की शरीअत (धर्म विधान) ने रोज़ी कमाने की विचारधारा को न केवल सार्वजनिक किया, बल्कि उनके अधीन व्यवस्था में उसे इबादत का दरजा दिया गया है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर जो किताब अवतरित हुई, उसने बताया कि अल्लाह ने धरती को इन्सान के लिए आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र ठहराया है और इन्सानों को प्रेरणा दी है कि रोज़ी हासिल करने के लिए भरसक प्रयास करें । अत: इबादत के बाद दूसरा फ़र्ज़ रोज़ी हासिल करने को बताया गया है ।

हलाल रोज़ी का नज़रिया

अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की लायी हुई व्यवस्था ने हलाल रोज़ी का नज़रिया दिया । रोज़ी हासिल करने में अगर चोर बाज़ारी, जमाख़ोरी, धोखाधड़ी, छल-कपट शामिल हो जाए तो इससे कुछ लोग तो रातों-रात दौलतमन्द बन जाते हैं, लेकिन पूरा समाज तंगहाली का शिकार हो जाता है । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) एक बाज़ार से गुज़रे । अनाज के किसी ढेर में हाथ डाला, अन्दर से वह अनाज गीला था । आप (सल्ल०) ने पूछा, "यह क्या है ?" अनाज के मालिक ने कहा, "बारिश के कारण माल भीग गया था, जिसे हमने नीचे छिपा लिया था ।" यह जवाब सुनकर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जिसने धोखा किया वह हममें से नहीं ।" आप (सल्ल०) ने माल हासिल करने के तमाम नाजाइज़ साधनों को दूर कर दिया । इस संबंध में ब्याज पर आधारित कारोबार सहित नाजाइज़ तरीक़ों से कमाई हुई दौलत को हराम क़रार दिया । मुहम्मद (सल्ल०) की शरीअत ने इन्सानी समाज को एक ऐसे इंन्क़िलाब से परिचित कराया जिसमें दौलत को कुछ हाथों से निकाल कर तमाम लोगों के लाभ उठाने के लिए आम कर दिया गया ।

ज़कात की व्यवस्था को इबादत के साथ ही जगह दी और समाज को यह बताया कि यह तुम्हारे खुशहाल लोगों से लेकर तुम्हारे ही ग़रीबों में बांटी जाएगी । मुहम्मद (सल्ल०) के संदेश द्वारा अर्थव्यवस्था में असंतुलन को न केवल कमाने के द्वारा समाप्त किया गया, बल्कि बौद्धिक क्षमता और प्रतिभाओं के आधार पर भी । फिर भी कुछ लोगों के पास अगर दौलत जमा हो जाए तो उनकी यह ज़िम्मेदारी ठहरायी कि वे निर्धनों, ज़रूरतमन्दों और दीन-दुखियों का ध्यान रखें । आप (सल्ल०) की पाक जीवनी की रौशनी में हमें एक ऐसी संतुलित एवं न्यायपरक व्यवस्था मिलती है जिसमें हर वर्ग और हर सदस्य अपनी तमाम प्रतिभाओं का प्रयोग कर सके, उसकी सामाजिक आवश्यकताएं भी पूरी हो जाएं और उसके नैतिक आचरण में भी कमज़ोरी न आए ।

वर्ग संघर्ष का उन्मूलन

आप (सल्ल०) की पाक जीवनी के प्रकाश में दुनिया को एक व्यवस्था मिली, जिसमें वर्गीय संघर्ष, गिरोही नफ़रत और दुश्मनी की भावना कार्यरत न हो, बल्कि हर इन्सान दूसरे इन्सान के लिए सहयोगी, एक-दूसरे के लिए शुभचिंतक बनकर जीवन व्यतीत करने को लोक-परलोक में सफलता का ज़रिया समझे ।

एक बार एक सहाबी (सल्ल०) से अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दीन एक-दूसरे से भलाई करने का नाम है ।" आप (सल्ल०) ने जो व्यवस्था दी, उसने राजा-प्रजा, किसान-ज़मींदार, मज़दूर और मालदार के हितों को आपस में अटूट अंग की तरह जोड़ दिया और इन्सानी मुहब्बत को ईमान का पैमाना ठहरा दिया । आप (सल्ल०) का कथन है, "तुममें से कोई व्यक्ति भी उस समय तक (सही अर्थों में) ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिए भी वही कुछ पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द करता है ।"

क़ुरआन व हदीस

अनूदित क़ुरआन मजीद	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	380.00
.क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान	डॉ० मौरिस बुकैले	20.00
.क़ुरआन और पैग़म्बर	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	22.00
क़ुरआन का ख़ानदानी निज़ाम	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	26.00
.क़ुरआन की आर्थिक शिक्षाएँ	डॉ० फरहत हुसैन	20.00
.क़ुरआन कैसे पढ़ें?	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	24.00
.क़ुरआन प्रबोध (तीसवां पारा)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	150.00
.क़ुरआन पर अमल	सुमय्या रमज़ान	75.00
.क़ुरआन मजीद का परिचय	मौलाना सदरुद्दीन इस्लाही	64.00
.क़ुरआन मजीद की शिक्षाएँ	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	12.00
.क़ुरआन सन्देहों का निवारण	सनाउल्लाह	16.00
.क़ुरआन सबके लिए	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां	28.00
.क़ुरआन की परिवार सम्बन्धी शिक्षाएँ	डॉ० मुहम्मद रज़ीउल-इस्लाम नदवी	20.00
.क़ुरआन की बातें 1-2	सय्यद नज़र ज़ैदी	48.00
.क़ुरआन कुछ आवश्यक जानकारियाँ	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	16.00
तर्जमा क़ुरआन मजीद	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	575.00
तफ़हीमुल-क़ुरआन(भाग-१ से४)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	2115.00
तफ़हीमुल-क़ुरआन सूरा अल-रअ़द	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
.क़ुरआन और इन्सान 21वी सदी में	डॉ० सय्यद शाहिद अली	95.00
सूरा फ़ातिहा	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां	14.00
तलख़ीस तफ़हीमुल-क़ुरआन भाग-1-2	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	1320.00
हदीस और सुन्नत से हिदायतें	डॉ० मज़हर क़ाज़ी	80.00
हदीस .क़ुदसी	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां	25.00
हदीस प्रभा (सफ़ीना-ए-नजात)	मौलाना जलील अहसन नदवी	120.00
हदीस शास्त्र एक परिचय	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां	90.00
हदीस सौरभ भाग-१ ता ५	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां	1080.00
चालीस हदीसें	मौलाना सय्यद हामिद अली	20.00
चालीस हदीसें (मूल अरबी के साथ)	मौलाना सय्यद हामिद अली	58.00
पैग़म्बर (सल्ल०) की बातें	अब्दुर्रव करीमी	25.00
इनकारे-हदीस की हक़ीक़त	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	32.00
रहमत ही रहमत (नबी सल्ल० की सीरत से)	अश-शैख़ अताउल्लाह कुरेजा	66.00

Customer Care No : 7290092403 E-mail: info@mmipublishers.net :آرڈر کے لیے رابطہ کریں

MMI PUBLISHERS

- D-307,Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave Jamia Nagar New Delhi-110025
- Phone:26981652,26984347 Mob: 7290092401
- E-mail:info@mmipublishers.net,mmipublishers@gmail.com
- Website:www.mmipublishers.net

हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि॰)

■ अब्दुर्रहमान राफ़त पाशा

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) अपनी चची हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद (रज़ि॰) को हमेशा 'ऐ मेरी अम्मी' कहकर पुकारा करते थे। कारण यह था कि जब बचपन ही में आप (सल्ल॰) की मां आमिना चल बसीं और अभी आप (सल्ल॰) आठ ही वर्ष के थे कि आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब भी अपनी मृत्यु को प्राप्त हो गए और दादा अब्दुल मुत्तलिब की वसीयत के अनुसार, आप (सल्ल॰) के लालन-पालन की ज़िम्मेदारी अबू तालिब ने संभाली, तो हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद (रज़ि॰) ने इतने प्यार एवं स्नेह से आप (सल्ल॰) को पाला-पोसा कि बाल्यकाल ही में माता की मौत का ग़म भी बहुत हल्का कर दिया, आपके लिए। आप (सल्ल॰) ने भी अपनी चची और चचा के स्नेह एवं प्यार को जीवन भर नहीं भुलाया। सदा उनके एहसान को याद रखा और जितना हो सका, उस परोपकार का प्रतिदान उन्हें देने का प्रयास किया।

जब आप (सल्ल॰) पच्चीस वर्ष के हुए और हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) से आपका विवाह हो गया तो आपका जीवन पहले के मुक़ाबले थोड़ा ख़ुशहाल हो गया। इधर आप (सल्ल॰) के चचा अबू तालिब वैसे भी अधिक संतानों वाले अधीन आदमी पहले से ही थे, लेकिन उस साल पड़ने वाले सूखे ने उनकी कमर तोड़ कर रख दी। वे तथा उनकी औलादें दाने-दाने को तरस गये। ऐसे में आप (सल्ल॰) को अपने चचा और चची का वह परोपकार एवं एहसान और ज़्यादा याद आया जो उन्होंने आप (सल्ल॰) पर आपके बाल्यकाल में किया था। आप (सल्ल॰) ने मन ही मन तय कर लिया कि चचा-चची की संतान को अगर मैं अपने लालन-पालन में ले लूं तो एक ओर जहां उनके एहसान का थोड़ा-सा प्रतिकार अदा हो जाएगा वहीं दूसरी ओर उनका बोझ भी ज़रा हल्का हो जाएगा।

यह सोचकर आप (सल्ल॰) अपने दूसरे चचा हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि॰) के पास गये और अपनी योजना उनके सामने रखते हुए उनसे विनती की कि आप भी उनकी एक औलाद को अपने ज़िम्मे में ले लें ताकि चचा अबू तालिब को ज़रा-सी राहत मिल जाए।

हज़रत अब्बास (रज़ि॰) ने आप (सल्ल॰) की राय को बहुत पसन्द किया और दोनों अबू तालिब के पास गये और अपनी योजना उनके सामने रखी। अबू तालिब ने थोड़ी देर सोचने के बाद कहा : अक़ील को छोड़कर जिसको चाहो अपने साथ ले जा सकते हो।

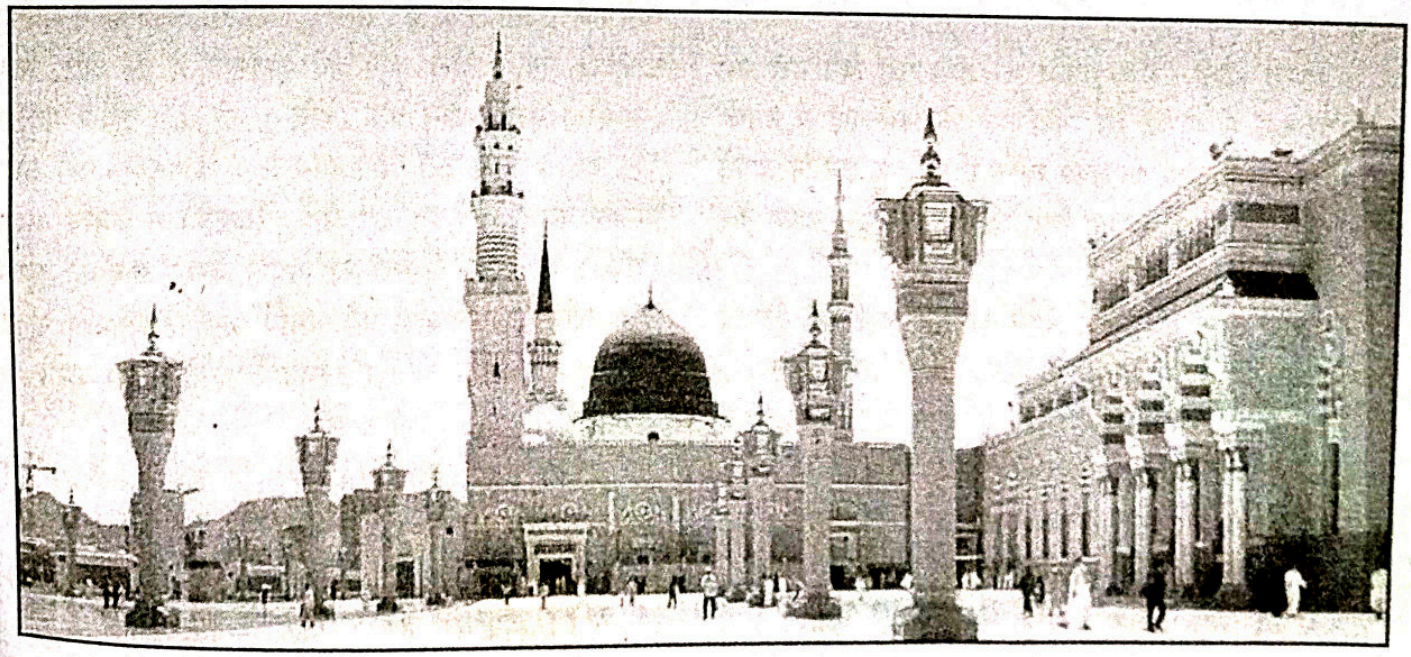

इस पर हज़रत अब्बास (रज़ि॰) ने जाफ़र (रज़ि॰) को तथा आप (सल्ल॰) ने हज़रत अली (रज़ि॰) को अपने ज़िम्मे में ले लिया ।

इस प्रकार हज़रत अली (रज़ि॰) को अपने शिशुकाल ही में यह शुभ अवसर प्राप्त हो गया कि वे ऐसे महान व्यक्ति की गोद में पलें-बढ़ें जो शीघ्र ही पूरी मानवजाति के लिए अल्लाह का अंतिम दूत बनने वाला था । हज़रत अली (रज़ि॰) आप (सल्ल॰) तथा हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) की संगत में रहते हुए अपनी दीन-दुनिया दोनों को ख़ूब संवार ही रहे थे कि अल्लाह ने आप (सल्ल॰) को अपना अंतिम दूत चुन लिया ।

एक दिन आधी रात को हज़रत अली (रज़ि॰) नींद से जागे तो देखा कि आप (सल्ल॰) और हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) साथ-साथ नमाज़ पढ़ रहे हैं । नमाज़ में उनका रुकू तथा सजदा करना, हज़रत अली (रज़ि॰) को आश्चर्यचकित कर गया । उन्होंने पूछा : आप दोनों यह क्या कर रहे थे ?

आप (सल्ल॰) ने उत्तर दिया : यह उसी धर्म की इबादत है जिसे अल्लाह ने इन्सानों के लिए चुना है और इसी धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए हर ज़माने में अपने नबियों तथा रसूलों को भेजता रहा है । मैं तुम्हें भी इस धर्म को ग्रहण करने तथा लात एवं उज़्ज़ा का इन्कार करने की दावत देता हूं ।

हज़रत अली (रज़ि॰) ने कहा : यह ऐसा धर्म है जिसके बारे में मैंने इससे पहले कभी कुछ नहीं सुना, इसलिए मैं पिताश्री से पूछ लेने के बाद ही कोई निर्णय लूंगा ।

हज़रत अली (रज़ि॰) रात भर तथा पूरा दिन उस नये धर्म के बारे में सोचते रहे, यहां तक कि अल्लाह ने उनके दिल का द्वार इस्लाम के लिए खोल दिया तथा उन्होंने अपने पिता अबू तालिब से सलाह लिए बिना ही इस्लाम ग्रहण कर लिया ।

हज़रत अली (रज़ि॰) अपने इस्लाम लाने को छिपाए रहे । जब नमाज़ का समय हो जाता तो वे आप (सल्ल॰) के साथ मक्का की किसी घाटी में चले जाते और नमाज़ अदा करके घर लौट आते थे । जब उनके पिताजी को उनके इस्लाम क़बूल करने की सूचना मिली तो उन्होंने पूछा : बेटे अली ! यह कौन-सा धर्म है जिसे तुमने क़बूल किया है ?

हज़रत अली (रज़ि॰) ने जवाब दिया : पिताजी ! मैं एक अल्लाह पर ईमान ले आया हूं तथा मुहम्मद (सल्ल॰) का अनुसरण करने का प्रण लिया है ।

अबू तालिब ने कहा : निस्संदेह, मुहम्मद (सल्ल॰) ने तुम्हें भली चीज़ ग्रहण कराई है । तुम उनके दीन (धर्म) पर जमे रहो तथा उनका अनुकरण करते रहो ।

अपने पिता की यह बात सुनकर हज़रत अली (रज़ि॰) ख़ुश हो गये और अपने इस्लाम क़बूलने की सबके सामने घोषणा कर दी ।

आप (सल्ल॰) को नबी बनाए जाने के सातवें साल कुरैश ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ एक कठोर निर्णय लिया जिसके तहत तमाम मक्कावासियों ने बनू हाशिम (आप सल्ल॰ के ख़ानदान) का बाइकाट कर दिया । लाचार तथा विवश होकर बनू हाशिम और दूसरे सभी मुसलमान 'अबू तालिब की घाटी' में चले गये । तीन साल तक उन्हें ऐसा दुखमय जीवन बिताना पड़ा जिसका हाल सुनकर आज भी शरीर के अन्दर की आत्मा कांप जाती है । उस समय हज़रत अली (रज़ि॰) बिल्कुल नवयुवक थे । घाटी में उन्हें भी वह तमाम कष्ट झेलना पड़े जो दूसरे सारे मुसलमानों ने झेले, किन्तु वे इस्लाम के मामले में टस से मस नहीं हुए, बल्कि अपने धर्म के प्रेम में और ज़्यादा प्रगाढ़ हो गये ।

'जहां पर तमाम रास्ते बन्द हो जाते हैं, वहीं पर एक रास्ता खुल भी जाता है' के स्वरूप जब मक्का वालों ने मुसलमानों पर जीवन के सभी रास्ते बन्द कर दिए तो अल्लाह ने उनके लिए मदीने का द्वार खोल दिया । धीरे-धीरे सारे मुसलमान अपना स्वदेश त्याग कर मदीना चले गये । अंत में आप (सल्ल॰) को भी अल्लाह ने मक्का छोड़कर मदीना चले जाने की अनुमति दे दी और आप (सल्ल॰) हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) को साथ लेकर मदीना चले गये । जिस रात आप (सल्ल॰) को मदीने की ओर प्रस्थान करना था, उस रात आप (सल्ल॰) ने हज़रत अली (रज़ि॰) को अपने बिस्तर पर अपनी चादर ओढ़ाकर सुला दिया और मक्का वालों की तमाम अमानतें आपके सुपुर्द करके वसीयत कर दी कि उनकी अमानतें वापस करने के बाद तुम भी मदीने चले आना ।

हज़रत अली (रज़ि॰) ने मक्का में आप (सल्ल॰) का मिशन पूरा करने के बाद, मदीने की राह ली और वहां पहुंचकर आप (सल्ल॰) की छत्रछाया में अपने जीवन के रात-दिन बिताने लगे ।

17 रमज़ान सन 2 हिजरी को बद्र की जंग पेश आयी तो हज़रत अली (रज़ि॰) ने उसमें कुरैश के छक्के छुड़ा दिये । ऐसी वीरता से उन्होंने जंग की, कि मुश्रिकों के पसीने छूट गये । उस जंग के बाद उनकी वीरता तथा रणभूमि में उनका कौशल-दुश्मनों में एक तरह से चर्चा का विषय बन गया और सभी उनकी वीरता का आदर करने लगे ।

मक्का से मदीने में मुसलमानों के स्थानांरित हुए, दो साल गुज़र चुके थे और तीसरा साल शुरू हो चुका था । इसी साल हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) के दिल में आया कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से अपने प्रेम-बंधन को और ज़्यादा मज़बूत करने हेतु आप (सल्ल॰) की सबसे छोटी और सबसे प्यारी बेटी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) से शादी कर लें । यह सोचकर वे आप (सल्ल॰) के पास आए और आपसे हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) का हाथ मांगा लेकिन आप (सल्ल॰) ने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया । बिल्कुल यही कल्पना हज़रत उमर (रज़ि॰) के मन में भी आयी और उन्होंने भी आप (सल्ल॰) के सामने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) से विवाह का प्रस्ताव रखा, परन्तु आप (सल्ल॰) ने इन्हें भी कोई जवाब नहीं दिया । अंतत: यह दोनों हज़रत अली (रज़ि॰) के पास गये और उनको हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) से शादी कर लेने पर उभारा ।

हज़रत अली (रज़ि॰) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) का हाथ मांगने की नीयत से आप (सल्ल॰) के पास गये तो सही, लेकिन शर्म के मारे कुछ कह न सके । अंत में स्वयं आप (सल्ल॰) ने ही ख़ामोशी तोड़ी और महर की रक़म के बारे में पूछा । हज़रत अली (रज़ि॰) ने महर की रक़म जुटाई और फिर आप (सल्ल॰) ने अपनी लाडली बेटी फ़ातिमा (रज़ि॰) का हाथ, ढेर सारी नेक दुआओं के साथ हज़रत अली (रज़ि॰) के हाथ में दे दिया । उस वक़्त हज़रत अली (रज़ि॰) की आयु बाइस वर्ष थी जबकि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) की आयु सोलह वर्ष की थी ।

इस शुभ विवाह के सम्पन्न होने के बाद बहुत जल्दी इतिहास ने कई करवटें लीं । उहुद, ख़ंदक़ और हुदैबिया संधि जैसे कई अहम मोड़ इस्लामी इतिहास के पन्नों पर उभर आये । इस दौरान हज़रत अली व फ़ातिमा (रज़ि॰) के घर की वाटिका में 'हसन तथा हुसैन' (रज़ि॰) नामी दो अनहद सुन्दर तथा कोमल फूल भी खिले जिन्होंने न केवल उनके अपितु आप (सल्ल॰) के जीवन में भी ख़ुशियों की तरंगें भर दीं । फिर आया ख़ैबर का युद्ध जिसने मुसलमानों की एक बार फिर कठिन परीक्षा ली ।

जब आप (सल्ल॰) मुस्लिम लश्कर के साथ ख़ैबर के क्षेत्र में उतरे तो आपको सिरदर्द की बीमारी ने आ लिया । इसी कारण आप (सल्ल॰) स्वयं मैदाने जंग में नहीं जा सके । आप (सल्ल॰) ने इस्लामी लश्कर का झंडा पहले दिन हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) के हाथों में दिया और उन्होंने यहूदियों से जमकर जंग की लेकिन पूर्ण विजय पाने में नाकाम रहे ।

दूसरे दिन आप (सल्ल॰) ने इस्लामी परचम हज़रत उमर (रज़ि॰) के हाथों में सौंपा । उन्होंने भी घमासान की जंग की किन्तु वे भी पूर्ण सफलता पाने में नाकाम रहे । जब आप (सल्ल॰) को इसकी सूचना मिली तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया : कल मैं इस्लामी परचम एक ऐसे आदमी के हाथों में थमाऊंगा जो अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल॰) से प्रेम करता है तथा अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल॰) उससे प्रेम करते हैं । उसी के हाथों अल्लाह तआला ख़ैबर को फ़तह कराएगा ।

प्रत्येक सहाबी के दिल में यह आशा उमड़ रही थी कि यह सम्मान उसे ही प्राप्त हो । सुबह हुई और फ़ज्र की नमाज़ पढ़ ली गयी तो आप (सल्ल॰) की ज़ुबान से आवाज़ आयी : अली कहां हैं ? आप (सल्ल॰) को बताया गया कि उनकी आंखें दुख रही हैं । आप (सल्ल॰) ने फिर भी उन्हें बुला भेजा और जब वे आये तो आप (सल्ल॰) ने अपने पावन मुंह का पावन थूक ज़रा-सा लेकर उनकी आंखों में डाल दिया जिससे तत्काल उनकी आंखें ठीक हो गयीं । फिर उन्हें इस्लामी झंडा देकर दुआओं के साथ विदा किया ।

यहां पर हज़रत अली (रज़ि॰) की टक्कर यहूदियों के प्रख्यात सूरमा मरहब से हुई । दोनों शेरों ने वीरता के जौहर दिखाए । अंतत: अल्लाह का शेर शैतान के शेर पर ग़ालिब आया । हज़रत अली (रज़ि॰) ने मरहब पर तलवार का ऐसा ज़ोरदार प्रहार किया कि वह मरहब के सर को कवच समेत चीरते हुए उसकी कमर तक चली गयी । इस प्रकार हज़रत अली (रज़ि॰) के हाथों ख़ैबर विजय के अभियान का उद्घाटन हुआ और कुछ ही दिनों के अन्दर पूरा ख़ैबर क्षेत्र मुसलमानों के स्वामित्व में आ गया ।

ख़ैबर की विजय के बाद अनगिनत मुहिमों में हज़रत अली (रज़ि॰) ने अपनी वीरता से इस्लाम तथा मुसलमानों को लाभ पहुंचाया । सन ग्यारह हिजरी में अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) अल्लाह को प्यारे हो गये और हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) आप (सल्ल॰) के उत्तराधिकारी बने तो हज़रत अली (रज़ि॰) ने उनके परामर्शदायक के तौर पर काम किया । फिर हज़रत उमर (रज़ि॰) दूसरे ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन बने तो उनको भी हज़रत अली (रज़ि॰) अपनी विवेकपूर्ण सलाहें देते रहें । हज़रत उमर (रज़ि॰) ने विशेषत: उनके ज्ञान एवं विवेक का ख़ूब प्रयोग किया । वे कहा करते थे कि हमारे सबसे बड़े जज हज़रत अली (रज़ि॰) हैं । अगर वे न होते तो उमर हलाक हो जाता ।

उनका बिल्कुल यही मामला हज़रत उसमान (रज़ि॰) के साथ भी रहा । अंत में ख़ुद वे ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन के पद पर आसीन हुए । लेकिन उनकी ख़िलाफ़त (उत्तराधिकारी) का ज़माना आते-आते मुसलमानों की एकजुटता धूमिल हो चुकी थी ।

इसी कारण उन्हें जमल, सिफ़्फ़ीन और नहरवान नामी कई ऐसी जंगें लड़नी पड़ीं जिनमें मरने और मारने वाले दोनों मुसलमान ही थे । यह और बात है कि इस सारे उपद्रव के पीछे मुस्लिम दुश्मनों का अज्ञात हाथ भी था ।

इस उपद्रवी वातावरण में 17 रमज़ान सन 40 हिजरी को अब्दुर्रहमान बिन मुलजम ने आप (रज़ि॰) को ज़हर में बुझी तलवार मारी जिससे आप 20 रमज़ान 40 हिजरी को शहीद के रूप में अल्लाह को प्यारे हो गये ।

आपको, आपके दोनों पुत्रों, हसन एवं हुसैन (रज़ि॰) तथा हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ि॰) ने स्नान दिया । हज़रत हसन (रज़ि॰) आपके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई, फिर कूफ़ा में किसी जगह पर आपको दफ़ना दिया गया ।

यह है हज़रत अली (रज़ि॰) की जीवन का संक्षिप्त वर्णन । यदि हम उनकी गुणवत्ताओं पर नज़र डालें तथा उनके सद्गुणों का वर्णन करें तो बात काफ़ी लंबी हो जाएगी । फिर भी हम यहां पर उनके जीवन चरित्र के कुछ फूल अवश्य चुनेंगे ताकि उन्हें अपने जीवन चरित्र की माला में पिरोने वाले, पिरो कर अपने जीवन को उनके द्वारा दिखाए गये सुपथ पर डाल सकें ।

हज़रत अली (रज़ि॰) अपनी प्रजा के लिए रहमत का फ़रिश्ता थे । ग़रीबों और फ़क़ीरों के लिए उनके कोशागार का द्वार हमेशा खुला रहता था । ईरान में बराबर साज़िशें तथा बग़ावतें होती रहती थीं फिर भी वे ईरानियों से बड़े स्नेह तथा कृपा का मामला करते थे । उनके इस सदाचरण से ईरानी इतना प्रभावित हुए कि कहने लगे : अल्लाह की क़सम ! इस अरबी शख़्स ने नौशीरवां के न्याय की याद ताज़ा कर दी है ।

हज़रत अली (रज़ि॰) का एक और सद्गुण जो उल्लेखनीय है, वह यह है कि वे बड़े दानी आदमी थे । एक बार रात भर बाग़ में पानी देने की मज़दूरी में उनको कुछ जौ मिले । प्रात: घर आये और उनको पिसवाकर हलवा बनवाया । खाने बैठे ही थे कि दरवाज़े पर फ़क़ीर ने दस्तक दी और कुछ खाने को मांगा । आपने पूरा हलवा उस फ़क़ीर को दे दिया, उसमें से एक लुक़मा भी न खाया । अल्लाह तआला को आपकी यह अदा इतनी भाई कि आपकी तारीफ़ में क़ुरआन की यह आयत उतार दी :

"और अल्लाह के प्रेम में मिस्कीन, यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं ।" (अद-दहर : 8)

इन सब गुणवत्ताओं से बढ़कर आपका एक गुण यह था कि आप इस्लामी शरीअत के महान ज्ञानी एवं ज्ञाता थे । अरबी भाषा का व्याकरण जिसे 'इल्मे नह्व' कहा जाता है, के आविष्कारक आप ही हैं । इसके अलावा आपको इस्लामी विधान का भी बड़ा गहरा ज्ञान था । संबोधन में तो आपका तुल्य कोई था ही नहीं । आप इस अंदाज़ से वक्तव्य देते थे कि लोग मंत्रगुग्ध हो उठते थे ।

ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन होने के बाद भी आपका जीवन बहुत सादा था । एक बार अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर नामी व्यक्ति आपके साथ खाने में शरीक था । उसने आपका मामूली खाना देखकर कहा : अमीरुल मोमिनीन ! क्या आपको पंक्षियों का मांस खाने का शौक़ नहीं ?

आप (रज़ि॰) ने कहा : ऐ ज़ुबैर के बेटे ! वक़्त के शासक को मुसलमानों के माल में केवल दो प्यालों का अधिकार है । एक ख़ुद खाए और अपने घर वालों को खिलाए तथा दूसरा अल्लाह के बंदों को पेश करे ।

यह थे कुछेक नमूने हज़रत अली (रज़ि॰) के सद्गुणों के । अल्लाह आप पर रहमत की वर्षा करे कि आप वाक़ई आप अनहद उच्च स्वभाव के मालिक तथा सद्गुणों वाले व्यक्ति थे । आप जिए भी तो इस्लाम के लिए और मरे भी तो अल्लाह की ख़ुशी प्राप्त करने की राह में !!!

बहुपत्नीत्व–नारी जाति पर अत्याचार ?

■ मुहम्मद ज़ैनुलआबिदीन मंसूरी

इस्लाम में बहुपत्नीत्व का प्रचलन है जो नारी के शोषण तथा उसके प्रति दुर्व्यवहार व अत्याचार है । विशेषत: भारत के परिप्रेक्ष्य में इसका एक मुख्य आयाम यह भी है कि मुसलमान कई-कई पत्नियां रखकर अधिक संतानोत्पत्ति करके अपनी जनसंख्या बढ़ा रहे हैं । इस प्रकार कुछ वर्षों में वे बहुसंख्यक समुदाय बनकर देश की सत्ता अपने हाथ में कर लेना चाहते हैं ।

ईश्वरीय धर्म मानव-इतिहास के विभिन्न चरणों में, विभिन्न भू-भागों की विभिन्न जातियों व क़ौमों के हाथों बार-बार विकरित व प्रदूषित होते-होते तथा बार-बार ईशदूतों के आगमन द्वारा सुधार प्रक्रिया जारी किये जाते-जाते, क़रीब 1400 वर्ष पूर्व जब 'इस्लाम' के रूप में आया, उस समय बहुपत्नीत्व (Polygyny) विभिन्न रूपों में विश्व के लगभग हर समाज, संस्कृति में प्रचलित था । उदाहरणत: स्वयं हिन्दू समाज की अत्यंत महत्वपूर्ण, महान आदर्णीय धार्मिक विभूतियों तथा महापुरुषों की कई-कई पत्नियों व रानियों का उल्लेख धर्म ग्रंथों में मौजूद था । अरब समाज में भी–जिसमें ईशग्रंथ क़ुरआन के अवतरण के साथ इस्लाम का अविर्भाव हुआ–पत्नियों की अधिकतम संख्या निर्धारित व नियंत्रित न थी । इस्लाम ने "अधिकतम चार" की संख्या निर्धारित कर दी । इस प्रकार इस्लाम ने 'बहुपत्नीत्व' का प्रचलन आरंभ नहीं किया, बल्कि 'अधिकतम सीमा' का निर्धारण व नियंत्रण किया ।

बहुपत्नीत्व की इजाज़त

इस्लाम ने यह इजाज़त (आज्ञा) दी कि व्यक्तिगत, सामाजिक तथा नैतिक स्तर पर यदि ऐसी परिस्थिति का सामना हो कि बहुपत्नी-विवाह, पुरुष, स्त्री, परिवार तथा समाज के लिए लाभप्रद हो तो पुरुष परिस्थिति-अनुसार दो, तीन या अधिक से अधिक चार पत्नियां रख सकता है । यह इजाज़त इस शर्त के साथ (Conditional) है कि सभी पत्नियों के बीच पूर्ण न्याय व बराबरी का मामला किया जाए । अगर ऐसा न होने की आशंका हो या पुरुष में इसका सामर्थ्य न हो, तो शरीअत का आदेश है कि 'बस एक ही' पत्नी के साथ दाम्पत्य जीवन बिताया जाए ।

मुस्लिम समाज में लगभग डेढ़ हज़ार वर्षों से आज तक हर देश में हमारे देश भारत में भी इसी बात पर अमल होता रहा है । अगली पंक्तियों में यह देखने का प्रयास किया जा रहा है कि यद्यपि सामान्य परिस्थितियों में, मुस्लिम समाज सहित किसी भी समाज में बहुपत्नीत्व वस्तुत: प्रचलित नहीं है तो फिर वे कौन-सी विशेष (असामान्य) परिस्थितियां हैं जिनमें बहुपत्नीत्व की ज़रूरत पड़ सकती है ? इसके फ़ायदे क्या हैं तथा इसे निषिद्ध कर देने की हानियां क्या हैं ? इसे निषिद्ध और ग़ैर-क़ानूनी घोषित कर देने तथा इसका रास्ता बन्द कर देने से पुरुष, स्त्री, संतान, परिवार, समाज और व्यवस्था पर क्या-क्या कुप्रभाव पड़ते हैं ?

विभिन्न परिस्थितियां

■ **परिस्थिति–1 :** पत्नी किसी कारणवश संतानोत्पत्ति की क्षमता नहीं रखती । वह बांझ हो सकती है या उसे कोई विशेष रोग हो सकता है । पति, पिता बनने और अपनी नस्ल आगे बढ़ाने की कामना का दमन करने में स्वयं को असमर्थ पाता है ।

■ **परिस्थिति–2 :** पत्नी किसी ऐसे यौन-रोग (Veneral desease) से ग्रस्त हो जाए कि चिकित्सा-विशेषज्ञों द्वारा पति को उसके साथ शारीरिक संपर्क करने की मनाही कर दी जाए । इस स्थिति में पति स्वयं पर नियंत्रण रखने में सहज ही असमर्थ हो जाएगा ।

■ **परिस्थिति–3 :** किसी विधवा स्त्री का कोई सहारा न हो । उसे मानसिक, भावनात्मक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक व चारित्रिक संकट और सहज कामेच्छा पूर्ति में बाधा, असुरक्षा, अपमान, उत्पीड़न व शोषण और असंतुष्टि आदि से जूझना पड़ रहा हो, या इसकी प्रबल आशंका हो । कोई भी कुंवारा व्यक्ति उससे विवाह करने को तैयार न हो (जो कि एक अकाट्य सामाजिक तथ्य है)। और मायके/ससुराल में उस विधवा का कोई सहारा न हो ।

■ **परिस्थिति–4 :** किसी विधवा के छोटे-छोटे बच्चे हों । इन मासूमों के 'अनाथपन' और अपने 'विधवापन' का

दोहरा बोझ उठाना एक अबला के लिए कठिन, असह्य या अभिशाप बन जाए । न मायका, न ससुराल, न रिश्तेदार न समाज, कोई भी उसकी सहायता के लिए आगे न आ रहा हो ।

■ **परिस्थिति–5 :** किसी बड़े युद्ध, या महायुद्ध में पुरुष इतनी बड़ी संख्या में मारे जाएं कि अविवाहित या विधवा स्त्रियों की संख्या, जीवित/कुंवारे पुरुषों से बहुत अधिक हो जाए ।

■ **परिस्थिति–6 :** पुरुष में यौन-शक्ति व कामवासना इतनी अधिक हो कि वह आत्म-संयम व आत्म-नियंत्रण में असमर्थ हो जाए, एक पत्नी से वह संतुष्ट न हो पा रहा हो तथा यह असंतुष्टि इतनी प्रबल हो जाए कि धार्मिक संवेदनशीलता, नैतिकता या सामाजिक परंपरा तथा सर्वमान्य आचारसंहिता पर भारी पड़ जाए ।

देखना चाहिए कि उपरोक्त परिस्थितियों में 'ग़ैर-इस्लाम' (Non-Islam) और 'इस्लाम' के पास क्या-क्या विकल्प (Alternative) हैं । यह भी देखना चाहिए कि हर तत्संबंधित विकल्प स्त्री के प्रति अत्याचार व अभिशाप है या वरदान व सम्मान । साथ ही यह बात भी कि स्वयं पति, दाम्पत्य जीवन, परिवार और सामाजिक व्यवस्था के लिए कौन-सा विकल्प हानिकारक है और कौन-सा विकल्प लाभदायक ।

ग़ैर-इस्लामी (Non-Islamic/Anti-Islamic) विकल्प

उपरोक्त परिस्थितियों में ग़ैर-इस्लामी विकल्प (एकपत्नीत्व, Monogyny) के प्रभाव व परिणाम निम्नलिखित हैं–

1. पति, पत्नी से, परिवार से और क़ानून-व्यवस्था से छिपा कर दूसरा विवाह कर ले । दूसरे शब्दों में, वह सब को धोखा देता रहे, दूसरी पत्नी पर अपने समय और धन के ख़र्च को छिपाने के लिए पहली पत्नी तथा अन्य परिवारजनों से हमेशा झूठ बोलता रहे । इतने सारे बखेड़े पालने की क्षमता न हो तो बेचारी, बेक़सूर पहली पत्नी से 'छुटकारा' पाने का कोई अनैतिक या अपराधपूर्ण रास्ता इख़्तियार कर ले ।

2. किसी स्थाई रोग-वश पत्नी से शारीरिक संबंध स्थापित न किया जा सकता हो तो चोरी-छिपे पराई स्त्रियों से अनैतिक संबंध स्थापित किया जाता है । ऐसी स्त्रियों की संख्या कितनी भी हों सकती है । अनाचार व व्यभिचार की इस परिधि की कोई सीमा नहीं । कितनी स्त्रियों का शील भ्रष्ट होता है, कोई चिंता नहीं । कितने यौन-दुराचार होते हैं, ससहमति यौनाचार (Consensual sex) के तर्क पर क़ानून व प्रशासन की ओर से कोई पकड़ नहीं । मौजूद पत्नी का कितना अधिकार-हनन होता है, कोई फ़िक्र नहीं । पुरुष, पत्नी तो 'एक' ही रखे और रखैलें (Concubines) कई रखे, कोई हर्ज नहीं । नगर-नगर वैश्यालय खुले हुए हों जहां नारी-शील ख़रीदा-बेचा जा रहा हो, ठीक है । पति जहां चाहे मुंह मारे, समाज में जितनी चाहे गन्दगी फैलाए, जितनी भी युवतियों व नारियों के शील के साथ खिलवाड़ करे, सब ठीक है लेकिन वैध व जायज़ रूप में दूसरी पत्नी घर ले आए तो 'नारी पर अत्याचार' का दोषी व आरोपी ठहरे । या पहली (बेक़सूर) पत्नी से 'किसी और' विधि से, पहले छुटकारा पा ले, तभी दूसरा विवाह करे । यह छुटकारा तलाक़ द्वारा भी हो सकता है, और अदालती तलाक़ के लंबे बखेड़े में उलझना मुश्किल हो, तो हत्या करके या हत्या कराके भी या रसोई में आग लग (लगा) कर भी ।

3. पहले 'सती' का विकल्प था । अब क़ानून ने विधवा को इस 'विकल्प' से 'वंचित' कर दिया है लेकिन क़ानून विधवा को कोई बेहतर प्रभावकारी, ठोस विकल्प प्रदान करने से असमर्थ है अत: उसने यह काम परिवार तथा समाज के लिए छोड़ दिया है । मायके के परिवार में सामान्यतया विधवा (बेटी, बहन) की वापसी की परंपरा नहीं है । अगर वह वापस गयी भी तो चूड़ियां तोड़कर, मांग सूनी करके, शृंगार से वंचित रहकर, सफ़ेद साड़ी पहनकर, अभागिन, अबला बनकर, ननदों व भावजों के ताने-कोसने सहकर, बेबसी, लाचारी की अवस्था में भाई-भावज की सेविका, दासी बनकर रहने के लिए । समाज न तो उसे दूसरा विवाह करने की अनुमति देता न किसी पुरुष को अनुमति देता है कि वह विवाहित रहते हुए उस दुखियारी को पत्नी बनाकर उसकी सारी समस्याओं का समाधान कर दे (और क़ानून भी उसे इसकी इजाज़त नहीं देता)। इसलिए समाज या तो उस विधवा को धक्के खाने और नाना प्रकार को शोषण व उत्पीड़न-अपमान झेलने के लिए छोड़ देगा, या कुछ दया आ ही गयी तो किसी विधवाश्रम में डाल आएगा । यह अलग बात है कि कुछ विधवाश्रम बेचारी विधवाओं का सुनियोजित देहव्यापार भी करते हों ।

4. लगभग वही विकल्प जो परिस्थिति 3 में व्यक्त किये गये । ज़्यादा से ज़्यादा, अनाथों को अनाथालयों के

सुपुर्द कर देने का प्रावधान, जहां यदि नैतिकता या ईशपरायणता के गुण प्रबल व सक्रिय न हों तो अनाथों पर अत्याचार और उनका बहुआयामी शोषण । विधवा मां अलग, उसके कलेजे के टुकड़े अलग ।

5. 'परिस्थिति-5' के अंतर्गत, इतिहास साक्षी है कि स्त्रियां और विधवाएं जन-सम्पत्ति (Public Property) बन जाने पर विवश हुईं । नारी-जाति के इस जघन्य यौन-शोषण के अतिरिक्त समाज और व्यवस्था के सामने कोई विकल्प न रहा ।

6. वही विकल्प, जो 2 में उल्लिखित है ।

इस्लामी विकल्प

उपरोक्त परिस्थितियों में इस्लाम ने 'बहुपत्नीत्व' का विकल्प दिया । इसमें नारी के यौन-संरक्षण व सुरक्षा (Sexual security) का निश्चित होना निहित है । फिर उसकी भावनात्मक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक (Psychological), शारीरिक, भौतिक, आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा को निश्चित किया गया है, यह उस पर इस्लाम का उपकार व एहसान है, इसे अत्याचार व शोषण और अपमान वही व्यक्ति कह सकता है जिसका विवेक मुर्दा हो चुका है । इससे आगे, बहुपत्नीत्व का यह इस्लामी प्रावधान स्वयं पति के शील, सज्जनता, सदाचरण तथा नैतिक अस्तित्व के लिए एक शुभ तंत्र है । विधवाओं की समस्या से लेकर अनाथों की समस्या तक, इससे स्वत: हल होती रहती है और समाज का नैतिक ताना-बाना बिखरने नहीं पाता ।

किसी बड़े युद्ध या 'महायुद्ध' में जब लाखों लोग (अधिकतर पुरुष) मारे जाएं और लाखों स्त्रियां विधवा हो जाएं तो ग़ैर-इस्लामी सभ्यता का इतिहास बताता है कि ऐसी स्त्रियों में से अधिकतर को जन-सम्पत्ति (Public Property) बनाकर रख देने के सिवाय, समाज व सामूहिक तंत्र के पास और कोई विकल्प नहीं रह जाता । इस्लाम ऐसी असाधारण/आपात परिस्थिति में बहुपत्नीत्व का विकल्प खुला रखकर बेसहारा विधवाओं को सामाजिक, आर्थिक एवं मानसिक उत्पीड़न तथा यौन-शोषण से बचा लेता है ।

बहुपत्नीत्व और जनसंख्या वृद्धि

किसी भी समाज की तरह मुस्लिम समाज की भी सामान्य व्यावहारिक व वास्तविक स्थिति इस बात का खंडन करती है कि 'हर मुसलमान चार शादियां करता है'। इससे बड़ी मूर्खता की बात और क्या होगी कि, (1) मुस्लिम समाज में स्त्रियों की संख्या पुरुषों की संख्या से 'चार गुना' ज़्यादा है, और (2) हर व्यक्ति चार-चार पत्नियों की व्यक्तिगत आवश्यकताएं व मांगें तथा उनके भरण-पोषण की ज़िम्मेदारियां, सामान्यत: पूरी करने की अवस्था में रहता है ।

यह बात भी एक 'सफ़ेद झूठ' है कि मुस्लिम व ग़ैर-मुस्लिम बच्चों की जनसंख्या-वृद्धि का अनुपात 4:1 है । जनसांख्यिकी (Demography) के आंकड़े बताते हैं कि गत साठ वर्षों में मुस्लिम जनसंख्या देश की कुल जनसंख्या का 10-13 प्रतिशत रही है । उधर पिछले लगभग 30 वर्षों से कुछ 'विशेष' मानसिकता के साथ 'समाजशास्त्री' बार-बार यह आशय प्रस्तुत कर-करके देशवासियों को भयभीत करते रहे हैं कि 'बस अगले बीस-तीस वर्षों में ही मुस्लिम जनसंख्या, ग़ैर-मुस्लिमों के बराबर हो जाएगी और मुसलमान फिर से सत्ता हथिया लेंगे ।'

कोइ भी समझदार व्यक्ति यह बात मानने के लिए तैयार न होगा कि 25 मुसलमान 100 स्त्रियों से शादी करके 500 संतान पैदा करेंगे । इसलिए हम पांच हमारे 25 का आक्षेप मुसलमानों पर किसी तरह भी उचित न होगा । एक मुस्लिम पुरुष 4 स्त्रियों से शादी की हो, ऐसी कोई भी मिसाल नहीं मिल सकती । यह बड़ी हास्यास्पद और छिछोरी बात है कि भारत के सारे मुसलमानों से 20-20 संतान होने की संभावना हो और इस असंभव कल्पना के आधार पर आंकड़े गढ़े जाएं और इन काल्पनिक आंकड़ों के द्वारा देशवासियों को मुस्लिम बहुसंख्या से डराया जाए ।

ANSARI STONE KOTA

Deals in :
ALL TYPES OF SAND STONE
(RED, BLUE, BROWN ETC.)

MACHINE CUT & HAND CUT SAND STONE




KOTA STONE

Address :
RAM NAGAR NEW STONE MANDI
KOTA RAJASTHAN

Mobile : 9829039190, WhatsApp : 9660853702

वैज्ञानिक दृष्टिकोण बनाम परोक्ष का इन्कार

■ डॉक्टर मुहम्मद रफ़अत

आधुनिक युग क्या है ? इस सवाल पर विभिन्न पहलुओं से विचार किया जा सकता है कि एक दृष्टिकोण से आधुनिक युग टेक्नोलॉजी के असामान्य विकास का दौर है और यही इस युग की विशेषता है । कुछ विश्लेषण करने वाले टेक्नोलॉजी की इस उन्नति के कुछ महत्वपूर्ण अवयवों को भी रेखांकित करते हैं । जैसे इलेक्ट्रोनिक टेक्नोलॉजी, संचार की तकनीक, स्पेस टेक्नोलॉजी, न्यूक्लियर टेक्नोलॉजी, यातायात के माध्यम, कंप्यूटर, इंटरनेट और आधुनिक हथियार। सवाल यह पैदा होता है कि क्या टेक्नोलॉजी की यह असामान्य उन्नति अपने साथ कोई चुनौती भी लाई है ? इस सवाल का जवाब सकारात्मक है । टेक्नोलॉजी की इस उन्नति के साथ तीन बड़े चैलेंज सामने आये हैं–

- टेक्नोलॉजी के आवश्यकता से अधिक उपयोग का चुनौती (जिसे टेक्नोलॉजी का नशा या लत Addiction कहा जा सकता है)।
- टेक्नोलॉजी के आधार पर शक्तिशाली और कमज़ोर के बीच बढ़ती हुई खाई की चुनौती ।
- टेक्नोलॉजी की दिनोंदिन उन्नति की वजह से प्राकृतिक व्यवस्था के संतुलन में बिगाड़ और प्रदूषण की समस्या ।

आधुनिक युग क्या है ? इस सवाल के एक जवाब का उल्लेख किया गया, वह यह कि आधुनिक युग टेक्नोलॉजी का युग है । इस सवाल का एक और जवाब यह है कि आधुनिक युग ग्लोबलाइज़ेशन का दौर है । इस दौर में दुनिया सिकुड़ कर एक बस्ती बन गयी है । देशों और राष्ट्रों के बीच सीमाओं की मौजूदगी के बावजूद एक दूसरे से उनका संपर्क इतना बढ़ चुका है कि कोई देश विश्व परिवर्तनों से अलग-थलग नहीं रह सकता । ग्लोबलाइज़ेशन के इस प्रदर्शन ने भी नये चैलेंज पैदा किये हैं । उनमें तीन चैलेंज मुख्य हैं : पहला चुनौती यह है कि दुनिया बहुत समय तक अलग-अलग सियासी यूनिटों में बंट कर नहीं रह सकती । इसको एक ग्लोबल राज्य बनना होगा । उस ग्लोबल राज्य के वैचारिक मूल्य क्या होंगे ? यह एक ऐसा सवाल है जिसका हल होना चाहिए । दूसरी चुनौती यह है कि जब तक यह ग्लोबल राज्य अस्तित्व में न आए उस समय तक एक साफ़ सुथरे न्याय पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय क़ानून की आवश्यकता है । जो देशों को एक-दूसरे के अधिकारों का सम्मान सिखाए । यह क़ानून कैसे तैयार किया जाए और इसको लागू करने वाली शक्ति कहां से आएगी ? तीसरी

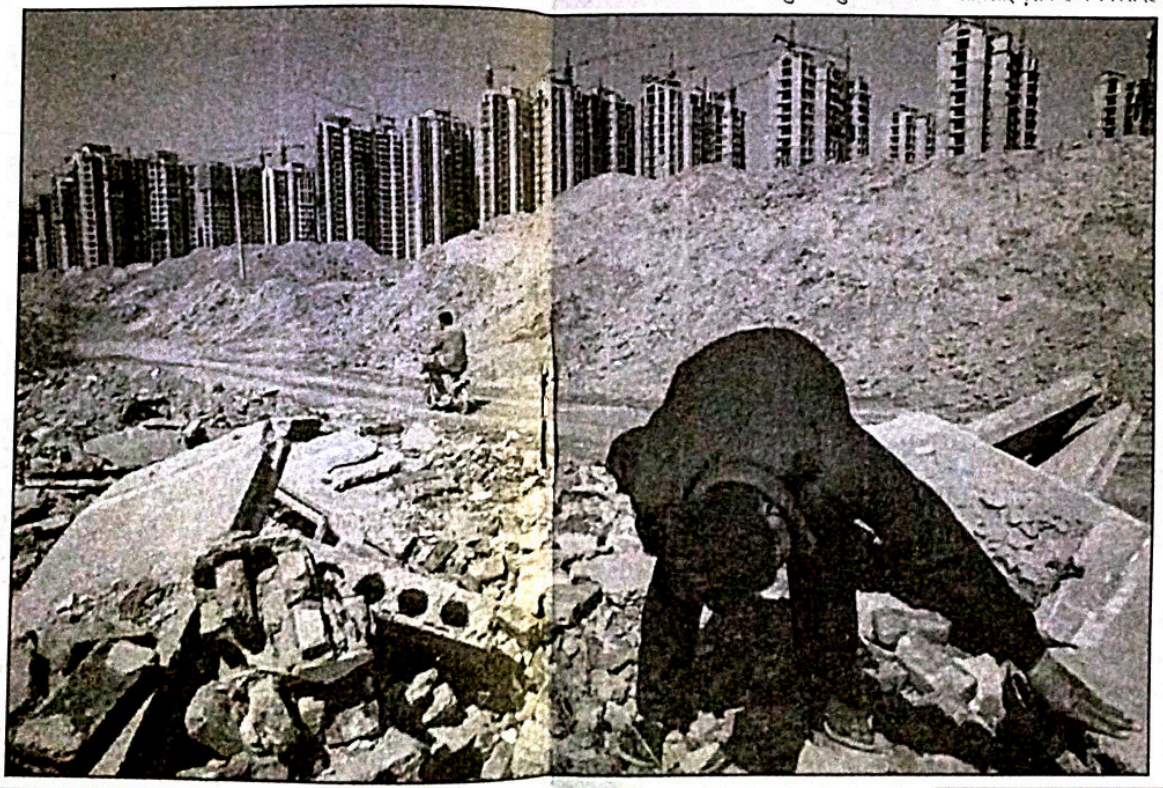

चुनौती यह है कि प्राकृतिक माहौल के संतुलन को कैसे बहाल किया जाए और संतुलन की बहाली के इस मुश्किल काम में सभी राष्ट्रों और देशों का सहयोग कैसे प्राप्त किया जाए ?

आधुनिक युग का वास्तविक स्वरूप

आधुनिक युग क्या है ? इस सवाल के दो प्रचलित जवाब आपके सामने आए । एक जवाब यह है कि आधुनिक युग की मुख्य विशेषता टेक्नोलॉजी का असामान्य विकास है । दूसरा जवाब यह है कि आधुनिक युग की आत्मा ग्लोबलाइज़ेशन है । निस्संदेह ये दोनों जवाब आंशिक तौर पर सही हैं । यानी यह आधुनिक युग के दिखायी पड़ने वाले पहलुओं में से दो बहुत स्पष्ट पहलुओं को रेखांकित करते हैं, लेकिन आधुनिक युग की वास्तविकता खोजने के लिए हमें मात्र उसके दिखायी पड़ने वाले पहलुओं का विश्लेषण नहीं करना चाहिए, बल्कि उन विचारधाराओं का गहरा जायज़ा लेना चाहिए जिनसे आधुनिक युग की रचना हुई है । जीवन, सभ्यता और संस्कृति का बाहरी ढांचा निस्संदेह महत्व रखता है, लेकिन इस बाहरी ढांचे की हैसियत केवल कवच की है, उस कवच के अंदर जो आत्मा मौजूद है वह विचारधाराओं की आत्मा है । अत: आधुनिक युग को समझने के लिए हमें यह जानना चाहिए कि वे मान्यताएं कौन-सी हैं जिनकी बुनियाद पर आधुनिक युग की सभ्यता-पश्चिमी सभ्यता-की रचना हुई है ।

पश्चिमी सभ्यता की विचारधारा और दृष्टिकोण बहुत से हैं । दर्शन में हियूमनिज़्म और अस्तित्ववाद (Existentialism) सामूहिकतावाद में सेकुलरिज़्म और लोकतंत्र, नैतिकता में उपयोगितावाद (Utilitarianism) और सापेक्षवाद (Relativism), अर्थशास्त्र में स्वतंत्र प्रतियोगिता (Free Competition), संसार के प्रति मान्यता में भौतिकवाद और भाग्य एवं संयोग (Chance) और सजीव जगत में क्रमागत उन्नति (Evolution) उस सभ्यता के मुख्य सिद्धांत हैं । इन सिद्धांतों में परस्पर बहुत से विरोधाभास हैं, लेकिन इन सब के बीच एक संयुक्त रुझान मौजूद है । इस रुझान को सादा शब्दों में परोक्ष का इन्कार कहा जा सकता है ।

परोक्ष के इन्कार के रुझान के अनुपालन में जो दृष्टिकोण बनता है, उसे आजकल वैज्ञानिक दृष्टिकोण कहा जाता है । इस दृष्टिकोण के मुताबिक़ वास्तविकता केवल वह है जिसे मनुष्य अपनी ज्ञानेंद्रियों की मदद से अपनी पकड़ में ले सके, जो देखी जा सके, सुनी जा सके और जिसकी पैमाइश हो सके । अगर कोई चीज़ इस तरह की

नहीं है तो फिर वह वास्तविकता नहीं है, बल्कि मात्र भ्रम है । वैज्ञानिक दृष्टिकोण के मुताबिक़ जानकारियों की प्राप्ति के लिए एक वैज्ञानिक प्रणाली भी बनायी गयी है । वह प्रणाली यह है कि मनुष्य अपनी ज्ञानेंद्रियों की मदद से जानकारी इकट्ठा करे और फिर अपनी तर्क शक्तियों से काम लेकर उन जानकारियों को व्यवस्थित करे । इस प्रणाली के अलावा किसी और तरीक़े को मान्यता नहीं दी जाती । अत: आधुनिक युग क्या है ? इस सवाल का सही जवाब यह है कि आधुनिक युग सामूहिक जीवन के उस रूप का नाम है जो परोक्ष के इन्कार पर आधारित है ।

यह एक पहलू से नकारात्मक जवाब है । अगर इस सवाल का सकारात्मक जवाब दिया जाए तो वह यह होगा कि आधुनिक युग वैज्ञानिक दृष्टिकोण के मुताबिक़ मानव जीवन की व्यवस्था का नाम है ।

स्पष्ट है कि परोक्ष के इन्कार का यह रुझान जो आधुनिक युग की आधारशीला है । ईश्वर के दूतों द्वारा दी गयी शिक्षाओं के लिए एक चुनौती है, इसलिए कि ईशदूतों की शिक्षा की बुनियाद ही यह है कि परोक्ष पर विश्वास किया जाए । ईश्वर के अंतिम दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने जो शिक्षाएं दी हैं, इनमें हमें आधुनिक युग की इस चुनौती का जवाब मिलता है ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर ईमान लाने वालों की यह ज़िम्मेदारी है कि इस चुनौती को स्वीकार करें और मनुष्यों को इस प्रचलित गुमराही से छुटकारा दिलाएं । परोक्ष के इन्कार के इस ग़लत रुझान का मुक़ाबला बुद्धि और विवेक के स्तर पर भी किया जाना चाहिए और मनोवैज्ञानिक व भावनात्मक स्तर पर भी, लेकिन इससे पहले यह देखना ज़रूरी है कि परोक्ष से आशय क्या है ?

परोक्ष का अर्थ

कुरआन में मार्गदर्शन पाने के लिए 6 शर्तों का उल्लेख किया गया है, जिनमें से एक है, परोक्ष पर ईमान । परोक्ष से आशय वे वास्तविकताएं हैं, जो मनुष्य की ज्ञानेंद्रियों से छिपी हैं और कभी प्रत्यक्ष रूप से आम मनुष्यों के अनुभव में नहीं आतीं ईश्वर का अस्तित्व और गुण, फ़रिश्ता, ईश्वरीय प्रकाशना, स्वर्ग, नरक आदि । इन वास्तविकताओं को बिना देखे मानना और इस भरोसे पर मानना कि नबी उनकी ख़बर दे रहा है, परोक्ष पर ईमान है । जो आदमी उन महसूस न होने वाली वास्तविकताओं को मानने के लिए तैयार हो केवल वही कुरआन के मार्गदर्शन से फ़ायदा उठा सकता है । रहा वे आदमी जो मानने के लिए देखने और चखने और सूंघने की शर्त लगाए और जो कहे कि मैं किसी ऐसी चीज़ को नहीं मान सकता जो नापी और तौली न जा सकती हो तो वह इस किताब से मार्गदर्शन नहीं पा सकता ।

परोक्ष के इन्कार का प्रमाण

परोक्ष का अर्थ जान लेने के बाद यह सवाल पैदा होता है कि जो लोग यह कहते हैं कि परोक्ष मौजूद नहीं है, उनके इस दावे के तर्क क्या हैं ?

इस सवाल का जायज़ा लेने से यह बात सामने आती है कि परोक्ष का इन्कार करने वालों के पास तर्क मौजूद नहीं है । बल्कि उनका कहना है कि जिन चीज़ों को परोक्ष कहा जाता है, (जैसे फ़रिश्ते, स्वर्ग, नरक आदि) वे चूंकि हमें नज़र नहीं आते, इसलिए मौजूद नहीं हैं ।

लेकिन यह तो कोई तर्क नहीं है, बल्कि एक दावा मात्र है जो ख़ुद तर्क का मुहताज है ? क्या यह वास्तविकता नहीं है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण के मानने वाले ख़ुद ऐसी बहुत-सी चीज़ों को मानते हैं, जो मनुष्य की ज्ञानेंद्रियों की पकड़ में नहीं आतीं, लेकिन उनके अस्तित्व को मान लिया जाता है, जैसे–

(1) वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समर्थक आमतौर पर इस बात को मानते हैं कि ब्रह्मांड के विभिन्न पिंडों के बीच आकर्षण और अपने भीतर समा लेने जैसी ताक़तें मौजूद हैं, जो इन पिंडों को परस्पर जोड़े रखती हैं और ब्रह्मांड में होने वाले परिवर्तनों का कारण हैं, लेकिन इन ताक़तों का प्रत्यक्ष अनुभव किसी मनुष्य ने नहीं किया । मात्र उनके प्रभावों को देखा है ।

(2) सब जानते हैं कि ब्रह्मांड में कुछ चीज़ें सजीव हैं और कुछ निर्जीव, लेकिन जान या जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव किसी ने नहीं किया । जब जान निकल जाती है तो एक सजीव मर जाता है और फिर उसके अवशेष की विशेषता वही होती हैं, जो आम निर्जीव चीज़ की हुआ करती हैं । जिस तरह हम पानी की बोतल से पानी निकलते हुए देखते हैं, इसी तरह किसी सजीव के मरते समय उसके

शरीर से जान निकलते हुए नहीं देखते, लेकिन इस अनुभवहीनता के बावजूद न कोई जान का इन्कार कर सकता है न जान के निकलने का ।

(3) वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समर्थक मानते हैं कि ब्रह्मांड नियमों के अधीन है, लेकिन जैसा कि सब जानते हैं प्रकृति के नियम कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो अनुभव योग्य हो । केवल नियमों के प्रदर्शन का अनुभव किया जा सकता है ।

इन मिसालों से मालूम होता है कि परोक्ष के इन्कार की थ्योरी वास्तव में बहुत कमज़ोर है और इसके पक्ष में कोई दलील मौजूद नहीं है ।

मनुष्यों का मौत पर क़ाबू न पा सकना परोक्ष जगत की मौजूदगी का स्पष्ट प्रमाण है ।

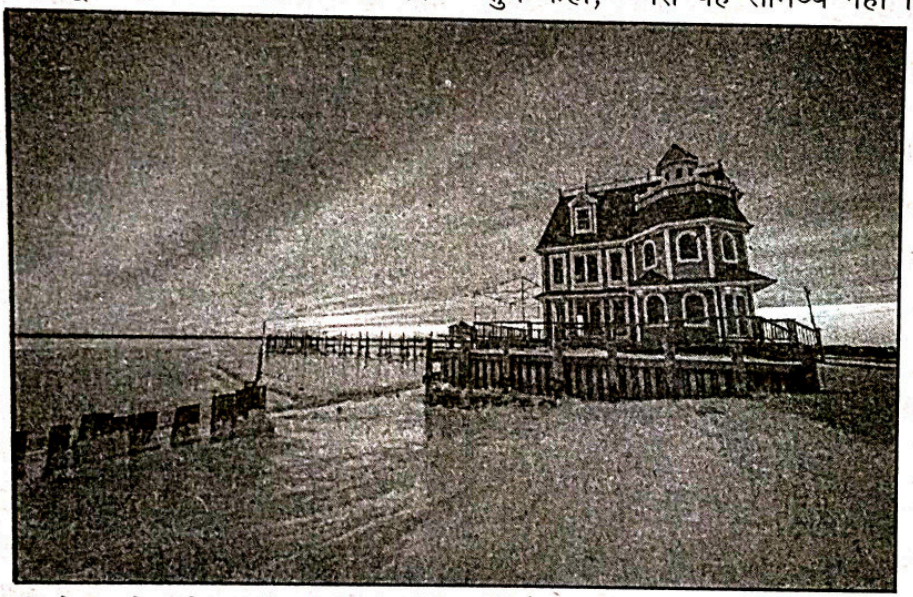

और तुमने अपना भाग यह बना लिया है कि (इसको) झुठलाते रहो ? फिर जब प्राण कंठ को पहुंच जाता है, और तुम उस समय देख रहे होते हो और हम तुम से अधिक उसके निकट होते हैं, किन्तु तुम देख नहीं पाते, फिर यदि तुम किसी के आदेश के अधीन नहीं हो तो क्यों नहीं उस आत्मा को वापस लौटा लेते, यदि तुम सच्चे हो ?

(क़ुरआन, 56:82-87)

नबियों पर विश्वास

मनुष्य हमेशा परोक्ष के बारे में जानने का इच्छुक रहा है । वह जानना चाहता है कि ब्रह्मांड का रचयिता कौन है, उसके गुण क्या हैं और उसका अपने बंदों से क्या संबंध है? फ़रिश्ते कौन हैं और उनकी विशेषता क्या है । परलोक में मनुष्य को किन हालात से सामना होने वाला है ? इन सवालों का और इस तरह के अन्य सवालों का जवाब हमें नबियों की शिक्षाओं में मिलता है, लेकिन नबियों की शिक्षाओं पर विचार करने से पहले एक और बुनियादी सवाल पैदा होता है कि मनुष्य नबियों की बातें क्यों मान ले ?

क़ुरआन मजीद ने इस सवाल का जवाब यह दिया है कि नबी सच्चे और ईमानदार मनुष्य होते हैं । वे झूठ नहीं बोलते, इसलिए उनकी दूसरी बातों की तरह नुबूवत का उनका दावा भी सच्चा है । उनकी सच्चाई पर नुबूवत से पहले का उनका पूरा जीवन गवाह होता है ।

जब तुम हमारी स्पष्ट आयतें उन्हें पढ़कर सुनाते हो तो जो लोग (मृत्यु के बाद) हमसे मिलने की आशा नहीं रखते वे कहते हैं, "इस क़ुरआन के अतिरिक्त कोई दूसरा क़ुरआन लाकर सुनाओ, या इसी (के अर्थों) में परिवर्तन कर दो ।" तुम कहो, "मेरा यह सामर्थ्य नहीं कि अपने मन से इसमें परिवर्तन कर दूं । मैं तो बस उसी आदेश के अधीन हूं, जो मुझ पर प्रकाशना किया जाता है । मैं डरता हूं कि यदि अपने पालनहार के आदेश की अवज्ञा करूं तो यातना का एक बहुत बड़ा दिन आने वाला है ।" और तुम कहो, "यदि अल्लाह चाहता तो मैं क़ुरआन तुम्हें सुनाता ही नहीं और तुम्हें इससे सचेत ही न करता (मगर उसका चाहना यही हुआ कि तुममें उसकी वाणी अवतरित हो और तुम्हें विश्व की क़ौमों के मार्गदर्शन का माध्यम बनाए)। देखो ! यह सत्य है कि मैं इस मामले से पहले तुम लोगों के अन्दर एक पूरी आयु व्यतीत कर चुका हूं । क्या तुम समझते-बूझते नहीं ? फिर बतलाओ उससे बढ़कर अत्याचारी कौन हो सकता है जो अपने मन से झूठ बात बनाकर अल्लाह पर मिथ्यारोपण करे और उस व्यक्ति से जो अल्लाह की सच्ची आयतें झुठलाएं? निस्संदेह अपराध करने वाले कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते ।

(क़ुरआन, 10:15-17)

एक आदमी ये बातें सुनकर कह सकता है कि संभव

है एक आदमी सच्चा और अमानतदार हो, लेकिन उसकी बुद्धि प्रभावित हो गयी हो और वह नासमझी की बातें करने लगा हो । क़ुरआन मजीद ने लोगों को इस संभावना पर भी विचार करने की दावत दी है और पूरी शक्ति के साथ यह कहा है कि नुबूवत का दावा करने वाले मुहम्मद (सल्ल०) बहुत बुद्धिमान और समझदार व्यक्ति हैं । उनके अंदर नासमझी का कोई अंश तक नहीं है । तुम इस पहलू से उनके बारे में ख़ूब छानबीन कर सकते हो । तुम उनको एक इंतिहाई समझदार व्यक्तित्व पाओगे ।

कह दो कि मैं तुम्हें एक ही बात का उपदेश देता हूं, तुम अल्लाह के नाम पर दो-दो और एक-एक होकर खड़े हो जाओ, फिर सोच-विचार करो । तुम्हारे साथी (पैग़म्बर) को कोई उन्माद नहीं है । वह तो एक कठोर यातना के आने से पहले बस तुम्हें सचेत करने वाला है ।

(क़ुरआन, 34:46)

यानी पक्षपात से मुक्त होकर विचार करो । हर आदमी अलग-अलग भी नेक नीयती के साथ सोचे और दो दो-चार चार आदमी सर जोड़कर भी बेलाग तरीक़े से एक-दूसरे के साथ बहस करके खोज करें कि आख़िर वह क्या बात है, जिसके आधार पर आज तुम इस आदमी को मजनूं ठहरा रहे हो जिसे कल तक तुम अपने बीच निहायत समझदार आदमी समझते थे ।

आख़िर नुबूवत से कुछ ही पहले की तो घटना थी कि काबा के निर्माण के बाद हज्रे असवद (काला पत्थर) लगाने के विवाद पर जब क़ुरैश के क़बीले आपस में लड़ पड़े थे तो तुम ही लोगों ने सर्वसम्मति से मुहम्मद को फ़ैसला करने वाला स्वीकार किया था और उन्होंने ऐसे तरीक़े से उस झगड़े को चुकाया था, जिस पर तुम सब संतुष्ट हो गये थे ।

जिस आदमी की बुद्धि और विवेक का यह अनुभव तुम्हारी सारी क़ौम को हो चुका है, अब क्या ऐसी बात हो गयी कि तुम उसे मजनूं कहने लगे ? हठधर्मी और ज़िद की बात तो दूसरी है मगर क्या वाक़ई तुम अपने दिलों में भी वही कुछ समझते हो जो अपने मुंह से कहते हो ?

यह बात हमारे सामने आ चुकी है कि नबियों का सच्चा और अमानतदार होना और बुद्धि और विवेक में पूर्ण होना शक से परे है । अत: परोक्ष के बारे में उनकी बयान की ख़बरों पर शक करने की कोई वजह बाक़ी नहीं रहती । अलबत्ता एक आदमी यह कह सकता है कि अल्लाह के ये नेक बंदे शुरू में निस्संदेह बेदाग़ चरित्र के मालिक थे, लेकिन हो सकता है बाद में वे अपने किसी स्वार्थ के आधार पर कुछ बातें गढ़ कर ले आए हों और उन्हें सत्य के तौर पर पेश करने लगे हों ।

क़ुरआन मजीद हमें इस संभावना पर भी विचार करने की दावत देता है । वह कहता है कि ख़ूब बारीकबीनी के साथ नबियों के चरित्र का जायज़ा लो । तुम किसी ऐसे स्वार्थ को रेखांकित नहीं कर सकते जिसके लिए नबी काम कर रहे हों । वे मनुष्यों से किसी भी क़िस्म के बदले की आशा नहीं रखते–

"और हमने आद (की क़ौम) की ओर से उसके भाई-बंधुओं में से हूद को भेजा । हूद ने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की उपासना करो । उसके सिवा तुम्हारा कोई उपास्य नहीं । विश्वास करो, तुम इसके अतिरिक्त कुछ नहीं हो कि (सत्य के विरुद्ध) मिथ्यारोपण कर रहे हो । ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मैं इस बात के लिए तुम से कोई बदला नहीं मांगता, मेरा बदला तो उसी पर है जिसने मुझे पैदा किया । फिर क्या तुम (इतनी साफ़ बात भी) नहीं समझते ?"

(क़ुरआन, 11:50-51)

(ऐ पैग़म्बर !) क्या (वे समझते हैं) तुम उनसे धन-दौलत के इच्छुक हो ? तुम्हारे लिए तो तुम्हारे पालनहार का दिया धन ही उत्तम है (तो तुम उनसे क्यों धन के याचक हो सकते हो ?) वही (अल्लाह) सबसे उत्तम आजीविका देने वाला है । निस्संदेह ! निश्चय ही तुम उन्हें (सफलता एवं कल्याण के) सीधे मार्ग की ओर बुला रहे हो ।

(क़ुरआन, 23:72-73)

इस तरह क़ुरआन अपनी हुज्जत पूरी करता है । जो भले मनुष्य सच्चे और अमानतदार भी हों, बुद्धि और विवेक में भी पूर्ण हों और अपना कोई स्वार्थ भी न रखते हों, उनकी बातों पर यक़ीन न करने की आख़िर क्या वजह हो सकती है ? अत: नबी परोक्ष के बारे में जो कुछ बताते हैं इस पर ईमान

लाना ही समझदारी है ।

उपर्युक्त प्रमाणों के अलावा यह बात भी विचार करने योग्य है कि अल्लाह तआला नबियों को परोक्ष की कुछ सच्चाइयों का अनुभव भी करा देता था ताकि वे पूरे विश्वास के साथ लोगों को परोक्ष की बातों के बारे में बता सकें और उनसे ईमान लाने की मांग कर सकें । अत: कुरआन इस मौक़े का उल्लेख करता है, जब नबी (सल्ल॰) ने जिबरील फ़रिश्ते को देखा और उन्होंने अल्लाह की वाणी आप तक पहुंचाई–

"उसके मुंह से जो कुछ निकलता है वही है जो उस पर प्रकाशना होता है । उसे ऐसे अत्यंत शक्तियों वाले ने सिखाया है जो शक्तिशाली है । वह (सामने आकर) सीधा हुआ । जबकि वह (आकाश के) ऊपरी किनारे पर था फिर वह निकट हुआ और उतर आया तो वह कमान के बराबर या उससे भी निकट रह गया । तब अल्लाह ने अपने बन्दे को जो चाहा प्रकाशना की । (रसूल ने) जो कुछ (आंखों से) देखा (उसे उसके) दिल ने ग़लत नहीं समझा । क्या उसने जो कुछ देखा तुम उस पर उससे झगड़ रहे हो ? और रसूल ने उसे दोबारा सिदरतुल-मुन्तहा (उच्चतम सीमा की बेरी) के पास देखा जिसके पास जन्नतुल-मावा (अर्थात ठिकाने वाली जन्नत) है। जब बेरी पर जो कुछ छाता है छा रहा था । न दृष्टि भटकी और न हद से बढ़ी । निस्संदेह उसने अपने पालनहार की महान निशानियां देखीं ।

(कुरआन, 53:4-18)

परोक्ष पर ईमान का आह्वान

आधुनिक युग की चुनौती का स्वरूप समझ लेने के बाद मुस्लिम समुदाय की यह ज़िम्मेदारी है कि वह सारे मनुष्यों को विशेष रूप से पश्चिम वालों को परोक्ष पर ईमान लाने की दावत दे । यह सच्चाई है कि परोक्ष पर ईमान से जो चीज़ पश्चिम वालों को रोकती है वह कोई बौद्धिक प्रमाण नहीं है बल्कि धर्म का भय है । उनके नज़दीक धर्म नाम है अंधविश्वास का, बे-बुनियाद मान्यताओं का, बेतुकी रस्मों का, पुजारियों और पुरोहितों द्वारा शोषण का और अन्यायपूर्ण क़ानूनों का । अगर ऐसे धर्म से वे न भागें तो क्या करें ।

ऐसे हालात में पश्चिम वालों को यह बताया जाना चाहिए कि इस्लाम इस तरह का धर्म नहीं है, जिससे वे भयभीत हैं । उनसे जिन बातों पर ईमान लाने की मांग की गयी है, वह बहुत तर्कसंगत हैं और मानव स्वभाव को अपील करती हैं–

"अल्लाह पर ईमान लाओ, अल्लाह के संदेष्टा पर ईमान लाओ और उस किताब पर ईमान लाओ जो उसने अपने संदेष्टा पर अवतरित की है तथा उन किताबों पर जो इससे पहले (दूसरे संदेशवाहकों पर) अवतरित की थीं । और (देखो !) जिस किसी ने अल्लाह से इन्कार किया और उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके संदेष्टाओं और परलोक के दिन पर आस्था न रखी तो वह भटक कर सीधे रास्ते से बहुत दूर जा पड़ा ।" (कुरआन, 4:136)

इस्लाम में किसी ऐसे धर्म के इज़ारादार वर्ग (Clergy) की कोई गुंजाइश नहीं, जो अल्लाह के मार्गदर्शन की मनमानी व्याख्या करने का अधिकार रखता हो ।

इनमें एक गिरोह उम्मियों का है जो किताब का तो ज्ञान रखते नहीं, बस अपनी निराधार आशाओं और अभिलाषाओं को लिए बैठे हैं और मात्र अटकलबाज़ियों पर चले जा रहे हैं ।

आख़िर में पश्चिम वालों को यह भी बताया जाना चाहिए कि नबी करीम (सल्ल॰) के आगमन का एक उद्देश्य यह है कि दुनिया से सभी व्यर्थ की रस्मों का और अन्यायपूर्ण क़ानूनों का अंत कर दिया जाए ।

(आज यह रहमत उन लोगों का हिस्सा है) जो विशिष्ट संदेष्टा (अर-रसूल) का अनुसरण करेंगे जो कि उम्मी नबी होगा और जिसके प्रकट होने की शुभ सूचना अपने यहां तौरात और इंजील में लिखी पाते हैं । वह उन्हें भलाई का आदेश देता है, बुराई से रोकता है, प्रिय वस्तुओं को वैध ठहराता है, उस बोझ से मुक्ति दिलाता है, जिसके नीचे दबे हुए हैं, उन फंदों से निकालता है, जिनमें बंधे हैं, अत: जो लोग उस पर ईमान लाए, उसके विरोधियों के लिए रोक हुए (सत्य मार्ग में) उसकी सहायता की और उस प्रकाश के पीछे हो लिए जो उसके साथ भेजा गया है, तो वही हैं जो सफलता पाने वाले हैं । (157)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–"अज़ान और इक़ामत के बीच की गयी दुआ कभी अस्वीकृति नहीं होती ।"

(तिरमिज़ी)

A WELL WISHER

ARARIA (BIHAR)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया– "हश्र के दिन मेरे बन्दों की पहचान उनके चेहरों की चमक से होगी और यह चमक वुज़ू की वजह से होगी । अतः मेरे बन्दों को अपने चेहरे की चमक बढ़ाने के लिए वुज़ू करने को कहो ।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

A WELL WISHER

ARARIA (BIHAR)

उत्तर आधुनिक युवा चेतना और 'रह गई दिशाएं इसी पार'

■ सविता रानी

जब हम उत्तर आधुनिकता की चर्चा करते हैं तो हमारे समक्ष प्रश्न उठता है कि उत्तर आधुनिकता क्या है ? उसे कैसे समझा जा सकता है ? क्या वह एक सामाजिक स्थिति है या फिर एक विचारधारा है ?

वर्ष 1950 से लेकर अब तक दर्शन, राजनीति, भूगोल, प्रबंधन, विधि-अध्यापन आदि में उत्तर आधुनिक व्यवहार की चर्चाएं होती रही । उत्तर आधुनिकता का आरंभ पश्चिम में वास्तुकला के क्षेत्र में हुआ और धीरे-धीरे पूरे विश्व, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसका विस्तार हुआ । उत्तर आधुनिकता बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में जन्मी एक ऐसी व्यापक अवधारणा है जिसकी कोई निश्चित परिभाषा संभव नहीं । विभिन्न लक्षणों के आधार पर ही इसे समझा जा सकता है–

उत्तर आधुनिकता ने युवाओं में कृत्रिम मांग को जन्म दिया । लोभ और अंध उपभोग युवाओं में पनपने लगा । प्रत्येक युवा असंतुष्ट उपभोक्ता बनकर नयी वस्तुओं को खोजने लगा । सेवा क्षेत्र के स्थान पर 'मुक्त उपभोग' और वस्तु उत्पादन का महत्व बढ़ा । उत्तर आधुनिकता ने युवाओं की इच्छाओं और विलासिताओं को आवश्यकता में बदला ।

उत्तर आधुनिकता विभिन्न अर्थ संदर्भों में प्रयुक्त होने वाला शब्द है जिसमें वर्तमान का परिदृश्य व मनोदशा शामिल है । पश्चिमी औपनिवेशिक गुलामी से मुक्ति के पश्चात जन्मी उत्तर आधुनिकता एक ऐसी विश्वव्यापी प्रक्रिया है जिसने सभी चिंतन परंपराओं, प्रतिमानों, अवधारणाओं, मूल्यों प्रविधियों पर प्रश्नचिन्ह लगा उन पर नये सिरे से विचार करना प्रारंभ किया ।

उत्तर आधुनिकता की प्रवृति सरल नहीं उसे समीकरण या सूत्र के रूप में बांधना बहुत कठिन है क्योंकि इसके अपने पक्ष-विपक्ष, नियम, क़ानून है । जहां एक ओर इसने ध्रुवीय दुनिया में शक्ति के रूप में विस्तार पाया वहीं दूसरी ओर वंचितों की लोकतांत्रिक उपलब्धि तथा सत्ता संघर्ष के रूप में भी दिखायी दी ।

इसका वैध-अवैध, नैतिकता से कोई संबंध नहीं, न इसकी कोई सीमा । यह अपने साथ कई अंतर्विरोधों, परिस्थितियों, असंतुलन, संकटों को साथ लेकर चला तथा इसने शोषण और केंद्रीयता आधारित व्यवस्था का विरोध किया । उत्तर आधुनिकता ने महाख्यानों को त्याग कर अनेकरूपता को प्रमुखता दी जिस प्रकार उत्तर संरचनावाद, उत्तर फ्रायडवाद और उत्तर मार्क्सवाद का विकास और विस्तार हुआ उसी प्रकार उत्तर आधुनिकता भी विकसित हुई ।

उत्तर आधुनिकता बहुलतावाद, बहुसंस्कृति, विकेंद्रीयता, युगल विपरीतता, स्थानियता को स्वीकारती तथा पूर्णता, नैतिकता, सम्रगता, पवित्रता, शुद्धता को नकारती एक अस्थिर विखंडनशील अवधारणा है । उत्तर आधुनिकता ने अर्द्धवृत्तांतों, मूल्यमीमांसा, केंद्रीकरण तथा संपूर्णता को ख़ारिज कर विशेषणहीन वृत्तांत का पक्ष लिया और सभी को समान माना । लोकप्रिय संस्कृति की ओर उन्मुखता, कंप्यूटर युग का स्वागत, उपभोक्तावाद, अर्थ की अनेकता, अनिश्चितता, विकेंद्रीयता, स्थानियता-क्षेत्रीयता पर बल, दलित-दमित वर्गों का अध्ययन, तकनीकी क्रान्ति, बुद्धिवाद, पराभौतिकतावाद, सांस्कृतिक अस्मिता की तलाश, सृजनात्मक स्वतंत्रता का आग्रह, यौन क्रान्ति तथा स्त्री मुक्ति आदि इसकी प्रमुख

विशेषताएं हैं ।

यह केंद्रीयता को खण्डित कर बहुकेन्द्रिता की उठान भरी अवस्था है जो सांस्कृतिक बहुलता, बहुवचनवाद तथा सभी प्रकार के वैविध्य का समर्थन करती है । सभी क्षेत्रों में पुरातन विचारधाराओं को समाप्त कर यह पीड़ित (दलित, स्त्री, आदिवासी) आदि वर्गों पर नये सिरे से विचार करता है । नव-तकनीकी क्रान्ति से निर्मित नव-संसार ने शक्ति के पुराने केन्द्र को ध्वस्त किया । प्रत्येक अवधारणा अनिश्चित हो गयी । सभी क्षेत्रों-राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, कला, साहित्य, समाज, संस्कृति, धर्म, दर्शन, मीडिया, फ़ैशन, विज्ञान, वैयक्तिक जीवन आदि उत्तर आधुनिकता के क्षेत्र बन गये ।

भूमंडलीकरण से जुड़े मुक्ति आन्दोलनों, सूचना-संचार क्रान्ति, तकनीक, मास-मीडिया, कंप्यूटर, विखंडनवाद ने जो नया वातावरण निर्मित हुआ उसे उत्तर आधुनिकतावाद कहा गया । यह स्थानियता पर बल दें, केंद्र से परिधि की ओर चला । यह विभिन्न सिद्धान्तों, प्रवृत्तियों, बौद्धिक अभिवृतियों, विचारधाराओं का समुच्चय है । बहुराष्ट्रीय पूंजीवादी तथा सूचना-संचार के वर्तमान युग का नाम उत्तर आधुनिकतावाद है जिसने लोक संस्कृति और लोक-कलाओं के स्वरूप को बुनियादी तौर पर परिवर्तित कर संस्कृति का औद्योगीकरण किया । आर्थिक समृद्धि, भौतिक विकास, मशीनीकरण ने उत्तर आधुनिकता का मार्ग खोला ।

उत्तर आधुनिकता के नाम पर वैयक्तिवाद, भूमंडलीकरण, नव-साम्राज्यवाद, अकेलापन, अवसाद, नव-संस्कृति, अमेरिकावादी का वर्चस्व, स्त्रीवादी सिद्धांत, मुक्त यौनवाद, गे-कल्चर सभी को स्वीकृति मिली । वर्तमान समाज, कला, साहित्य, दर्शन, राजनीति, यौन-चिंतन, फ़ैशन, मूल्य आदि में जो तीव्र परिवर्तन हुए उनके मूल में यही उत्तरदायी रहीं। विचारधारा और आंदोलन की सीमाओं से बाहर निकल उत्तर आधुनिकता एक व्यापक प्रवृति के रूप में उभरकर सामने आया ।

उत्तर आधुनिकतावाद परिवर्तित होते हुए लक्ष्णों को कहा गया है, "यह एक ऐसा वाद है जो एक स्थिति या दशा की तरह है जो लगातार अस्थिर है, चंचल है, विखंडनशील है ।" ज्ञान, अनुसंधान और विकास आदि सभी इसी के द्वारा परिचालित है । बहुराष्ट्रीय निगमों के उत्पाद के लिए उपभोक्ता बनाने में सूचना क्रान्ति का उपयोग हुआ । उत्तर आधुनिकता ने सभी कुछ को बाज़ार में बदलकर मानव संस्कृति पर क़ब्ज़ा कर परिवर्तन की क्रान्ति उत्पन्न की जिससे पूंजी बढ़ी, भूमंडलीकरण जागा । मीडिया बाज़ार का आधार बना, चारों ओर उपभोग के नारे लगने लगे, भिन्न प्रकार की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों का जन्म हुआ, सांप्रदायिक-धार्मिक ध्वनि रूपायित हुई, स्त्रीवाद की वकालत पर यौन-संबंधों के अस्वाभाविक रूप प्रकट हुए । यौनवाद-देहवाद को युवाओं के समक्ष परोसा गया ।

पूरे विश्व को वैश्विक गांव में बदल, परंपरा, संस्था, विवाह, परिवार शिक्षा आदि का अतिक्रमण, परंपराओं को क्षत-विक्षत कर सभी प्रकार की सीमाओं को तोड़ा । उत्तर आधुनिकता समय की विश्व दृष्टि, चुनौतियां-प्रश्नाकुलताओं ने युवा चेतना को व्याकुल किया । युवा चेतना भूमंडलीय, बाज़ारवाद, पूंजीवाद, उपभोक्तावाद, नवआर्थिक साम्राज्यवाद से घिरी दिखायी दी । धन और बुद्धि ने मिलकर युवाओं को विराट परिवर्तन चक्र के समुख खड़ा कर दिया । युवाओं ने पुरातन अवधारणाओं, विचारधाराओं, संस्थानों पर प्रश्नचिन्ह लगा उन्हें अप्रासंगिक क़रार दिया ।

युवाओं के व्यवहार के साथ मानसिकता भी परिवर्तित हुई । यौनवाद-पैसावाद-भोगवाद युवाओं के कल्चर बन गये । मानव संबंध टूटने लगे । ज़रूरतें, अपेक्षाएं, नये बाज़ार की खोज और उपभोग केंद्रीय तत्व बन गये । उपभोगतावादी जीवनशैली को समर्थित करने के लिए जिस अर्थ कोष की आवश्यकता होती है युवा उसके लिए प्रयत्नशील हुए । तकनीकी विकास, बाज़ारू प्रभुत्व और पूंजी की वैश्विक अभिवृद्धि आदि आज की व्यवस्था के ऐसे पहलू हैं जिसमें युवा सब कुछ पा लेना चाहते हैं, केवल मुनाफ़ा चाहते हैं, कुछ भी खोना नहीं चाहते ।

उत्तर आधुनिकता ने युवाओं में कृत्रिम मांग को जन्म दिया । लोभ और अंध उपभोग युवाओं में पनपने लगा । प्रत्येक युवा असंतुष्ट उपभोक्ता बनकर नयी वस्तुओं को खोजने लगा । सेवा क्षेत्र के स्थान पर 'मुक्त उपभोग' और वस्तु उत्पादन का महत्व बढ़ा । उत्तर आधुनिकता ने युवाओं की इच्छाओं और विलासिताओं को आवश्यकता में बदला ।

युवा अंतर्राष्ट्रीयता और विश्व नागरिकता की बात करने लगें । युवाओं में विभिन्नताएं और विश्व स्तरीय स्थानियता एक साथ उभरकर सामने आयी जिसमें व्यापक एकता है । युवाओं का संसार लगातार फैला और वह एक स्वतंत्र इकाई बन गया । बौद्धिक परिवेश उभरा जिससे भौतिक द्वंद्व के साथ मानस द्वंद्व भी उठ खड़ा हुआ और मोहभंग के लिए कोई स्थान नहीं रह गया ।

युवाओं की वैचारिक स्वतंत्रता ने उनके लिए विकास-द्वार को खोला । उत्तर आधुनिकता युग में विचारधारा की समाप्ति के पश्चात् अमेरिकी संस्कृति पूरे ग्लोब के युवाओं पर छा गयी । दूरसंचार की सहायता से बड़ी तेज़ी से प्रत्येक स्थान पर पंहुची । मैक्वर्ल्ड संस्कृति सभी स्थानों पर जस की तस अपनायी गयी । कंप्यूटर ही युवाओं के लिए रेडियों, लाइब्रेरी, फैक्स, फ़ोन और टी०वी० बन गया । उत्तर आधुनिकता युवाओं के लिए एक प्रकार की मानसिक उत्तेजना तथा वैचारिक स्वतंत्रता बना । युवाओं ने अत्यधिक ऊर्जा में विश्वास रखते हुए यौन स्वच्छंदता को स्वीकार किया और इस स्वतंत्रता ने ग्लोबल रूप धारण किया ।

युवाओं का जीवन, चिंतन अंतर्विषयीय हो गया । युवाओं का एक अन्य लक्ष्ण था–संस्कृति से पलायन । ज्ञान-विज्ञान, कला-साहित्य की सीमाएं मिट गयी । जीवन का हर क्षेत्र फ़ैशन, विज्ञापन, सूचना, कथा-साहित्य, इलेक्ट्रॉनिक कम्यूनिकेशन, समाज की हर वस्तु तथा विचार की गति एक-दूसरे से घुल-मिल गये । आज कोई विचार, कोई दर्शन, कोई इच्छा उनके लिए शाश्वत, पूर्ण और अंतिम नहीं । सभी कुछ अस्थिर और अस्थायी हो गया ।

उत्तर आधुनिकता ने साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला । सौंदर्यशास्त्र, फ्रायडवाद, नयी समीक्षा, संरचनावाद, प्रतीकवाद, मार्क्सवाद व्यक्तिवाद और अस्तित्ववादी आदि विचारधाराओं को नकार दिया । उत्तर आधुनिकता ने साहित्य के संदर्भ में इन सभी अनुपस्थितियों की पुनः व्याख्या के साथ इनकी अभिव्यक्ति को लोकतांत्रिक शिष्टता के साथ स्वीकार किया । भूमंडलीकरण और आर्थिक उदारीकरण की आंधी के साथ ही युवा नव-उपनिवेशवाद, संचार क्रान्ति और कंप्यूटरीकरण की गिरफ़्त में आ गया ।

आधुनिक युग में विकास के नाम पर हो रहे इस विनाश को संजीव ने अपने उपन्यास 'रह गयी दिशाए इसी पार' में विषय बनाया है । इसके माध्यम से युवा चेतना ने उत्तर आधुनिकता से उपजी समस्याओं मूल्यहीनता, अकेलेपन, विश्व में बढ़ती हिंसा को विश्लेषित किया है । संजीव जीव वैज्ञानिकों द्वारा क्लोनिंग और जेनेटिक्स के क्षेत्र की अभूतपूर्व उपलब्धियों तथा इससे मानवीय संबंधों में उठने वाली जटिलताओं को उजागर करते हैं ।

उत्तर आधुनिक युग की परिवर्तित परिस्थितियों में संजीव प्रश्न उठाते हैं कि क्या अपनी ही विकृतियों और दुर्बलताओं से निरंतर क्षरित होता मनुष्य क्या नष्ट होने के लिए अभिशप्त है ? क्या मृत्यु ही उसकी जीवन यात्रा का अंतिम पड़ाव है ? संजीव नवउदारवादी अर्थव्यवस्था के धन-कुबेरों के बीच क्लोनिंग की प्रासंगिकता का परिक्षण करते हैं जिसे उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभावों और दबावों ने नये मूल्य के रूप में विकसित किया है । द्वंद्व, आत्म-साक्षात्कार और आत्म-परिष्कार में ही युवा उलझते चले जाते हैं ।

यह उपन्यास औद्योगिक संदर्भ में मनुष्य बनाम यंत्र को सुचिंतित परिणति देता है । मनुष्य को यंत्र बना दिये जाने तथा उपभोक्तावादी मानसिकता से उत्पन्न ख़तरों को संकेतित करता है, जो आतंकवाद और सामंतवादी व्यवस्था के दुष्प्रभावों से कहीं ज़्यादा भयंकर है । बाज़ार ने युवाओं की चेतना पर क़ब्ज़ा कर उसे निजता, अस्मिता और जीवंतता से शून्य बना दिया है ।

लोग हथेलियों पर रखकर अपना माल दिखा रहे हैं–ये देखो, ये डिंब, ये वीर्य, ये कोख, ये सब बेच रहे हैं ख़ुद को, झेपने की ज़रूरत नहीं । शील, अश्लील, मूल्य, संस्कार की सारी रेखाएं मिट गयी हैं । यहां न पूरब है, न पश्चिम, न उत्तर, न दक्षिण, न ऊपर, न नीचे, न कोई रिश्ता है, न कोई संस्कार, स्वयं में समाहित है यह ब्रांड, मैं भी । किसी का कोई केंद्र नहीं, मेरा भी नहीं । मैं स्वयं अपने आपका केंद्र हूं ।'' विज्ञान की भित्ति पर टिकी मार्केटिंग के जीवन मूल्यों से आगे बढ़ जाने के यही परिणाम हैं । संजीव अब तक हुए विकास को रेखांकित कर नयी संभावनाओं को गढ़ने के प्रयास करते हुए वर्तमान युवा की नियति पर प्रश्न उठाते हैं । (साभार : सहचर ई-पत्रिका)

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि॰) कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को कहते सुना कि "जिसने अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की क़सम खाई उसने शिर्क किया।"

(तिरमिज़ी)

A Well Wisher

ARARIA (BIHAR)

A Well Wisher

ARARIA

B
I
H
A
R

हज़रत अबू उसामा (रज़ि॰) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जिसने प्रेम किया अल्लाह के लिए, घृणा की अल्लाह के लिए, दिया अल्लाह के लिए और रोका अल्लाह के लिए, उसने ईमान को पूर्ण कर लिया।"

(अबू दाऊद, तिरमिज़ी)

ख़ुशी भी ईश्वरीय आदेशों के अधीन हो

अनगिनत त्योहार हैं जो विश्व में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते हैं । हर देश और हर संप्रदाय अपने त्योहारों को अलग-अलग तरीक़ों से और अलग-अलग मान्यताओं के अंतर्गत मनाता है । कोई किसी महापुरुष की याद में तो कोई किसी महत्वपूर्ण घटना के स्मरण में इन त्योहारों को मनाता है । कुछ राष्ट्रीय पर्व हैं जिन्होंने समय के साथ राष्ट्रीय त्योहार का रूप ले लिया है और पूरा देश एक साथ इनको मनाता है । ईद-उल-फ़ित्र इन सबसे अलग है इसलिए कि इसको मनाने का आदेश स्वयं ईश्वर की ओर से आयी है :

"ऐ इन्सानों ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत आ गयी है । यह वह चीज़ है जिसमें तुम्हारे दिलों की तमाम बिमारियों का इलाज है, और जो लोग इसे क़बूल कर लें उनके लिए रहनुमाई और रहमत है । ऐ नबी (सल्ल०) कह दीजिये कि यह अल्लाह का बड़ा फ़ज़ल और उसकी मेहरबानी है कि यह चीज़ उसने भेजी । इस पर तो लोगों को ख़ुशी मनानी चाहिए । यह उन सब चीज़ों से बेहतर है जिन्हें लोग जमा करते हैं ।" (क़ुरआन, 10: 57-58



समस्त मानव जाति के लिए ईश्वरीय नसीहत और मार्गदर्शन के अवतरण की ख़ुशी का दूसरा नाम ईद है । रमज़ान के पूरे एक महीने इसी क़ुरआन को पढ़ने, समझने और उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने के प्रशिक्षण और संकल्प के बाद ही ईद मनाई जाती है । इसीलिए रमज़ान और क़ुरआन से अलग करके ईद अपनी वास्तविकता खो देती है । क़ुरआन ईश्वरीय नैतिकता के आधार पर इन्सानी रिश्तों को बनाना चाहता है । एक ऐसे आदर्श समाज का निर्माण करना चाहता है जो हर किसी का सपना तो है पर उसे वास्तविकता का रूप देने का नक़्शा किसी के पास नहीं है । ऐसा समाज जिसमें मानव समानता हो, जिसमें कमज़ोर और पिछड़े वर्ग के उत्थान का पूरा प्रावधान हो, जहां इन्साफ़ की प्राप्ति संभव हो और जहां हर कोई अपने पैदा करने वाले मालिक को भूलकर जीवन व्यतीत करने के बजाए उससे जुड़कर जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न कर रहा हो । पूरी मानवता के लिए यही क़ुरआन का पैग़ाम है और यही ईद का पैग़ाम भी है ।

असमानता और भेदभाव से ग्रस्त आज इन्सानियत कराह रही है । कहीं रंग और नस्ल को लेकर असमानता है तो कहीं जाति और भाषा को लेकर । कहीं सांप्रदायिकता का दानव इन्सानियत का ख़ून चूस रहा है तो कहीं राष्ट्रवाद रूपी दैत्य मानवता का गला घोंट रहा है । ऐसे में कहीं आशा की किरण नज़र आती है तो वह क़ुरआन की इस शिक्षा में, कि :

"ऐ लोगो ! हमनें तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो । वास्तव में अल्लाह के यहां तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक डर रखता है । निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जानने वाला और ख़बर रखने वाला है । (हुजरात : 13)

और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के इस कथन में कि :

"किसी अरबी को किसी अजमी (जो अरब के अलावा कहीं और का हो) पर कोई बरतरी हासिल नहीं है और न किसी काले को किसी गोरे पर । तमाम इन्सान आदम की औलाद हैं और आदम को अल्लाह ने मिट्टी से पैदा किया था ।"

और "तमाम इन्सान अल्लाह का कुन्बा हैं ।"

मुस्लिम समाज आज भी उन बहुत सारी कुरीतिओं और बुराइयों से बचा हुआ है जिनसे धर्म के नाम पर और उसके

संरक्षण में दूसरों का शोषण किया जा रहा है और हमारे देश में तो इस शोषण ने अत्यंत भयावह रूप धारण कर लिया है।

ईद और रमज़ान इस बात का सबूत है कि इस्लाम समाज से ग़रीबी दूर करने का पूरा विस्तृत कार्यक्रम रखता है। एक मुसलमान की ईद की नमाज़ स्वीकार्य नहीं होगी यदि उसने नमाज़ से पहले ग़रीबों तक फ़ितरा (घर के प्रत्येक सदस्य की ओर से एक निर्धारित राशि जो किसी अभावग्रस्त परिवार को की जाए, ताकि ईद के दिन उसे भी ख़ुश होने का अवसर मिले) नहीं पहुंचाया। इस्लाम में ज़कात की व्यवस्था ग़रीबी उन्मूलन का सबसे बड़ा हथियार है जिसमें अपनी पूरे वर्ष की बचत पर ढाई प्रतिशत रक़म ग़रीबों को दे देना हर मुसलमान पर अनिवार्य है यदि वह इसकी हैसियत रखता है। इसी आसमान के नीचे और इसी ज़मीन के ऊपर इतिहास में एक ऐसा समय भी गुज़रा है जब इस्लामी जीवन व्यवस्था ने अरब से ग़रीबी को पूरी तरह ख़त्म कर दिया था। जिस व्यवस्था में सरकारी संरक्षण में 73 प्रतिशत संसाधन पर मात्र 1 प्रतिशत का क़ब्ज़ा हो और वह 1 प्रतिशत बचे हुए 27 प्रतिशत पर भी क़ब्ज़ा करना चाहता हो, उसमें ग़रीबी भला कैसे दूर हो सकती है ? जो लोग ग़रीब और कुचले हुए लोगों के प्रति अपने हृदय में कुछ भी पीड़ा रखते हैं, उन्हें कुरआन के इस आदेश का अध्ययन अवश्य करना चाहिए जिसमें कहा गया है कि :

"नेकी केवल यही नहीं है कि तुमने अपने मुंह पूरब या पश्चिम की ओर कर लिए, बल्कि नेकी तो उसकी है जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन पर, फ़रिश्तों, किताबों और नबियों पर ईमान लाया और अपना माल, उसकी मुहब्बत के बावजूद नातेदारों, अनाथों, मुहताजों, मुसाफ़िरों और मांगने वालों को दिया और गर्दनें छुड़ाने में भी...।"

(कुरआन, 2:177)

असमानता और ग़रीबी का कष्ट झेल रहे लोगों का जीवन और कष्टमय हो जाता है जब उन्हें अपने ऊपर हो रहे अत्याचार के विरुद्ध न आवाज़ उठाने का कोई अवसर मिलता है न ही किसी इन्साफ़ की कोई उम्मीद करने का। इसका प्रयत्न करने पर उन्हें ज्ञात होता है की इन्साफ़ के गलियारों पर समाज के उच्च और संपन्न लोगों का पूरा नियंत्रण है और ग़रीब और निचले वर्ग का वहां कोई गुज़र नहीं है। नाइन्साफ़ी एक ऐसी स्थिति है जो समाज को पूरी तरह खोखला कर देती है और लोगों में नफ़रत और विद्रोह को जन्म देती है। इसीलिए इस्लाम अपने मानने वालों को आदेश देता है कि :

"ऐ ईमान लाने वालों, अल्लाह के लिए गवाही देते हुए इन्साफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहो, चाहे वह स्वयं तुम्हारे अपने मां बाप और रिश्तेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो...।"

(कुरआन, 4:135)

और यह की "किसी गरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर न उभार दे कि तुम इन्साफ़ करना छोड़ दो। इन्साफ़ करो, यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है।"

(कुरआन, 5:8)

इस्लाम का मानना है कि अपने पैदा करने वाले मालिक को भूलकर इन्सानों का कोई भला नहीं हो सकता। बल्कि इस्लाम तो यहां तक मानता है कि जिसने अपने मालिक को नहीं पहचाना उसने स्वयं अपने आपको नहीं पहचाना।

"और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो उसने भी ऐसा किया कि वह स्वयं अपने आप को भुला बैठे।" (हश्र : 19)

यह वास्तविकता समझना कोई मुश्किल नहीं है कि आज इन्सान, जो की अपने मालिक की उच्चतम सृष्टि है, अपनी इन्सानियत को भूल स्वयं को पशुओं के स्तर तक गिरा लाया है और पशुओं की भांति मात्र भोजन और यौन इच्छा की पूर्ति को ही अपने जीवन का लक्ष्य समझ बैठा है। यह सोचने का उसके पास समय ही नहीं रह गया है कि उसके मालिक ने उसे क्यों पैदा किया और उसके जीवन का क्या उद्देश्य निर्धारित किया है। और यह कि एक दिन उसे अपने मालिक के सामने अपने जीवन के समस्त कर्मों का हिसाब भी देना होगा।

यह और इसी प्रकार के अन्य सभी प्रश्नों का सरल और संतोषजनक उत्तर कुरआन देता है। ईद और रमज़ान में बड़ी आसानी से देखा जा सकता है कि हर मुसलमान भरपूर प्रयत्न करता है कि अपने मालिक से उसका संबंध और मज़बूत हो जाए।

रमज़ान, कुरआन और ईद का यह संदेश सभी इन्सानों के लिए है और समाज हित में सभी वर्गों को मिलकर इसकी उपयोगिता का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

वारिस हुसैन
सहायक सचिव, आह्वान विभाग
जमाअत इस्लामी हिन्द, नयी दिल्ली

क्या हों अपराध उन्मूलन के अन्य विकल्प ?

■ इंजीनियर जेड॰ ए॰ मंसूरी

इन्सान अपराध न करे, इसके लिए प्रकृति ने उसे बुहत सारे सकारात्मक आधारभूत मूल्यों के साथ उत्पन्न किया है, जैसे : शांति प्रियता, सत्यनिष्ठा, दयाभाव, परहित, न्याय-प्रियता, आत्म-संयम, प्रेम, सद्भाव, सहिष्णुता, सौहार्द्र, क्षमाशीलता इत्यादि । लेकिन विभिन्न कारकों की वजह से इन मूल्यों में विकार आने लगते हैं ।

इन्सान की मूल-प्रवृत्ति बिगाड़, विकार, विघटन, हानि व ह्रास से प्रभावित हो उठती है । उसमें लोभ, ईर्ष्या, क्रोध, अत्याचार, अन्याय, घृणा आदि की दुर्भावनाएं विकसित हो जाती तथा उसे अपराध पर उद्वेलियत कर देती हैं । उसके अन्दर की पुण्यात्मा पर दुरात्मा भारी पड़ जाती है । यह मनोविकार और मूल सकारात्मक मूल्यों का यह ह्रास जितने-जितने इन्सानों में उत्पन्न होता जाता है और जितना-जितना फैलता जाता है, उसी अनुपात में समाज अपराध-ग्रस्त होता चला जाता है ।

अपराध की वर्तमान स्थिति

आजकल हमारे समाज में अपराध की स्थिति जानने के स्रोतों में तीन स्रोत प्रमुख कहे जा सकते हैं । एक : जेलों में बन्द क़ैदी, दो : अदालतों में चल रहे मुक़दमों की तादाद, तीन : पुलिस थाने में दर्ज मामले जो चार्जशीट के साथ अदालतों के सुपुर्द नहीं हुए ।

जेलों की संख्या और क्षमता क़ैदियों की तादाद के अनुकूल कम पड़ती जा रही है अर्थात अपराध निरंतर बढ़ रहे हैं । अदालतों में केसों की संख्या इतनी अधिक है कि समाचार-माध्यमों की सूचना के अनुसार, अगर कोई नया केस न आए (जो असंभव है) तो मौजूदा केसों को निपटाने में ही न्यायालयों को अनुमानत: 200-300 वर्ष लग जाएंगे । पुलिस विभाग के बारे में सर्वविदित है कि सारे अपराधों की यहां रिपोर्टिंग नहीं होती, फिर जितनों की रिपोर्टिंग होती है उनकी एफ॰आई॰आर॰ नहीं दर्ज की जाती ।'' नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो–सिर्फ़ एफ॰आई॰आर॰ दर्ज आपराधिक मामलों के आंकड़े प्रकाशित करता है । इस त्रुटि के बावजूद ये आंकड़े बहुत चिंताजनक, बल्कि भयावह होते हैं । हमारी प्रशासन व्यवस्था एवं न्याय व्यवस्था के साथ-साथ, हमारे एक सभ्य समाज होने पर भी कई बड़े-बड़े प्रश्न चिन्ह लगा देते हैं ।

अपराध-उन्मूलन में वैधानिक, प्रशासनिक एवं न्यायिक व्यवस्था की भूमिका

क़ानून, पुलिस और अदालतों के स्तर पर राज्य व्यवस्था जो कुछ अच्छे से अच्छा, और ज़्यादा से ज़्यादा कर सकती है, करती रही है । क़ानूनों में संशोधन, वृद्धि, पुलिस-बल

25 yrs. Service (Regd.)
AL KAUSAR HOLY HERBAL
HOSPITAL & RESERCH CENTRE
(A minority Unit of Islamic Medicine Under Art.30 (1) Const. of India)
Founder: **Al-Hajj Dr. ABDUR RASHEED**
Ph.D. (HOLISTIC HERBAL)
Medicine of Hazrat Mohammad (S.A.W)
By faith of ALLAH
Shyamganj Road, B.Deoghar - 814112
(Jharkhand) India
Kidney, Heart, Liver, Pancreas, Uterus, disorders, Pain Control, Asthama, Child Birth (Cardio, Uro, Nephro, Neuro, Gastroe, Gynae, Hemato, Diabeto Intercentral cardio, Bronco etc.)
Recharge your body, mind, psyco, soul, desire heart way of "Islamic medicine". Further treatment require or not feels within 7 to 19 days
(Rooms available)
Enquiry: 9955725769, E-mail: alkausarreached@gmail.com
Bank of India, Deoghar Branch A/c-446110100000871
IFS Code No. BKID 0004461

में विस्तार तथा उसका प्रशिक्षण, बल को अधिकाधिक एवं आधुनिक संसाधन जुटाने, न्यायालयों की व्यवस्था में सुधार व विस्तार । फिर, जेलों की व्यवस्था के साथ भी यही सब कुछ किया जाता रहा है । इतने असाधारण व्यापक प्रयोजनों के बाद अपराध का ग्राफ़ स्वाभाविक व तार्किक रूप से नीचे गिरना चाहिए था । लेकिन अपराधों का स्तर न केवल यह कि नीचे नहीं गिर रहा है बल्कि ऊपर ही ऊपर जा रहा है । इस अति-शोचनीय परिस्थिति पर, ऐसा साफ़ महसूस हो रहा है कि समाजशास्त्रीगण, समाज-सुधारक लोगों, क़ानून बनाने वालों, क़ानून को लागू कराने वालों और क़ानून की रक्षा करने वाले तत्वों ने गंभीरता से और निष्ठापूर्वक सोचा नहीं है ।

होना तो यह चाहिए था कि व्यक्तिगत अपराध, सामूहिक अपराध तथा संस्थागत अपराध, तात्कालिक अपराध तथा सुनियोजित अपराध आदि का स्तर गिरने के बजाय उठता क्यों जा रहा है, इस प्रश्न का सही उत्तर तलाश किया जाता । त्रुटियों और कमियों को चिन्हित किया जाता । जो कमियां दूर की जानी संभव होतीं उन्हें निष्ठापूर्वक दूर किया जाता और जिनका निवारण अस्वाभाविक तथा असंभव होता उनके लिए वैकल्पिक उपाय अपनाये जाते ।

अपराध-निरोधक प्रणाली में कमियां

पहले प्रकार की कमी : अपराध सामाजिक समस्या तथा क़ानून व सज़ा का विषय, सामान्यतया घटित हो जाने के बाद बनता है, जबकि इसके कई चरण होते हैं–

- मनोस्थिति में दोष व विकार का उत्पन्न होना ।
- मन-मस्तिष्क में अपराध करने की दुर्भावना और इच्छा व इरादा का जन्म लेना ।
- अपराध करने तथा समाज व क़ानून की पकड़ से बचने की योजना और तैयारी ।

अपराध के उपरोक्त चरणों में उसे रोकने में क़ानून-सज़ा-प्रणाली' पूरी तरह अक्षम व निष्क्रिय होती है । यह उसकी स्वाभाविक त्रुटि है और अंत में–अपराध का घटित हो जाना, जिस स्वाभाविक त्रुटि की, अपराध में मूलभूत व प्रमुख भूमिका है उसका समाधान इस अपराध निरोधक प्रणाली की कार्यशैली तथा कार्य-क्षेत्र से परे कहीं और है जिसका उल्लेख आगे किया जा रहा है ।

दूसरे प्रकार की कमी : अपराध घटित हो जाने पर अपराधी को अपराध की अनुकूलता में उचित व पर्याप्त सज़ा मिलना अपराध-निरोध में काफ़ी हद तक प्रभावकारी हो सकता है । परन्तु 'क़ानून-न्याय-दण्ड-व्यवस्था' के समुचित कार्यान्वयन में कुछ आंतरिक त्रुटियां (Inhrent Short comings) हैं, जिन्हें इस व्यवस्था की सीमितताएं (Limitations of the System) कहना ज़्यादा मुनासिब है । इन सीमितताओं के कारण अपराध-निरोध प्रणाली बड़ी हद तक प्रभावहीन हो जाती है । जैसे–

- पर्याप्त सबूत और गवाही का उपलब्ध न होना ।
- अदालती प्रक्रिया की अवधि दीर्घ से दीर्घतर...दस, पन्द्रह, बीस, पचीस वर्षों तक हो जाना ।
- कभी-कभी सज़ा की मुद्दत का अपराधी की पूरी उम्र से अधिक और कभी-कभी कई गुना अधिक होना, लेकिन पूरी सज़ा को लागू करना संभव न होना । उदाहरणत: एक व्यक्ति की हत्या का अधिकतम दण्ड आजीवन कारावास हो सकता है लेकिन अपराधी व्यक्ति ने अगर डकैती, लूट-पाट, अपहरण, बलात्कार और एक से अधिक हत्याएं की हों, सबूत मिटाया हो, गवाहों को धमकी दी हो या उनकी भी हत्या कर दी हो...आदि; तो सभी अपराधों की सज़ा के लिए उसे कई सौ साल का कारावास होना चाहिए, जो सांसारिक जीवन में संभव नहीं है । (इसके लिए सांसारिक जीवन से परे किसी ऐसे जीवन का होना तर्कसंगत, आवश्यक तथा पूरे-पूरे इन्साफ़ के लिए अपरिहार्य है जिस पर संभावित अपराधी का अडिग विश्वास हो और इस श्रेणी का विश्वास उसे अपराध करने से रोक दे)।

तीसरे प्रकार की कमी : उपरोक्त दोनों कमियां अपराध उन्मूलन प्रणाली की स्वाभाविक कमियां हैं । इनमें व्यक्ति या व्यवस्था की भूमिका कुछ अधिक नहीं है । लेकिन एक तीसरे प्रकार की कमी है जिसका प्रभाव क्षेत्र बहुत विस्तृत और व्यापक है–

- शिक्षण-प्रशिक्षण की पूरी व्यवस्था का भौतिकवाद पर आधारित होना, इसमें इन्सान का मात्र एक ही जीवन लक्ष्य होना कि "अधिकाधिक धन अर्जित किया जाए, भोग-विलास का जीवन बिताया जाए ।" (चाहे धन-दौलत और जीवन के ऐश व इशरत की सामग्री अपराध करके ही अर्जित क्यों न करनी पड़े)।
- शरीर की रगों में हर क्षण दौड़ने वाले ख़ून की तरह समाज और व्यवस्था के शरीर में व्याप्त भ्रष्टाचार ।

- व्यावहारिक स्तर पर यह बात सिद्ध रहनी कि छोटा-बड़ा कोई भी अपराध करके भी निश्चिंत होकर खुलेआम स्वतंत्रता और शान से रहा और चला फिरा जा सकता है ।
- राजसत्ता के गलियारों में चलने-फिरने वालों, उनसे घनिष्ठ संबंध रखने वालों, बड़े-बड़े पूंजीपतियों, विशालकाय धनाढ्यों का संतोषपूर्ण और चिंतारहित स्थिति में रहना कि बड़े से बड़ा अपराध करके भी उन तक क़ानून दंड व्यवस्था के हाथ पहुंच नहीं पाएंगे ।
- सामान्य समाज का विवेक जिन कृत्यों को सदा से अपराध मानता रहा है, उन्हें 'मानव-अधिकार' का चोला पहनाकर उनका क़ानूनन अनापराधीकरण कर दिया जाना ।
- नवयुवकों और पुरुषों के लिए नन्हीं-नन्हीं बच्चियों, किशोरियों, नवयुवतियों एवं महिलाओं के प्रति यौन-अत्याचार व शोषण पर उकसाहट व कुप्रेरणा के अनगिनत संसाधन तथा अवसर पूरी सामाजिक व सामूहिक वातावरण में बाहुल्य व सरलता से पाया जाना, जिस कारण बड़े-बड़े, पिशाचीय, जघन्य यौन अपराधों का घटित होना ।
- मदिरापान, जो अपराध-जननी है, का सरकारी राजस्व बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन व प्रावधान किया जाना ।

यहां अनगिनत कमियों में से केवल कुछ एक का वर्णन किया गया, जिन्हें पैदा न होने देना और अगर पैदा हो जाएं तो उनका उन्मूलन कर देना मानव समाज व सामूहिक व्यवस्था के लिए असंभव नहीं है । यह कमियां इन्सानों की सोच में त्रुटि, चरित्र में पतन और समाज की संवेदनहीनता का परिणाम हैं ।

प्रश्न यह है कि अपराध-उन्मूलन में जिस असफलता का अपश्रेय उपरोक्त 'तीन प्रकार की कमियों' को जाता है उसका कोई समाधान भी है ? अगर इसका उत्तर 'नहीं' में है तो यह उत्तर स्वीकार्य नहीं होना चाहिए । क्योंकि सृष्टि, मनुष्य एवं संसार के रचयिता के प्रति यह दुर्भावना हरगिज़ नहीं रखी जा सकती कि उसने प्रतिभाशील मानवजाति की आबादियों, बस्तियों, नगरों और राष्ट्रों को 'अंधेर नगरी' बनाया है और अपराध व भ्रष्टाचार ग्रस्त इन्सानी समाज को यूं ही बेसहारा छोड़ दिया है । और उत्तर अगर 'हां' में है, और यक़ीनन है तो वह विकल्प क्या है...। (जारी)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया– "जो व्यक्ति अस्र की नमाज़ से चूक जाता है, उसके सारे काम निरर्थक हो जाते हैं ।" (बुख़ारी)

A WELL WISHER

RANCHI (Jharkhand)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–"जब किसी बीमार से मिलने कोई आता है, तो जन्नत में यह आवाज़ गूंजती है, "आप सदा सुखी रहें । आपका चलकर आना ख़ुशी भरा हो, आपको जन्नत में एक घर मिले ।"

(इब्ने-माजा)

A WELL WISHER

GOA

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–"तुम तब तक जन्नत में नहीं जाओगे जब तक कि तुममें ईमान न हो । तुममें ईमान तब तक नहीं होगा, जब तक कि तुम एक-दूसरे से मुहब्बत नहीं करोगे । एक-दूसरे से मुहब्बत करने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि सलाम करो ।"

(मुस्लिम)

A WELL WISHER

GOA

महंगाई

रघु अपने बीमार बच्चे के लिए फल ख़रीदने के लिए आया था । फलों के बढ़े हुए दाम सुनकर मन ही मन सोच रहा था, क्या लूं और क्या न लूं ? लूं भी कुछ या न लूं ? लेना तो पड़ेगा थोड़ा बहुत शंकर के लिए । कितनी महंगाई हो गयी है ? फलों के दाम भी कहां से कहां पहुंच गये हैं ? तभी एक अमीर महिला कार से उतरी । उसने बिना दाम पूछे एक किलो बढ़िया सेब और एक दर्जन बढ़िया केले ख़रीदे और पांच सौ रुपये का नोट निकालकर दुकानदार को पकड़ा दिया । दुकानदार ने तीन सौ और कुछ रुपये उसे वापस कर दिये । रुपये वापस मिलते देख बरबस ही उस महिला के मुंह से निकला, फ्रूट तो सस्ते ही चल रहे हैं । यह सुनकर रघु ने उस औरत की तरफ़ देखा । उसे लगा कि महंगाई नहीं बढ़ी है, सिर्फ़ उसी के पास रुपये नहीं है । जिसके पास रुपये हैं, उसके लिए कोई महंगाई नहीं है । वह वहीं खड़ा था और वह महिला जा चुकी थी ।

सभ्य लोग

ज्यों ही बस बाएं-दाएं डिगती, वह अपने गोद के बच्चे के साथ उसी तरफ़ झुककर लगभग गिरने को होती । अभी गांव के स्टैंड से वह बस में चढ़ी थी । उसकी याचक दृष्टि सीट पर बैठे हर यात्री से थोड़ी जगह मांग रही थी । बस का डंडा पकड़े वह कभी सीधे खड़े रहने का प्रयत्न करती, कभी बीमार व कमज़ोर बच्चे का रोना सुनकर उसे कंधे से चिपकाए रखने की कोशिश करती । बस अगले स्टैंड पर रुकी । कुछ यात्री और चढ़े । 'ओ हो, आइए शर्मा जी, यहां आ जाइए । मैंने आपके लिए जगह रख छोड़ी है ।' गुप्ता बाबू ने खिसकते हुए कहा ।

शर्मा जी बैठ गये । वह मन ही मन सोचने लगी कि क्या यही पढ़े-लिखे लोगों की सभ्यता है ? बस फिर चल पड़ी । अगले स्टैंड पर बस रुकी । शर्मा जी व गुप्ता बाबू नीचे उतरे । वह दोनों सामाजिक सुधार सेवा समिति के कार्यालय की ओर बढ़ चले । वह महिला भी उतरी तथा उस कार्यालय की बगल में बने अस्पताल की तरफ चल पड़ी । गोद का बच्चा अब भी कमज़ोर मिमियाहट के साथ मां के कंधे को मज़बूती से पकड़े रखने का प्रयत्न कर रहा था ।

नैतिक ज़िम्मेदारी

समय भले ही बीत जाए, हमारी ज़िम्मेदारियां नहीं बदलतीं । बस उन्हें समझना होता है । हर सुबह हंगामा होता था । तीन वर्ष की श्रुति को स्कूल भेजना एक युद्ध के समान था । उसके माता-पिता नौकरी पर निकल जाते थे । घर में रह जाते थे दादा और दादी । दादा डॉक्टर थे । सो सुबह से ही मरीज़ों में व्यस्त हो जाते थे । बेचारी दादी किसी तरह श्रुति को तैयार करके स्कूल भेजतीं । समय बीतता गया । श्रुति बड़ी होने लगी । दादी बूढ़ी होने लगीं । धीरे-धीरे श्रुति ठीक-ठाक स्कूल जाने लगी । फिर कॉलेज जाने लगी । फिर नौकरी करने लगी । फिर शादी हो गयी । शादी उसी शहर में हुई थी । अब समय ठीक उल्टा हो गया था । दादी बहुत बूढ़ी हो गयी थीं । उन्हें संभालना एक कठिन काम होता जा रहा था । श्रुति रोज सुबह आती, उन्हें तैयार कर काम पर निकल जाती । फिर अपने घर जाकर वहां सब सम्भालती । फिर वापस आकर दादी को सम्भालकर अपने घर चली जाती । श्रुति के पति ने एक दिन पूछा, 'तुम रोज़ अपने मायके क्यों जाती हो ? वहां एक नौकरानी रख

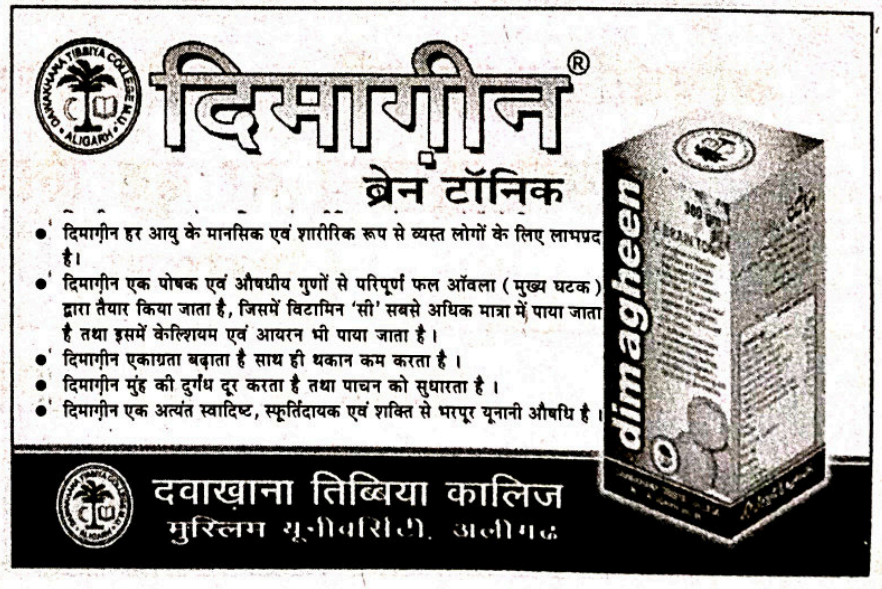

दो । वह सब सम्भाल लेगी ।' श्रुति ने सिर तानकर कहा, 'जिस दादी ने मेरा बचपन सम्भाला था, उनका बुढ़ापा सम्भालना आज मेरी नैतिक ज़िम्मेदारी है ।

धरम करम

वो डॉक्टर के सामने गिड़गिड़ा रहा था–'डॉक्टर साहब, मेरे बाप को बचा लो, वो मर रहा है । दो दिन से शरीर भट्टी की तरह जल रहा है, पेट में कुछ गया नहीं ।' डॉक्टर ने कहा–'पहले जाकर हस्पताल में दस हज़ार रुपये जमा करवा दो, फिर उसे हस्पताल में जगह मिलेगी ।' उसने कहा–'डॉक्टर साहब, मेरे पास तो बीवी के दो कंगन के सिवा कुछ नहीं, इन्हें रखकर ही मेरे बाप को भरती कर लो ।' डॉक्टर ने कहा–'पैसों का जुगाड़ हो जाए तो आ जाना ।' यह कहकर डॉक्टर मुंह फेर कर चल दिया । वो रुआंसा होकर ज़मीन पर लेटे बापू के पास गया और बोला–'बापू मैं क्या करू ?' बापू उसका उत्तर देने के लिए जीवित नहीं था ।

थोड़ी देर बाद वो फिर गिड़गिड़ा रहा था, गांव के पंडितजी के सामने–'पंडितजी, बापू का किरिया करम करवा दीजिये । पंडितजी बोले–'किरिया करम तो हो ही जाएगा, लेकिन उसके लिए तैयारी करनी पड़ेगी । अर्थी, लकड़ी, घी आदि का मूल्य क़रीब अढ़ाई हज़ार, गौदान के निमिन पांच हज़ार और मृतक भोज के लिए कम से कम तीन हज़ार का ख़र्च है ।' वो फिर गिड़गिड़ाया–'पंडितजी इतना पैसा होता तो आज बापू ज़िन्दा होता । मेरे पास तो बस बीवी के दो कंगन हैं, उसे ले लीजिये ।' पंडितजी ने बिदक कर कहा–'छी छी, तुम्हारी बीवी के कंगन मैं लूंगा ? जाकर साहूकार के यहां बेच आओ, कह देना पंडितजी ने भेजा है । हज़ार पांच सौ कम भी मिले तो चला लेंगे ।' वो फिर एक बार रुआंसा होकर बापू की लाश के पास गया और बोला–'बापू तुम्ही बताओ, मैं क्या करू ?'

तभी उसकी बीवी ने कहा–'तुमने बेटे का धरम निभा लिया, डॉक्टर के पास लेकर गये, पंडितजी से मिन्नत कर ली, उन लोगों ने अपना धरम नहीं निभाया । अब उठाओ बापू को अपने हाथों में और चलो शमशान । जो करना है हमें ही करना है ।' उसने अपनी बीवी की आंखों में देखा और फिर आश्वस्त होकर बापू को हाथों में उठा लिया ।

● **प्रवीण कुमार सहगल**

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–''तीन काम ऐसे हैं, जिसमें कभी देर नहीं करनी चाहिए–पहला समय पर नमाज़ पढ़ना, दूसरा मय्यत को दफ़नाना और तीसरा किसी अविवाहित लड़की या महिला की शादी करना, यदि सुयोग्य वर ढूंढ़ लिया है ।''

(तिरमिज़ी)

A WELL WISHER

RANCHI (Jharkhand)

ममता

■ डॉ॰ रेणु बहल

आज मेरे बेटे की तबीयत कैसी है ? मेरे चांद को बुख़ार तो नहीं है ? मेरा प्यारा बेटा ! मेरा दुलारा ! तू ज़रा-सा बीमार होता है तो मेरी जान ही निकल जाती है । तू तो जानता है तेरे अलावा मेरा इस दुनिया में है ही कौन ।

संगीता रोए भी जा रही थी और उसे प्यार भी किये जा रही थी । क्या खाएगा मेरा बेटा ? मैं क्या बताऊं तेरे लिए ? आज तू खाना ज़रूर खा लेना । फिर दवा भी तो लेनी है । भूखे पेट दवाई नहीं लेते । मालूम है तुझे ?

संगीता उठकर रसोई में गयी और अपने और उसके लिए नाश्ता बनाकर ले आयी । मगर जब उसने खाना देखकर मुंह दूसरी ओर फेर लिया तो मजबूरन उसे ख़ुद अपने हाथों से खिलाना पड़ा ।

बेटा तुझे मालूम है ना तेरी मम्मा को दफ़्तर जाने में देरी हो रही है । जल्दी से खा ले मेरे चंदा । आ मैं तुझे अपने हाथों से खिला दूं । शाबाश मेरे लाडले ! जल्दी से सब ख़त्म कर दो, मम्मा को दफ़्तर जाना है ना !

संगीता ने उसे खाना खिंलाकर दवाई भी खिला दी और दफ़्तर निकलने से पहले सब बातें समझा दीं ।

मेरे जाने के बाद आराम से रहना, कोई शरारत नहीं करना बस बुख़ार उतर जाएगा तो जितनी मर्ज़ी शरारतें करना, मैं बिल्कुल मना नहीं करूंगी । उसके माथे को चूम कर वह दफ़्तर के लिए निकल पड़ी ।

आज उसे कुछ ज़्यादा ही देर हो गयी थी । दफ़्तर पहुंचते ही वह डॉक्टर सिंह से फ़ोन पर बात करेगी और अगर दवा बदलनी हुई तो बदल देगी । वह पिछले 20 साल से उसी दफ़्तर में नौकरी कर रही है, मगर इतना सख़्त अधिकारी पहली बार आया है । अगर उसे बुला लिया हो तो आज तो डांट पड़ ही जाएगी । अगर उसने डांटा तो वह पूरे दिन की छुट्टी लेकर बेटे के पास घर चली जाएगी । आख़िर बच्चा बीमार हो तो छुट्टी तो लेनी चाहिए ना । यही सब सोचती हुई वह दफ़्तर पहुंच गयी ।

सबसे पहले शर्मा जी ने रोक लिया । मैडम क्या बात है आप 2 दिन से छुट्टी पर थीं सब ख़ैरियत तो है ?

क्या बताऊं शर्मा जी मेरे चांद की तबीयत बहुत ख़राब हो गयी थी । बुख़ार उतरने का नाम ही नहीं ले रहा था । फिर डॉक्टर को दिखाया और अब कुछ आराम है । आप तो जानते ही हैं, घर में हम दोनों के सिवा और कोई नहीं है । फिर इतने बुख़ार में उसे अकेला छोड़कर कैसे आ जाती ? बात करते-करते उसकी आंखें भीग गयीं ।

मैडम आप रोएं नहीं सब ठीक हो जाएगा बुख़ार तो आता जाता रहता है, अब उतर गया ना बुख़ार ?

अब तो ठीक है आज 3 दिन बाद उसके हलक से खाना उतरा है । वह भी ख़ुद अपने हाथों से खिलाया तो उसने खाया । उसने चैन की सांस ली ।

भगवान उसे जल्दी तंदुरुस्ती दे । आमीन ! शर्मा जी के साथ बैठे उनके दोस्त इक़बाल मियां ने कहा ।

मैडम आपको साहब याद कर रहे हैं । बहुत गुस्से में हैं । पहले भी दो बार बुला चुके हैं । चपरासी ने आकर कहा । आ रही हूं तुम जाओ !

जाने से पहले वह फिर शर्मा जी से बोली । उसे शर्मा जी के सुलझे हुए सुझाव पर बहुत भरोसा था ।

शर्मा जी अगर साहब ज़्यादा गुस्से में हैं तो मैं छुट्टी लेकर चली जाऊं ? नहीं नहीं ! ऐसी कोई बात नहीं आप अंदर जाएं और साहब को जाकर अपनी परेशानी का कारण बताएं वह कुछ नहीं कहेंगे ।

धन्यवाद शर्मा जी ! यह कहकर वह साहब के कमरे में चली गयी । इक़बाल मियां जो पहली बार शर्मा जी के दफ़्तर आए थे उसके जाते ही पूछने लगे ।

बहुत बीमार है क्या बड़ी परेशान लग रही थीं ।

बुख़ार होगा तभी तो 2 दिन की छुट्टी ली, वरना बिना मतलब की कभी छुट्टी नहीं लेती बहुत मेहनती औरत है । अपने सामने रखे काग़ज़ों पर से नज़र उठाए बिना शर्मा जी ने जवाब दिया ।

घर में और कोई नहीं है क्या ? नहीं अकेली रहती हैं । शादी नहीं की, काम करते-करते उन्होंने जवाब दिया ।

शादी नहीं की तो यह बच्चा किसका है ? इक़बाल मियां ने हैरत से पूछा । कौन-सा बच्चा ? शर्मा जी ने काम छोड़ दिया । जिस बीमार बच्चे की बात वह कर रही थीं?

वह ! शर्मा जी खिलखिलाकर हंसने लगे । और इक़बाल मियां परेशान हो गये । जब हंसी थमी तो वे बोले वह तो मैडम का कुत्ता है जिसकी हम बात कर रहे थे ।

इक़बाल मियां का मुंह खुला का खुला रह गया ।

मेयारी तालीम ही बेहतर मुस्तक़बिल की ज़मानत है

बच्चों की बेहतर तालीम व तरबियत के पेशे-नज़र स्कूलों और मदरसों के लिए

इस्लामी तर्ज़ पर तैयार निसाबी किताबें

उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी, गणित, सामान्य ज्ञान, कंप्यूटर, इस्लामियात और अन्य विषयों की पाठ्य-पुस्तकें अंग्रेज़ी, उर्दू और हिन्दी तीनों भाषाओं में उम्दा काग़ज़, बेहतरीन प्रकाशन, मतन से हम आहंग दीदाज़ेब तस्वीरों के साथ पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करने वाला

हिन्दुस्तान भर में मशहूर पहला इशाअती इदारा

भारत सरकार के क़ौमी दर्सियात (C.B.S.E & N.C.E.R.T) के ख़ाके के तहत बच्चों के स्वभाव और दिलचस्पी को ध्यान में रखते हुए मुसलसल जांच (C.C.E) के नये तक़ाज़ों के मुताबिक़ नामवर शिक्षण-संस्थाओं से जुड़े अनुभवी शिक्षकों के द्वारा तैयार की गयी पाठ्य-पुस्तकों के लिए संपर्क करें।

हम सारे तालीमी इदारों से भरपूर तआवुन की अपील करते हैं और अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि हम सबकी इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए। आमीन!

इस्लामी पाठ्य-पुस्तकों का पहला इशाअती इदारा। उर्दू, हिन्दी मीडियम स्कूलों और मदरसों के लिए

Pioneer in Islamic Oriented Books for Urdu/Hindi Medium Schools & Madarsas

AL QALAM
Publications Pvt.Ltd.

Al Qalam

اَلْقَلَم پبلیکیشنز
پرائیویٹ لمیٹڈ

Regd. Office : 344, Gali Garhaiyya, Bazar Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110 006.
Phone : (Off.) 011-2324 1481, 2326 1481 (Godown) 011- 23631481
website : alqalampublications.com e-mail : alqalambooks@gmail.com



To place orders please e-mail us on : alqalambooks@gmail.com or WhatsApp : 9136393030

हिजाब ने दिखाया रास्ता

■ वारिस हुसैन

फिलिक्सिया यीप एक पूर्व मॉडल हैं, जो प्लेबॉय और एफ॰एच॰एम॰ जैसी पत्रिकाओं के लिए पोज देती थीं । वह कार शोज और ब्यूटी पेजेंट में भी दिखाई देती थीं । उनका कैरियर तेज़ी से उठान की ओर जा रहा था लेकिन इसी बीच कुछ ऐसा हो गया की ग्लैमर और फैशन की दुनिया आश्चर्यचकित रह गयी ।

जुलाई 2014 को फिलिक्सिया ने आधिकारिक तौर पर इस्लाम धर्म स्वीकार करने कि घोषणा की और धन, दौलत और प्रतिष्ठा की वर्षा करने वाले अपने कैरियर को छोड़ने की घोषणा भी कर दी । किसी को समझ में नहीं आ रहा था कि अपने मॉडलिंग कैरियर के शीर्ष पर एक लड़की ने अपनी असाधारण जीवनशैली को छोड़ने और इस्लाम धर्म अपनाने का फ़ैसला क्यों किया ? आइए इसका उत्तर जानने की कोशिश करते हैं ।

यीप का जन्म 1986 में मलेशिया में हुआ था । धर्म के साथ उनके शुरुआती अनुभव उन्हें इसकी ओर आकर्षित करने में असफल रहे । वह कहती हैं, 'मैं हर रविवार शाम को कैथोलिक चर्च में जाती थी और मैंने ईसाई धर्म को समझने का भरपूर प्रयत्न किया पर मुझे इसमें संतुष्टि प्राप्त न हो सकी ।' वह आगे बताती हैं कि, ''मैंने बौद्ध प्रथाओं को अपनाने की भी कोशिश की और मैंने प्रसिद्ध बौद्ध देवता कुआन यिन और अन्य की पूजा करने में नये अर्थ खोजने की भी कोशिश की, लेकिन मेरे दिल को कभी भी भगवान से निकटता प्राप्त न हो सकी और मुझे इनमें किसी भी प्रकार की संतुष्टि का अनुभव न हो सका ।''

एक फ़ोटोशूट के दौरान उन्हें इस्लामिक हिजाब पहनने का प्रस्ताव मिला । वे कहती हैं कि शूटिंग के लिए जब उन्होंने हिजाब धारण किया तो ख़ुशी और सुरक्षा की अभूतपूर्व भावनाएं उनके हृदय में उमड़ पड़ीं और उन्हें हिजाब में एक प्रकार की मुक्ति का एहसास हुआ ।



अपने कैरियर को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने 2005 में मॉडलिंग भी शुरू कर दी और टी॰वी॰ कार्यक्रम 'आई वाना बी॰ए॰ मॉडल' के तीसरे सीजन में दिखायी दीं । उनका कैरियर उस समय अपनी पराकाष्ठा को पहुंच गया जब 2009 में उन्हें ''वेलोसिटी एंजेल्स मॉडल ऑफ़ द ईयर'' का ताज पहनाया गया । पर मॉडलिंग में प्रसिद्धि और सफलता की चरम सीमा तक पहुंचने के बाद भी वे स्वयं को बहुत खोखला और शोषित महसूस करती थीं । वे कहती हैं कि अनेक अवसर ऐसे आये जब मैंने स्वयं को बिल्कुल टूटा हुआ महसूस किया पर मैंने अपने आपको फिर से उठाया शायद इसलिए की मैं दुबारा टूट सकूं । वह अपने बारे में बताती हैं कि उन्हें कैमरे के सामने पोज देने और रनवे पर चलने का बहुत शौक़ था पर उन्हें बहुत ज़्यादा प्रसिद्धि और किसी बहुत धनवान व्यक्ति से शादी करने जैसी इच्छा कभी नहीं रही ।

फिर 2013 में कुछ ऐसा हो गया जिसने उनके जीवन को और उनकी सोच को पूरी तरह बदल कर रख दिया । एक फ़ोटोशूट के दौरान उन्हें इस्लामिक हिजाब पहनने का प्रस्ताव मिला । वे कहती हैं कि शूटिंग के लिए जब उन्होंने हिजाब धारण किया तो खुशी और सुरक्षा की अभूतपूर्व भावनाएं उनके हृदय में उमड़ पड़ीं और उन्हें हिजाब में एक प्रकार की मुक्ति का एहसास हुआ और हृदय में यह भावना जागृत हुई की उन्हें अपने शरीर को और अधिक ढकना चाहिए ।'' हिजाब ने उन्हें एक महिला के रूप में अपनी मर्यादा को पहचानने का अवसर दिया । वह अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहती हैं कि ''मुझे विश्वास हो गया की एक महिला के रूप में यह मेरी मर्यादा के विपरीत है कि मैं अपने शरीर का प्रदर्शन करती रहूं । और मुझे अब इसमें कोई प्रसन्नता और गर्व की भावना नहीं प्रतीत होती की अपने शरीर और अंग प्रदर्शन करने वाली मॉडल्स उन्हें अपने आदर्श के रूप में देखें । मैं नहीं चाहती की अपने कैरियर के ढल जाने के बाद जब वे स्वयं को अकेला और खोखला महसूस करें तो उसका दोष मुझे दें ।''

अब मैं कुछ गहरी बातों की खोज में लग गयी । एक धर्म, एक ईश्वर और जीवन व्यतीत करने का एक आदर्श तरीक़ा । अब मैं स्वयं को और ढांक कर रखने का प्रत्यन करने लगी और चाहती थी की मेरी पहचान मेरे अंग प्रदर्शन से नहीं बल्कि उससे हो जो मैं अन्दर से वास्तव में हूं । और यदि कोई धर्म और आस्था मुझे यह मार्ग दिखा सकती है तो मुझे उसको समझने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए । उससे मात्र इसलिए घृणा क्यों की जाए जबकि कुछ थोड़े से भ्रमित और भटके हुए अतिवादी लोग उसकी वास्तविकता को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत कर रहे हैं ।''

इस्लाम के गहरे अध्ययन के बाद एक दिन उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया । जिस दिन वे मुस्लिम बनीं, उसके बारे में वे कहती हैं ''आज मेरे लिए एक ऐतिहासिक दिन है । यह पुनर्जन्म की तरह है । मुझे उम्मीद है कि हर कोई प्रार्थना करेगा कि मैं अपनी नयी यात्रा में दृढ़ और प्रतिबद्ध रहूं । उसके बाद से उन्होंने अपना नाम बदलकर ''रईसिया रनिया यीप' रख लिया ।

क्या फ़र्क़ पड़ता है ?

जो बोलते हैं
उनसे तुम्हें पड़ता है क्या फ़र्क़ ?
क्या सुधारा, क्या संवारा
उल्टा उनके बोलने को
बकवास, उपदेश
ऊबाऊ कहा
अगर सुना भी तो
अनसुना कर दिया
कौन-सा अमल किया ?
किसकी समझी, किसकी मानी
और फिर भी कहते हो कि
भगवान है
तो बोलते क्यों नहीं ?
इसीलिए नहीं बोलते
उनके बोलने से भी
क्या होने वाला है
दो-चार दिन चमत्कार मानोगे
भगवान को जानोगे
फिर उन्हें भी टाल दोगे
यह कहकर कि
हो गया बहुत, अब बस करो
तुम पर कुछ असर
होने वाला तो है नहीं
नाममात्र के आदमी हो
बाक़ी तो जंगली जानवर से भी बदतर हो
अंधे-बहरे, लंगड़े-लूले
बदचलन और नराधम
इसीलिए कुछ भी हो
क्या पड़ता है फ़र्क़ ।

देवेन्द्र कुमार मिश्रा
चन्दनगांव, छिन्दवाड़ा (म०प्र०)

वायरस के बारे में रोचक तथ्य

■ शिखा मित्तल

वायरस परजीवी होते हैं, इनके संक्रमण के फलस्वरूप पोषी जीवों में अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं और ये एक पोषी से दूसरे पोशियों पर फैलते जाते हैं । वायरस से रोग तो होता ही है परन्तु इनका उपयोग कुछ लाभदायक कार्यों के लिए भी किया जाता है । आइये इस लेख के माध्यम से वायरस क्या होते हैं, अन्य कुछ रोचक तथ्यों के बारे में अध्ययन करते हैं ।

लैटिन भाषा में 'वायरस' (Virus) शब्द का अर्थ होता है विष । क्या आप जानते हैं कि उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में इस शब्द का प्रयोग विषाक्त (Toxic) रोग पैदा करने वाले किसी भी पदार्थ के लिए किया जाता था । परन्तु अब वायरस शब्द का प्रयोग रोगजनक कणों के लिए भी किया जाता है । वायरस एक संक्रामक कण है जो जीवन और ग़ैर-जीवन की विशेषताओं को प्रदर्शित करता है । वायरस, संरचना और कार्य में पौधों, जानवरों और बैक्टीरिया से भिन्न होते हैं । वे कोशिका नहीं होते हैं और स्वयं को दोहरा नहीं सकते हैं । वायरस को ऊर्जा उत्पादन, प्रजनन और जीवित रहने के लिए होस्ट पर निर्भर रहना पड़ता है । हालांकि आम तौर पर वायरस केवल 20-400 नैनोमीटर तक होते हैं । वायरस इंफ्लूएंजा, चिकनपॉक्स और आम सर्दी सहित कई मानव रोगों का कारण भी बनते है ।

रूसी वैज्ञानिक इवानोविस्की (Ivanovsky) ने सर्वप्रथम सन 1892 में यह बताया कि मोजेक (mosaic) रोग से पीड़ित तम्बाकू के पौधों की पत्तियों के स्वरस (Extract) में वायरस के कण विद्यमान होते हैं । अधिकांश वायरस इतने छोटे होते हैं कि उनको संयुक्त सूक्ष्मदर्शी द्वारा भी देख पाना असंभव है । आइये इस लेख के माध्यम से वायरस के बारे में कुछ रोचक तथ्यों पर अध्ययन करते हैं ।

1. क्या आप जानते हैं कि सबसे छोटा वायरस टोबैको नेक्रोसिस वायरस (Tobacco necrosis virus) है जिसका परिमाण लगभग 17 nm होता है । इसके विपरीत सबसे बड़ा जंतु वायरस (Animal virus) पोटैटो फ़ीवर वायरस (Potato fever virus) है लगभग 400 nm ।

2. लखनऊ के पेलियोबोटनी संस्थान में 3.2 बिलियन

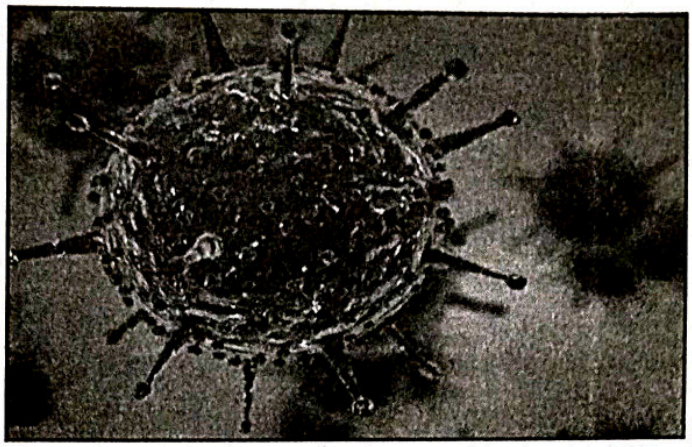

वर्ष पुरानी चट्टान में सायनोबैक्टीरिया के जीवाश्म रखे हैं ।

3. जीवाणुभोजी (Bacteriophage) की खोज टूवार्ट (Twart) एवं हेरिल ने की थी । ऐसे विषाणु या वायरस जो जीवाणुओं में प्रवेश करके बहुगुणन (Multiplication) करते हैं उन्हें जीवाणुभोजी या बैक्टीरियोफेज कहते हैं ।

4. वायरस के प्रोटीन कोट को कैप्सिड (Capsid) कहते हैं ।

5. बॉडन (Bawden) व डार्लिंगटन (Darlington) ने बताया कि वायरस न्यूक्लियोप्रोटीन से बने होते हैं ।

जानकारी की बातें

1. फिनलैंड में एक गणना के अनुसार 2 मिलियन सोना रूम (भाप लेने के कमरे) हैं । 99 प्रतिशत फिनलैंडवासी हर हफ़्ते कम से कम एक बार सोना बाथ लेते हैं ।

2. 90 प्रतिशत अपने हंसने का कारण बताते समय अधिक ज़ोर से हंसते हैं ।

3. कोरिया और जापान में एक कैट कैफे है जहां कॉफी पीते हुए बिल्लियों के साथ समय बिताया जा सकता है ।

4. यू॰एस॰ की मिलिटरी औसतन इराक़ और अफ़ग़ानिस्तान पर 20 मिलियेन डॉलर ख़र्च करती है । यह नासा के बजट से भी अधिक है ।

5. मरी हुई चीटी में से एक रसायन निकलता है जिससे अन्य चीटियों को उसके मृत होने का पता चलता है । अगर यह केमिकल किसी ज़िंदा चीटी पर गिर जाए तो अन्य चीटियां उसे मृत मान लेती हैं और उसे भी मरा समझकर वहां से उठाकर हटा देती हैं ।

6. कॉफ़ी बींस को डिकैफीनेट करने के बाद, एकत्रित कैफीन को सॉफ्ट ड्रिंक और फार्मास्युटिकल कंपनियों को बेच दिया जाता है ।

7. 52,000 टन सोना अभी भी ज़मीन के भीतर है जिसकी क़ीमत 2 ट्रिलियन डॉलर है ।

8. हर दिन 1 मिलियन डॉलर ख़र्च करने के बाद भी, बिल गेट्स को 218 साल लगेंगे अपना पूरा पैसा ख़र्च करने में ।

9. हार्वर्ड स्कूल ऑफ़ साइकोलॉजी के अनुसार किसी भी इन्सान की जीभ की लंबाई उसकी जागरूकता दिखा सकती है । जिनकी जीभ लंबी होती है और जो जीभ से कोहनी छू सकते हैं वे नये प्रयोग करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं ।

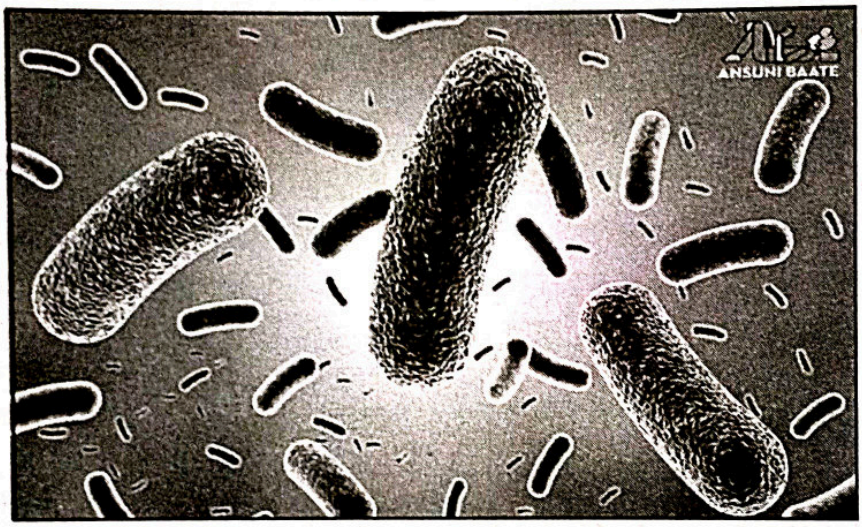

11. पहले 5 यू॰एस॰ राष्ट्रपतियों की फ़ोटो कभी नहीं खींची गयी ।

12. अस्ली टाइटैनिक पर संगीत का बैंड असलियत में रुका और संगीत बजाता रहा । जहाज़ के डूबने तक संगीत बजाते हुए इसके सदस्यों की मौत हो गयी ।

13. खाने से इन्सान की प्रवृत्ति पता लगायी जा सकती है । चॉकलेट और मीठी चीज़ें पसन्द करने वाले लोग खुश रहते हैं और खुले विचारों के होते हैं ।

14. हर दिन 30 मिनिट का व्यायाम आपको 10 प्रतिशत अधिक स्मार्ट बनाता है ।

15. अगर आप सोचते हुए सोते हैं तो दिमाग़ नींद में भी सोचता रहता है जिससे आपको जागने पर आराम की फीलिंग नहीं आती और थकावट महसूस होती है ।

16. पहले साल में कोका-कोला की कुल 25 बॉटल ही बिकी थीं । यह एक अच्छा उदाहरण है कि असफलता मिलने पर काम को बंद नहीं करना चाहिए ।

17. लियोनार्डो द विंची एक हाथ से एक ही समय लिख सकते थे वहीं दूसरे हाथ से चित्रकारी करते रहते थे ।

18. 88 प्रतिशत लोग मोबाइल फ़ोन पर बात करने की एक्टिंग कर लोगों से बात करना टालते हैं ।

19. अगर 60 वर्ष की उम्र में भी स्मोकिंग छोड़ दी जाए तो आपकी उम्र बढ़ सकती है ।

20. गेंडे का दूध गुलाबी रंग का होता है ।

21. गर्म रंग जैसे पीला, केसरिया और लाल भूख बढ़ाते हैं । यही वजह है कि कुछ रेस्टोरेंट पीला, केसरिया और लाल रंग से पेंट किये जाते हैं ।

22. होमो-सेक्सुएलिटी 1979 तक स्वीडन में बीमारी मानी जाती थी । स्वीडन में इसका जमकर विरोध हुआ ।

23. अल्कोहल पीने के 6 मिनट के भीतर आपके दिमाग़ पर इसका असर शुरू हो जाता है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223

संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

KANTI

Current A/c. No. :0990839195

IFS Code : IDIB000J029

Indian Bank, Jamia Millia Islamia branch

New Delhi 110025

कृपया पैसा जमा करने के बाद फोन न. 011-26949430, मोबाइल न. 9818799223 या ई मेल : managerkantidelhi@gmail.com पर अवश्य सूचित करें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जो कुछ धन-सामग्री हमने तुमको प्रदान की है, उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि वह दिन आए, जिसमें न ख़रीद-बिक्री होगी, न दोस्ती काम आएगी और न सिफ़ारिश चलेगी ।"

(क़ुरआन, 2:254)

ICON INTERNATIONAL
TOPSIA, KOLKATA

Posted on 20-21 July 2019
August 2019
Posted Delhi RMS Delhi-110006
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.07.2019
Total pages 52 with Cover

हिन्दी साहित्य की साहित्य पत्रिका
कान्ति
NEW DELHI-110025

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2018-2020
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2018-2020

PERFORM YOUR QURBANI
& SHARE WITH THE NEEDY

VISION 2026
Creating Partnership with the Needy



BIG 21000/- INR
2000/- PER SHARE

SMALL 11000/- INR

DEPOSIT YOUR DONATIONS

HUMAN WELFARE FOUNDATION

CURRENT A/C NO.
13020200052051

BANK
FEDERAL BANK
NEHRU PLACE, NEW DELHI-19

IFSC
FDRL0001302

(EMAIL US THE DETAIL OF TRANSACTION WITH POSTAL ADDRESS AT ACCOUNT@HWFINDIA.ORG OR WHATSAPP 7042892026)

HUMAN WELFARE FOUNDATION

HUMAN WELFARE FOUNDATION
E-89, 4th Floor, Hari Kothi Lane, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi - 110025 (India)
Email : pr@hwfindia.org, Phone : +91 11 29945999 | Mb : +91 70428 98307 | 70428 98312

hwfindia2026

www.vision2026.org.in